FARID
BOOK DEPOT
Maktab_e_Ashraf
बसीरत अफ़रोज़
वाक़िआत
मौलाना तारिक़ जमील साहब
मुरत्तिब
अबू उबैदुल्लाह मदनी

बसीरत अफ़रोज़ वाक़िआत

मौलाना तारिक़ जमील साहब

अबू उबैदुल्लाह मदनी

FARID BOOK DEPOT (PVT.) LTD.
Corp.off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones:23247075, 23289786, 23289159 Fax:23279998

ज़रूरी वज़ाहत

एक मुसलमान जानबूझ कर कुर्आन मजीद, अहादीसे रसूल स॰ और दीनी व दीगर इल्मी किताबों में ग़ल्ती करने का तसव्वुर भी नहीं कर सकता। भूल कर होने वाली ग़ल्तियों की तस्हीह व इस्लाह के लिये भी हमारे इदारे में मुस्तकिल शोबा क़ाइम है और तबाअत से क़ब्ल कोशिश की जाती है कि निशानदही की जाने वाली जुम्ला ग़ल्तियों की बरवक़्त तस्हीह कर दी जाए। इसके बावजूद ग़ल्तियों का इम्कान बाक़ी रहता है।

लिहाज़ा क़ारईने किराम से मुअद्दबाना गुज़ारिश है कि इल्मी ग़ल्तियों की निशानदही करें ताकि आईन्दा एडीशन में इस्लाह हो सके। नेकी के इस काम में तआवुन करना सदक़ए जारिया के मुतरादिफ़ है। (इदारा)

(नाशिर)

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp.off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones:23247075, 23289786, 23289159 Fax:23279998

BASIRAT AFROZ WAQIAAT

Bayanat: **Maulana Tariq Jameel Sb.**
Compiled by: **Abu Ubaidullah Madni**

Edition : **2015**

Pages : **175**

OUR BRANCHES:

Delhi: Farid Book Depot (P) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi- 6
Ph.: 23265406, 23256590

Farid Book Depot (P) Ltd.
168/2,Jha House, Basti Hazrat Nizamuddin(W),
New Delhi- 110013

Mumbai: Farid Book Depot (P) Ltd.
208,Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009 Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at : **Farid Enterprises, Delhi-2**

पेशे लफ़्ज़

मोहतरम मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्दा ज़िल्लहु को अल्लाह तआला ने जो सलाहियतें अता फ़रमाई हैं उनका अन्दाज़ा वही आदमी कर सकता है जो मौलाना को बराहे रास्त जानता है या जिसने मौलाना के बयानात सुनें हों या मौलाना के क़रीब रहा हो।

अल्लाह तआला ने मौलाना को बेपनाह सलाहियतों से नवाज़ा है इन सलाहियतों का इज़हार उनके बयानात से बिल्कुल वाज़ेह है जिस से लाखों इन्सान मुस्तफ़ीद हो रहे हैं और जब तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर है होते रहेंगे।

अहक़र मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्दा ज़िल्लहु को उस वक़्त से जानता है जब वह अपनी तालीम यानी (दर्से–निज़ामी) के आख़िरी साल में जामिआ रशीदिया यह साहिवाल से दौरे हदीस पढ़ रहे थे उस वक़्त भी तालीम के साथ साथ मौलाना का महबूब मशग़ला तल्बा को शबे जुमा के लिए तय्यार करना होता था उनकी मेहनत के नतीजे में जमाअतों की जमाअतें शबे जुमा के लिए क़रीब के इलाक़ों में काम करती थीं।

मौलाना मद्दा ज़िल्लहु के बयानात तो आप हज़रात सुनते ही रहते हैं लेकिन मौलाना अपने बयानात में बाज़ औक़ात बड़े अहम और पुर मग़ज़ वाक़िआत का ज़िक्र करते हैं मैंने उन वाक़िआत को उनके बयानात से अलग कर के इकट्ठा कर दिया है अल्लाह तआला से क़वी उम्मीद है कि मेरी यह कोशिश उसके हाँ क़ुबूलियत का दर्जा हासिल करेगी और आम्मतुन्नास उन वाक़िआत को पढ़ कर बसीरत हासिल कर के अमली ज़िन्दगी इख़्तियार करेगी अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन

अबू उबैदुल्लाह मदनी

फ़ाज़िल जामिआ अशरफ़िया, लाहौर

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन
वअला आले मुहम्मदिन कमा
सल्लैता अला इब्राहीमा वअला
आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम्मजीद
अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन
वअला आले मुहम्मदिन कमा
बारक्ता अला इब्राहीमा वअला
आले इब्राहीम इन्नका हमीदुम्मजीद

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

मौत सब से बड़ा पहलवान

ऐ लोगो! मौत के पहलवान से कोई न जीत सका, यह वह पहलवान है जिसने बड़े बड़े शहसवारों को, बड़े बड़े शहज़ोरों को बेदस्त व पा कर दिया, ख़ाक में लौटा दिया, और कपड़ों की ग़िज़ा बना दिया, और उनकी हड्डियों को गोश्त से जुदा कर दिया, और हड्डियों को मिट्टी बना कर हवा में उड़ा दिया, उनके निशान बेनिशान कर दिये, उनके वजूद बेवजूद कर दिये, यह वह मौत है जिसकी लगाम अल्लाह के हाथ में है...... إِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ......वह हटेगी? बच सकते हैं? भाग सकते हैं? कब तक अल्लाह को नाराज़ कर के ज़िन्दा रहना चाहते हैं? कब तक यह मस्ती की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हैं?

......☆......☆......☆......

गूंगे दाई बन गए

हमारे तलंबसे में गूंगो की एक जमाअत आई, एक गूंगा दूसरे गूंगे को तय्यार कर रहा था, मैं उसको देख रहा था, वह कहता तू चल, वह था चर्सी, वह कहता मैं नहीं जाता, अब जब सारे हर्बे बेकार हो गये ता उस ने उसको कहा तू मर जाएगा, उसने कंधे का इशारा किया, फिर कहा तेरी क़ब्र खोद रहे, अब वह उसको देख रहा, फिर कहा तुझे डाल रहे, फिर ऊपर मिट्टी आ गई, फिर आगे सांप का इशारा किया, तब्लीग़ हो रही है, क़ुर्बान जाऐं अल्लाह के रसूल पर, अलशाहिद ने गूंगे भी खींच लिए और अल्लाह ने ज़िन्दा कर के दिखा दिया, काम कर के दिखा दिया कि लफ़्ज़ शाहिद ही यहां फिट था, अब वह सांप की आवाज़ निकाल रहा, अपने हाथ के इशारे से उसको एक डंग इधर मारा,

एक उधर मारा, फिर उस ने तीली जलाई, फिर कहा आग तेरी क़ब्र में जल रही है, अब उसका रंग एक आ रहा है, एक जा रहा है, फिर कहने लगा तूने बिस्तर उठाया और हमारे साथ चला तो उसने कोई इशारा किया जन्नत का, वह तो मुझे याद नहीं रहा लेकिन अगला इशारा याद रहा, हूर का, कोके का इशारा किया, मतलब हूर और बड़ी ख़ूबसूरत हूर, कहा तुझे मिलेगी मेरे सामने वह तीस दिन के लिये तय्यार हो गया।

☆......☆......☆

क़ाबिले फ़िक्र हदीस शरीफ़

यह तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है ...... إِذَا اتُّخِذَ الْفَيْءُ دُوَلًا ......जब हुकूमत के माल में हुकूमत के कारिंदे ख़यानत करेंगे या जब माल चन्द हाथों में आ जाएगा, जब लोग दौलत समेट लेंगे, सूद के निज़ाम से, सट्टेबाज़ी के निज़ाम से, जुए के निज़ाम से, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी के निज़ाम से जब दौलत चन्द हाथों में होगी ...... وَالْأَمَانَةُ مَغْنَمًا ...... अमानत खायेंगे, कोई अमानत वाला नहीं रहेगा ...... وَالزَّكٰوةُ مَغْرَمًا ...... कोई ज़कात देने वाला नहीं होगा, ज़कात टेक्स कहेंगे, ज़मीनदार कहेंगे हमारे ख़र्चे पूरे नहीं होते, हम उश्र कहां से दें? ताजिर कहेंगे हमने खुद कमाया है क्यों ग़रीब को दें? हमारी ज़ाती मेहनत की कमाई है।

...... وَتُعُلِّمَ لِغَيْرِ الدِّيْنِ ...... और जब यह उम्मत इल्मे दीन को दुनिया कमाने के लिए पढ़ेगी, अल्लाह के लिए नहीं पढ़ेगी।

...... وَأَطَاعَ الرَّجُلُ زَوْجَتَهُ ...... लोग अपनी बीवियों की फ़रमांबरदारी करेंगे।

...... وَعَقَّ أُمَّهُ ......और मांओं की नाफ़रमानी करेंगे।

......وَاَدْنٰى صَدِيْقَه'...... अपने दोस्त के गले लगा के मिलेंगे।

......وَاَقْصٰى اَبَاه'...... बाप को देख के राह बदल जाऐंगे कि कहीं बाप से बात न करनी पड़े।

......وَسَاءَ الْقَبِيْلَةَ فَاسِقُهُمْ...... क़बीले का सरदार शराबी होगा, नाफ़रमान होगा।

......وَكَانَ زَئِيْسُ الْقَوْمِ اَرْذَلَهُمْ...... हुकूमत नाअहल और ज़लील इन्सानों के हाथ में होगी।

......وَاُكْرِمَ الرَّجُلُ مَخَافَةَ شَرِّه'...... एक दूसरे को सलाम करेंगे मगर अल्लाह के लिए नहीं, उस के शर से बचने के लिए।

......وَارْتَفَعَتُ الْاَصْوَاتُ فِي الْمَسَاجِدِ...... मस्जिदों में लड़ाइयां होंगी, ऊंची आवाज़ें होंगी।

......وَظَهَرَتِ الْقَيْنَاتُ...... गाने वालियां मुअ़ज़्ज़ज़ व मोहतरम हो जाऐंगी, गाने वालियों को शोहरत मिल जाएगी।

......وَالْمَعَازِفُ...... और गाना बजाना आम हो जाएगा।

......وَشُرِبَتِ الْخُمُوْرُ...... और शराब पी जाएगी और उसको गुनाह नहीं समझा जाएगा।

......وَلُبِسَ الْحَرِيْرَ...... और मर्द रेशम पहनेंगे।

......وَلَعَنَ آخِرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ اَوَّلَهَا...... और आज के लोग पहले लोगों को बुरा कहेंगे।

वह ऐसे ही हैं अनपढ़ ज़माना था, आज तरक़्क़ी का ज़माना है, वह ऊँटों का दौर था, आज रॉकिट का दौर है, जब यह पंद्रह काम यह उम्मत करेगी हांलाकि इससे ज़्यादा सख़्त गुनाह काफ़िर कर रहे हैं मगर उनको छुट्टी है, यह उनके मुक़ाबले में छोटे काम हैं।

☆......☆......☆

उलमा कहां हैं

...... اَيْنَ الْعُلَمَاء ऐलान होगा, उलमा कहां हैं? ......اَيْنَ الْاَئِمَّة इमामे मस्जिद कहां है? ...... اَيْنَ الْمُؤَذِّنُوْن......अज़ान देने वाले कहां है? अरे यह गिरे पड़े लोग जिन्हें हम समझते थे कि यह तो दो टके के हैं, इनकी तो कोई औक़ात नहीं, यह क्या हुआ? आज ऐलान यह नहीं हुआ? कहां हैं बादशाह? कहां हैं वज़ीर कहां हैं डॉक्टर? कहां हैं इन्जीनियर? कहां हैं जरनैल? और कहां हैं सालारान? ऐलान क्या हुआ? मुअज़्ज़िन कहां हैं? यह बेचारे बर बरबंगाली, यह मुअज़्ज़िन कहां हैं? यह इमामे मस्जिद कहां हैं? यह उलमा कहां हैं? जिनको कोई दो टके का नहीं समझता था, आज ऐलान हो रहा है, आ जाओ आ जाओ, यह बाहर आ गये, कहा! मेरे अर्श के सामने में मिंबरों पर बैठो, उनको पानी पिलाया जाए उनको खिलाया जाए और बाक़ी बन्दों का हिसाब लिया जाए।

......☆......☆......☆......

बादशाही नहीं यह नुबूवत है

फ़ज्र की अज़ान हुई, सहाबा में हलचल मची, फ़त्हे मक्का का मौक़ा था, अबू सुफ़्यान ने कहा क्या हुआ? यह हमले की तय्यारी कर रहे हैं, कहा नहीं नमाज़ के लिए जा रहे हैं, अबू सुफ़्यान कहने लगा, अब्बास तेरे भतीजे की उसके साथी हर बात मानते हैं? कहा! हां हर बात मानते हैं, चाहे वह उन्हें कह दे कि बीवी बच्चे छोड़ दो, मुल्क व माल छोड़ दो, हर चीज़ उस पे कुर्बान कर देते हैं, कहने लगा, अब्बास! मैंने बड़ी बड़ी बादशाहियां देखीं, पर तेरे भतीजे जैसी बादशाही नहीं देखी, उन्होंने कहा, अरे अबू सुफ़्यान! अब भी तेरी समझ में नहीं आ रहा कि यह बादशाही नहीं, यह

नुबूवत है।

अज़ान हो और पच्चानवे फ़ीसद के कान पे जूं न रेंगे, तो हमारा मसला कहां से हल होगा, रमज़ान आए और हमारे कान पे जूं न रेंगे, पैसा इकट्ठा हो जाए और ग़रीब को ज़कात न मिले, फ़सल घर में आ जाए और ज़मीनदार उश्र न अदा करे, यह कैसी मुसलमानी है? यह कैसा इस्लाम है? यह तो फ़राएज़ छोड़ दिये और फ़राएज़ छोड़ने के बाद मसला कैसे हल होगा और अन्दुरूने सिंध में जा के देखो, जहां किसी को नमाज़ आती ही कोई नहीं, सारी उम्मत में नमाज़ ज़िन्दा हो जाए ओर सारी उम्मत अल्लाह के सामने झुके।

......☆......☆......☆......

दो नफ़िल की बरकत

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ मदाएन के अफ़सर बन कर आए। बड़े गवर्नर बन के आए तो चोरियां शुरू हो गईं। पहले तो कोशिश करते रहे कि वैसे ही ठीक हो जाऐं फिर कहने लगे अच्छा भाई, काग़ज़ क़लम लाओ, ख़त लिखा मदाएन के गवर्नर की तरफ़ से जंगल के दरिन्दों के नाम, आज रात तुम्हें जो भी चलता फिरता मशकूक नज़र आऐ उसे चीर फाड़ देना और अपने दस्तख़त करके फ़रमाया शहर के बाहर इसको कील गाड़ के लटका दो। उधर राबता दो रकअत के ज़रिये ऊपर और उधर जंगल के दरिन्दों को हुक्म। इधर राबता ऊपर है तार वहां लगा हुआ है नां सारी लाइनें तो ऊपर से चल रहीं है नां, सारा कम्प्यूटर तो ऊपर चला रहा है हम तो ख़ाली मोहरे ही हैं, शतरंज के मोहरों की तरह, अच्छा कहा भाई आज दरवाज़ा खुला रहेगा शहर का दरवाज़ा बन्द नहीं होगा। जूं ही रात गुज़री, शेर गुर्राते हुए अन्दर चले आए किसी को

जुरअत नहीं हुई बाहर निकल सके।

......☆......☆......☆......

असलियत ना भूलो

एक गधे को शेर की खाल मिल गई, उसने शेर की खाल पहनी, उसने कहा लो भई मैं भी शेर बन गया, अब जो बस्ती को चला, लोगों ने देखा कि इतना बड़ा शेर है, गधे जैसा क़द, वह तो सारे भागे, अरे शेर आ गया, अब गधा बड़ा खुश हुआ, उसने कहा भई सारे डर गये, अब मैं थोड़ी सी ज़रा और गरजदार आवाज़ निकालूंगा तो यह और डरेंगे, अपनी हक़ीक़त को भूल गया तो मुझ से शेर वाली आवाज़ नहीं निकलेगी, गधे वाली निकलेगी, अब उसने अपनी तरफ़ से ज़ोर से आवाज़ निकाली जो बजाए दहाड़ने के वह ढेंचू ढेंचू करने लगा, उन्होंने कहा अरे तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो, ओए यह तो गधा है और जो डंडे ले-कर उसकी मरम्मत की अब गधा साहब आगे आगे लोग पीछे पीछे।

......☆......☆......☆

कल्मे की ताक़त

हज़रत शराबील इब्ने हसन रज़ि॰ एक पतले से सहाबी हैं, वही के कातिब थे, वहि लिखते थे, मिस्र में एक क़िला नहीं फ़तह हो रहा था, कुछ दिन ज़्यादा गुज़र गये, एक दिन हज़रत शराबील इब्ने हसन रज़ि॰ को जोश आया, घोड़े को ऐड़ लगा के आगे हुए और फ़सील के क़रीब जा कर फ़रमाया, ऐ क़िब्तियो सुनो! हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं अगर उसका इरादा हो जाए तो तुम्हारे इस क़िले को आन की आन में तोड़ सकता है और لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर जो शहादत की उंगली उठाई, सारा क़िला ज़मीन पर आ के गिरा, यह कल्मा सीखा हुआ था, मैं

आपको पक्की रिवायतें बता रहा हूं।

......☆......☆......☆......

खुदा डुबोने पर आए तो कौन बचाए

अल्लाह ने क़ौमे नूह अलै॰ के बातिल को ऐसे तोड़ा कि एक शख़्स ना बचा, तीन आदमी ग़ार में छिप गये, उन्होंने कहा, यहां तो कोई नहीं आयेगा, ना पानी आएगा ना कोई और आयेगा, ऊपर से पत्थर रख लिया, ग़ार में छिप गये, मुतमइन हो गये, अल्लाह अगर चाहता तो पानी को बाहर से भी दाख़िल कर सकता था, लेकिन वह अपनी कुदरत को दिखाना चाहता है, तीनों को पेशाब आया, ऐसे ज़ोर से पेशाब आया कि रोक नहीं सके, तीनों पेशाब करने बैठे, अब अल्लाह ने पेशाब को जारी कर दिया, अब पेशाब बन्द ही नहीं होता, वह पेशाब निकलता जा रहा है, निकलता जा रहा है, हत्ता कि तीनों के तीनों अपने पेशाब में ग़र्क़ हो के मर गये, अल्लाह ने किसी को न छोड़ा, अपने कल्मे वाले बात को सच्चा किया और अपने कल्मे वाले नूह को जैसे उसने कहा था......لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا...... या अल्लाह एक भी चलता हुआ मत छोड़, अल्लाह ने कहा मेरे नूह देख ले तेरे कल्मे पर मैंने एक को भी ज़िन्दा ना छोड़ा, सब मरे पड़े हैं, सब बरबाद हुए पड़े हैं।

......☆......☆......☆......

बुराई का अन्जाम

लूत अलै॰ की क़ौम में जब वह बुरा फ़ेल फैला और वह औरतों को छोड़ कर लेवातत का शिकार हुए, अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने लूत अलै॰ को भेजा और अल्लाह की तरफ़ बुलाना शुरू किया, वह ऐसी बदबख़्त क़ौम थी कि जिन्होंने ऐसा काम शुरू किया जो उस

से पहले कभी किसी ने किया ही नहीं था, इसलिए जो अज़ाब क़ौमे लूत पर आया है किसी क़ौम पर नहीं आया। जितने अज़ाब क़ौमे लूत पर आये किसी क़ौम पर नहीं आये, सबसे पहले अल्लाह ने जिब्रईल अलै॰ को भेजा कि उन बदबख़्तों को उखाड़ो, उन्होंने पर की टोक पर यूं उखाड़ा और पहले आसमान तक पहुंचाया, फ़रिश्तों ने मुर्गों की अज़ानें सुनी, फिर उल्टा के ज़मीन की तरफ़ फेंका, ऊपर से पत्थरों की बारिश और उनके चेहरे मस्ख़ हो गये, आंखें धंस गईं, फिर पत्थरों की बारिश हुई और ज़मीन को...... جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا ......नीचे का हिस्सा ऊपर और ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया और फिर इब्दल आबाद के लिए पानी के अज़ाब में मुब्तला कर दिया गया, वह बुहैरा मौत जो सत्तर मील की झील है जिसमें कोई जानदार ज़िन्दा नहीं रह सकता, जो उस में जाता है मर जाता है, आज तक वह उस अज़ाब में चल रहे हैं, कल्मे की ताक़त ने क़ौमे लूत की ताक़त को तोड़ के दिखाया।

......☆......☆......☆......

क़ातिल का इस्लाम कुबूल करना

वहशी ने चेहरे को छिपाया हुआ और मदीने में आया क्योंकि उसे भी पता था कि जिसने मुझे देखा, क़त्ल किया जाऊंगा, छिपता छिपाता मस्जिदे नबवी में आया, हुज़ूर स॰ अपने ध्यान में बैठे हुए थे और चेहरे से कपड़ा हटाया......وَشَهِدَ شَهَادَةَ الْحَقِّ......आप जो ऐसें बैठे तो यूं हुए...... فَلَمْ يَرَوْا بِهِ إِلَّا بِقَائِمًا أَشْهَدُ شَهَادَةَ الْحَقِّ...... आपकी आंखें फटीं, सहाबा रज़ि॰ की तलवारें निकलीं, या रसूलुल्लाह स॰ वह्शी! और वह कल्मा पढ़ चुका है और उनकी तलवारें नियाम से निकल रही है, आपने फ़रमाया, पीछे हट जाओ, एक आदमी का कल्मा पढ़ लेना, मुझे हज़ार काफ़िरों को क़त्ल

करने से ज़्यादा महबूब है फ़िर उसे यूं देखते रहे अब وحشی......ا
......انت तू ही वह्शी है। जी हां...... اُقْعُدْ...... बैठो, यह बता तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? आठ बरस गुज़र चुके हैं कि ग़म अभी ताज़ा है, तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? वह्शी ने जो बयान करना शुरू किया तो हुज़ूर स॰ की आंखों से आंसू जारी हो गये रोने लगे, कहा अरे वह्शी, अल्लाह तेरा भला करे जा अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने के लिए भी अब मेहनत कर और एक एहसान कर कि मुझे अपनी शकल ना दिखाया कर, तुझे देख कर मेरे चचा का ग़म ताज़ा हो जाता है, जिसकी शकल भी देखने की हिम्मत नहीं है, उसके नफ़ा की भी सोची जा रही है, तो अब तो भाई, भाई पैसे पे लड़ रहा है तो इन अख़्लाक़ पर अल्लाह की मदद कहां से आयेगी?

......☆......☆......☆......

माहौल का असर

एक भंगी, अतर वाले की दुकान से गुज़रा तो ख़ुशबू का हल चड़हा, वह बेहोश हो के गिर गया, अब सारे इकट्ठे हुए, क्या हुआ? उन्होंने कहा भई बेहोश हो गया है, कोई रूह केवड़ा लाओ, कोई गुलाब का अर्क़ लाओ, कोई ख़मीरा खिलाओ एक भंगी और गुज़रा उसने देखा यह तो मेरी बिरादरी का है उसने कहा अरे अल्लाह के बन्दो, तुम्हें क्या ख़बर पीछे हटो वह आगे थोड़ी सी गंदगी उठा के लाया उसके नाक पे जो लगाई और उसने सूंघी होश में आ के बैढ़ गया।

आज सारे मुसलमानों का यह हाल है कि जन्नत के नग़मे भूल गया, क़ुरआन के नग़मे भूल गया, अपने आप को गंदगी में डुबो दिया, सर हिला रहा है, अरे कभी तेरा सर क़ुरआन पर हिला

करता था और कभी तेरे आंसू कुरआन सुनने पर निकला करते थे, लेकिन आज तुझे शैतान ने बरबाद कर दिया, जब तू यहां अपने आप को हराम से नहीं बचाएगा अल्लाह तुझे जन्नत के नग़मे कहां से सुनाएगा? जब तू यहां अपनी आंख को बेहयाई से नहीं बचाएगा, अल्लाह तुझे अपनी ज़ाते आली का दीदार कैसे कराएगा?

कुछ नहीं हो सकता

एक किताब में मैंने पढ़ा, एक बुजुर्ग का कौल है कि जब हालात बिगड़ जाते हैं एक बड़ा तब्क़ा यूं कहता है, अब कुछ नहीं हो सकता, जैसे हालात चल रहे हैं उसी धारे में तुम भी चलो, एक छोटा सा तब्क़ा कहता है कि भई कुछ तो टक्कर मारो, न करने से कुछ करना बेहतर है यह जो थोड़ा सा तब्क़ा दीवानगी में और पागलपन में और मज्नूं बन के टक्कर लेता है और हालात से टक्कर लेता है यही आगे चल के बड़े बड़े इन्क़िलाबात को वजूद देता है, आज लोग कहते हैं कि आज हुजूर वाली ज़िन्दगी नहीं चल सकती, आज उस पर काम नहीं हो सकते, अब उस ज़िन्दगी पर चलना मुश्किल है, भाई तुम यूं कहो, हम टक्कर तो लेंगे और हुजूर स० वाले कल्मे की दावत देंगे, जब अल्लाह पाक हमारी कुर्बानी को कुबूल करेगा, और वह हवा चलाएगा, ان شاء الله दिन पल्टा खाते चले जाऐंगे।

आवाज़ लग रही है

मेरे भाईयो! मैं हैरान होता हूं बाहर......

सब्ज़ी वाला आवाज़ लगा रहा है,

आलू की आवाज़ लग रही है,

छोले की आवाज़ लग रही है,

मकई, बाजरे की आवाज़ लग रही है,

और प्याज़ और लेहसुन की आवाज़ लग रही है,
और क़हवे और निसवार की आवाज़ लग रही है,
रसूलुल्लाह की आवाज़ लगाने वाला ही कोई नहीं,
आज यह इतना काम गिर गया कि
यह फ़ारिग़ लोगों का काम है,
बेकार फिरते रहते हैं,
बिस्तर उठाए फिरते हैं,
पागल लोग हैं,
दीवाने हैं,
घरों से निकाले हुए हैं,
घर से फ़ारिग़ हैं इसलिए फिरते रहते हैं,

यही लोग नबियों को कहा करते थे, जो इस काम को करेगा उसे यह हौसला रखना पड़ेगा, उसे यह बातें सुननी पड़ेंगी। मौलाना इल्यास रह० ने जब मेवातियों में गश्त शुरू किया तो वह मारते थे गालियां देते थे, उल्मा ने कहा कि मौलवी इल्यास रह० ने इल्म को ज़लील कर दिया चूंकि काम वजूद में नहीं था किसी को पता नहीं था, उलमा कहें कि यह इल्म की ज़िल्लत है, मौलाना इल्यास रह० ने फ़रमाया, हाए मेरा हबीब तो अबू जहल से मार खाता था, मैं मुसलमान की मिन्नत कर के ज़लील कैसे हो सकता हूं? मैं उस अल्लाह के कल्मे के लिए ज़लील होकर इज़्ज़त को हासिल करना चाहता हूं कि अल्लाह के कल्मे के लिए ज़िल्लत भी है इज़्ज़त भी है यह ज़लील होना नहीं है यह बाइज़्ज़त होना है।

हुज़ूर अलै० का दीन के लिए तक्लीफ़ बर्दाश्त करना

हुज़ूर स० एक ख़ेमे में गये तो एक शख़्स से बात की, उसने कहा हमारा सरदार आ जाए फिर तेरे से बात करेंगे, आप बैठ गये,

वह क़बीला क़ुरैश था...... بَحِيرَةُ ابْنِ قَيْس ...... वह आया, कहने लगा यह कौन है उन्होंने कहा यह वह क़ुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं नबी हूं और कहता है कि मुझे पनाह दो, मैं अल्लाह का कल्मा पहुंचाना चाहता हूं, मेरे भाइयो! बताओ भला हुज़ूर स॰ को पनाह की ज़रूरत थी? जिसके साथ अल्लाह हो, नहीं, दुनिया दारुल अस्बाब है, दुनिया को यह बताया है कि दीन का काम मेहनत से होगा, वरना मुझे किसी की पनाह की क्या ज़रूरत है, वह कहने लगा यह यह ...... मैं आपको उस हदीस के अल्फ़ाज़ कह रहा हूं, अल्लाह माफ़ फ़रमाए, अपनी तरफ़ से नहीं।

नकल कुफ़्र कुफ़्र नाबाशद

कहने लगा इस पूरे बाज़ार में कोई सबसे बदतरीन चीज़ है...... اَلْحَقُّ بِقَوْمِكَ لَوْ لَا قَوْمِي لَضَرَبْتُ عُنُقَكَ ......चल यहां से खड़ा हो जा, अगर मेरी क़ौम तुझे मेरे पास ना बिठाती तो अभी तेरी गर्दन उड़ा देता, हुज़ूर की ज़ुबाने मुबारक से एक भी तो भूल नहीं निकला। आपनें चादर उठाई, ग़मग़ीन परेशान उठे, ऊंटनी पे सवार होने लगे ऊंटनी जब खड़ी हुई तो उस ख़बीस ने पीछे से नैज़ा मारा और ऊंटनी उछली आप उलट के ज़मीन पर गिरे फिर भी ज़ुबान से बद्दुआ नहीं निकली, लोग कहें क्यों ज़लील होते फिरते हो, अरे वह तो ऐसों के सामने गिरे, लेकिन ज़ुबान से बद्दुआ नहीं निकली, अबू जहल ने मारा लेकिन आपकी ज़ुबान से अल्फ़ाज़ नहीं निकले।

......☆......☆......☆......

ख़ूबसूरत नौजवान की साबित क़दमी

सहाबी कहते हैं, मैंने देखा कि एक बड़ा ख़ूबसूरत नौजवान है और लोगों को दावत देता फिर रहा है सुबह से चल रहा है और कल्मे की तरफ़ बुला रहा है, मैंने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा यह कुरैश का एक नौजवान है जो बेदीन हो गया है...... حَتّٰى نَصَفَ النَّهَارِ ...... सुबह से वह आदमी बात करता रहा, यहां तक की सूरज जब सर पे आया तो एक आदमी ने आ के मुंह पे थूका, दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सर में मिट्टी डाली, एक ने आ के थप्पड़ मारा, लेकिन नबी के ज़र्फ़ को देखो कि ज़ुबान से एक बोल बद्दुआ का नहीं निकला, इतने में हज़रते ज़ैनब रज़ि॰ को पता चला तो वह ज़ार व क़तार रोती हुई आ रही हैं, प्याले में पानी लेकर, जब बेटी को रोते देखा तो ज़रा आंखें नम हो गईं, कहा बेटी ......لَا تَخْشِىْ عَلٰى اَبِيْكَ......अपने बाप का ग़म न कर, तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कल्मा ज़िन्दा होगा, वह सहाबी रज़ि॰ कहते हैं (वह बाद में मुसलमान हो गये उस वक़्त काफ़िर थे) मैंने कहा यह लड़की कौन है? उन्होंने कहा यह उसकी बेटी है।

☆☆☆

हज़रत उस्मान रज़ि॰ की सख़ावत

हज़रते उस्माने ग़नी रज़ि॰ तआला अन्हु के पास एक साइल आया, हुज़ूर स॰ से मांगने आया था, आप स॰ ने कहा उस्मान रज़ि॰ के पास चले जाओ, उस्माने ग़नी रज़ि॰ से मांगने गया, वह बीवी से लड़ रहे थे, किस बात पर? यूं कह रहे थे अल्लाह की बन्दी! रात तूने चिराग़ में बत्ती मोटी डाल दी, वह बत्ती डालते थे रुई की, तो तेल ज़्यादा जल गया, तो यह कहने लगे कि किस कंजूस के पास

भेज दिया जो बीवी से लड़ रहा है क्यों तूने बत्ती मोटी डाली है तो यह मुझे देगा मुझे तो दमड़ी भी नहीं देगा।

जब उनको बाहर बुलाया और ख़ैरात मांगी कहा वहां से आया हूं, तो अंदर गए और एक थैली उठाई न पूछा कि कितने चाहिये न पूछा कि कौन हो, तीन हज़ार दिरहम उठा कर दे दिये। वह हैरान हो के कहने लगा, एक बात तो बताओ कहा क्या? कहा यह मुझे तो तूने इतने दिरहम दे दिये कि मेरी अगली नसल को भी काफ़ी हैं और खुद तू बीवी से लड़ रहा था कि बत्ती क्यों मोटी कर दी। कहने लगे वह अपनी ज़ात पर ख़र्च था वह फूंक फूंक के करता हूं यह अल्लाह को दे रहा हूं जितना मर्ज़ी दे दूं, यह तुझे थोड़ा ही दे रहा हूं, तो अपनी जान को भी अल्लाह पर लगायें और अपने माल को भी अल्लाह पर लगायें।

☆☆☆

इब्ने अब्बास रज़ि॰ का जवाब

एक यहूदी ने हज़रत मुआविया रज़ि॰ के पास सवाल लिख कर भेजे यह बताओ वह कौन से दो भाई हैं? जो एक दिन पैदा हुए, एक दिन वफ़ात पाई और एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है, पैदाइश का दिन एक, मौत का दिन एक लेकिन एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है और वह कौनसी जगह है जहां सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ फिर कभी तुलू नहीं हुआ?

उन्होंने कहा भई इब्ने अब्बास रज़ि॰ को बुलाओ, वही जवाब देंगे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को बुलाया गया उन्होंने फ़रमाया, उज़ैर और अज़ीज़ दो भाई थे, उज़ैर को सौ बरस मौत आ गई, उसकी जिन्दगी में से सौ बरस कट गये और फिर दोनों भाई एक दिन मरे, एक दिन पैदा हुए, एक सौ बरस छोटा है, एक

सौ बरस बड़ा है और वह समुंद्र जिसे अल्लाह ने फाड़ा और फाड़ के ज़मीन को नीचे से निकाला, उस पर सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ और फिर पानी को पिलाया, फिर कभी वहां ख़ुश्की न आई।

☆☆☆

हज़रत मरयम रज़ि॰ और फ़रिश्ता

हर कोई शादी के बाद दुआ करता है कि अल्लाह औलाद दे, शादी से पहले भी किसी ने दुआ की? और यह अल्लाह की नेक बन्दी मरयम रज़ि॰, एक कोने में हुई नहाने को तो एक फ़रिश्ता इन्सानी शकल में सामने आ गया, वह थर्रा गई अल्लाह से पनाह मांगती हूं, कौन है? कहा नहीं, डर नही, मर्द नहीं हूं फ़रिश्ता हूं, क्यों आए हो? अल्लाह तुम्हें बेटा देना चाहता है, वह कहने लगीं, तौबा! तौबा! मुझे बेटा? मेरी तो शादी नहीं हुई मैं कोई बाज़ारी औरत तो नहीं हूं, तो यह कैसे हो सकता है? या हराम से आए या हलाल से आए, तो दोनों काम नहीं हैं। ऐ मरयम रज़ि॰ तेरा रब कह रहा है कोई मसला नहीं अभी हो जाएगा जिब्रईल ने फूंक मारी इधर फूंक पड़ी उधर हमल, उसको नौ महीने के मरहले नौ पल में तय करवा के दरवाज़ा लगा दिया,...... فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ ...... اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ और दर्दे ज़ेह ने भगाया और एक खुजूर के नीचे जा के बच्चा पैदा कर दिया।

☆☆☆

अल्लाह अल्लाह यह है ख़ुदा

और अब सर पे हाथ रखा ...... يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا ......हाए मैं मर जाती...... وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ...... हाए मेरा दुनिया में आना भी लोग भूल जाते मैं किस मुंह से अब शहर को जाऊं? जिब्रईल अलै॰ फिर आए और फ़रमाया ...... لَا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ

كُلِي وَاشْرَبِي ...... चश्मा चल गया है ......गम न कर, سَرِيًّا ......खा पी وَقَرِّي عَيْنًا...... इत्मिनान रख और बच्चे को शहर में ले जा उन्होंने कहा मैं कैसे ले जाऊं? क्या जवाब दूं? कहा तुम जवाब देना...... إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَانِ......فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنسِيًّا ...... मेरा रोज़ा है, मैं बात नहीं करती।

बनी इस्राईल रोज़े में भी बात नहीं कर सकते थे, हम रोज़े में झूट भी बोलें तो रोज़ा नहीं टूटता, वह सच भी बोलें तो टूट जाता था, इतनी रिआयत लेकर भी अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं हाए हाए।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ...... बच्चा गोद में लेकर शहर में आई, एक पुकार पड़ी ...... يَمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ......ऐ मरयम ये क्या किया? يَا أُخْتَ هَارُوْنَ ......ऐ हारून की बहन مَا كَانَ...... أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ ...... तेरा बाप तो ऐसा नहीं था?...... وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ......तेरी माँ तो ऐसी नहीं थी। ...... فَأَشَارَتْ ...... كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا...... बेवकूफ़ बनाती है, बहाना करने का भी तुझे तरीक़ा नहीं आता, एक तो मुंह काला किया, एक बहाना ऐसा बनाती है, बच्चा तो कैसे बात करे? तो एक हंगामा शुरू हो गया अभी वह ऐसे हूं हाँ कर रहे थे कि एक दम बच्चे का ख़िताब शुरू हुआ बग़ैर लाउ डस्पीकर के सारे डिफ़ेन्स में घूम गया सारे बैतुल मक़्दिस में घूम गया।

☆......☆......☆

अल्लाह से मांगो

इब्राहीम बिन अदहीम रह० दरया के किनारे पर बैठे थे, जेब कट गई पैसे नहीं, या अल्लाह एक दीनार चाहिए, या अल्लाह एक दीनार चाहिए, सामने ही दरया में से आठ दस मछलियों ने यूं मुंह

बाहर निकाल दिया और हर मछली के मुंह में एक दीनार था, क्या हुआ? अल्लाह अपना है, वह तो पहले से ही कह चुका है कि तुम मेरे हो पर हम भी तो उसे अपना बनायें, आधा काम तो पहले कर चुका है......ऐ मेरे बंदे मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ......तुझे मेरे हक़ की क़सम, तू भी तो मुझ से मुहब्बत कर, ये तबलीग़ की मेहनत का मौज़ू है कि हर मुसलमान अल्लाह से इस दर्जे की मुहब्बत पे आ जाए।

उम्मत के ग़म में हुज़ूर स॰ का रोना

अरफ़ात के मैदान में ऊँटनी पर बैठ कर पांच घंटे हाथ उठा के उम्मत के लिए दुआ की, कोई अपने लिए आज पांच घंटे दुआ नहीं करता, आने वाली नस्लों के लिए पांच घंटे मुसलसल दुआ की है, रो रो कर दुआ की है।

एक मरतबा आप मदीने में रात को रो रहे, ऐ मेरे मौला! इब्राहीम अलै॰ ने कहा था......जो मेरी माने वह तो मेरा है जो मेरी न माने तेरी न माने तेरी मर्ज़ी तू मेहरबान है, माफ़ कर दे, अज़ाब दे दे, या अल्लाह ईसा अलै॰ ने कहा था......ऐ अल्लाह तेरे बंदे है, अज़ाब दे तेरी मर्ज़ी, माफ़ कर तेरी मर्ज़ी है, ऐ मेरे अल्लाह, न मैं ईसा की कहूं, न मैं इब्राहीम की कहूं बल्कि मैं तो यूं कहूं......क्या मतलब? मेरी उम्मत को माफ़ कर दे माफ़ कर दे, माफ़ कर दे, नहीं करना फिर भी कर दे और यह कह कर जो रोना शुरू हुए और इतना ज़ारो क़ितार रोए कि दाढ़ी तर हो गई, जिब्रईल अलै॰ को अल्लाह ने दौड़ाया, भागो भागो! जिब्रईल अलै॰ आए, या रसुलुल्लाह अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं आप क्यों रो रहे हैं? तो आपने फ़रमाया, मुझे उम्मत का ग़म खा रहा है, जिब्रईल अलै॰ वापस गए, पैग़ाम लाए कि अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं......ऐ मेरे

महबूब ग़म न कर मैं तुझे तेरी उम्मत के बारे में ख़ुश करूंगा।

......☆......☆......☆......

क़ब्र में बराबरी

क़तर में एक महल देखा, बहुत लम्बा चौड़ा, मैंने समझा शायद शाही ख़ानदान में से किसी का है तो मैंने पूछा यह किस अमीर का है, तो हमारे साथी बताने लगे कि यह शाही ख़ानदान का तो नहीं है लेकिन यह क़तर का सबसे बड़ा ताजिर था, क़तर में सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे बड़ा ताजिर था, और यह उसका महल है, बनाने के बाद पांच साल रहने की नौबत आई फिर मर गया, और उसकी जहां क़ब्र है वहां क़तर का सबसे फ़क़ीर बद्दू दफ़न है, एक तरफ़ क़तर का अमीर तरीन है और उसके पहलू में क़तर का ग़रीब तरीन बद्दू जो सारा दिन भीक मांग के चलता था, उन दोनों की क़ब्र साथ साथ है कि क़ब्र में दोनों को बराबर कर दिया गया।

दुनिया में अज़ाब

वासिक़ बिल्लाह ने हज़ारों लोगों को मौत के घाट उतारा, जब मरने लगा, नेज़अ की हालत तारी हुई, तो उसका वज़ीर था उसने वह शाही ख़िलाफ़त की जो चादर उसके ऊपर डाली हुई थी तो उसके वज़ीर ने ज़रा चादर उठाई देखने के लिए कि ज़िन्दा है कि मर गया तो उसने यूं आंखें उठा के देखा तो वह इस हाल में भी वज़ीर लड़खड़ा के पीछे जा पड़ा, इतनी उस वक़्त भी उसकी आंखों में ताक़त थी, थोड़ी देर बाद चादर के नीचे हरकत हुई, तो भाग कर गये कि यह क्या हरकत है? चादर उठा के देखा तो वह मर चुका था और एक चूहा उसकी दोनों आंखें खा चुका था, यह चूहा कहां से आ गया अब्बासी महल में? ग़ैब का निज़ाम चला कि उन ज़ालिम आँखों से क्या क्या हुआ है। मौत से पहले ही एक

चूहे को खिला के दिखा दिया और जूंही वह मरा तो वज़ीर ने फ़ौरन ख़िलाफ़त की चादर उतार कर संदूक़ में डाली कि अब अगला आने वाला ख़लीफ़ा मेरी ठुकाई न कर दे कि यह चादरें उस पर क्यों डाली हुई है, यह दुनिया इतनी नापाएदार है, इतनी नामुराद है।

......☆......☆......☆......

जन्नत को सजाया जा रहा है

हज़रत शबाना आबिदा रज़ि॰ की बहन ने ख़्वाब देखा कि जन्नत सजाई जा रही है, तो उन्होंने पूछा क्या बात है? जन्नत सजाई जा रही है और यह सारी हूरें बाहर खड़ी हुई हैं, तो जवाब आता है कि शबाना आबिदा का इन्तिक़ाल हुआ है उसके इस्तिक़बाल में और उसकी रूह के इस्तिक़बाल में जन्नत को सजाया जा रहा है और जन्नत की हूरों को इस्तिक़बाल के लिए लाया जा रहा है यह उनकी बहन खुद ख़्वाब में देख रही है कि उनकी बहन को अल्लाह जन्नत में कितना बड़ा प्रोटोकोल दे रहा है, कितना बड़ा ऐज़ाज़ है, अल्लाह जिसका ऐज़ाज़ करे। आज हमें ऐसा बनने की ज़रूरत है।

☆☆☆

रोज़ाना का क़ुरआन

शख़ीर रह॰ बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, ख़्वाब देखा कि क़ब्रिस्तान फटा और उनसे मुर्दे निकले और कुछ चुनने लगे, एक आदमी जा के दरख़्त पे टेक लगा के बैठ गया यह उसके पास गये, कहा भाई यह क्या माजरा है? उसने कहा यह वह मुसलमान हैं जो मर चुके हैं और यह जो चुन रहे हैं यह सवाब है जो पीछे लोग उनको पहुंचा रहे हैं, तो कहा तू क्यों नहीं चुनता? कहा मेरा

हिसाब थोक का है, मुझे बहुत मिलता है। कैसे मिलता है? कहा मेरा बेटा हाफ़िज़े कुरआन है, एक कुरआन रोज़ाना पढ़ कर बख़्श देता है, मुझे यह चुनने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। कहा, क्या करता है तेरा बेटा? कहा मेरा बेटा फ़लां फ़लां जगह पर मिठाई की दुकान करता है सुबह आंख खुली तो वहां गये, देखा एक नौजवान ख़ूबसूरत दाढ़ी वाला, बड़ा नूरानी चेहरा, अपना सौदा भी बेच रहा है और साथ साथ होंट भी हिला रहा है। तो उन्होंने कहा, बच्चा क्या कर रहे हो? कहा जी कुरआन पढ़ रहा हूं, किस लिए? कहा जी मेरे बाप ने मेरे ऊपर एहसान किया और मुझे कुरआन पढ़ाया, मैं रोज़ाना एक कुरआन पढ़ कर उसको बख़्श देता हूं।

☆☆☆

यह ना होते तो इस्लाम ना होता

दो शख़्स हैं जिनके बारे में तारीख़ ने गवाही दी, यह न होते तो इस्लाम न होता……अबू बक्र रज़ि॰ न होते तो इस्लाम न होता……अहमद बिन हंबल रह॰ न होते तो इस्लाम न होता, कुरआन के बारे में एक बहुत बड़ा फ़ित्ना उठा, सारे उलमा चुप हो गये, जानें बचा गये, कई भाग गये, कई जिला वतन हो गये। इब्ने हंबल रह॰ डट गये, कहा मुझे मारो, मेरी ज़ुबान से हक़ के सिवा कुछ नहीं निकलेगा, आख़िर यह पकड़े गये और तीन दिन मुनाज़रा होता रहा, मुनाज़रों में तीनों दफ़ा मोतज़ली (एक बातिल फ़िर्क़ा) हारते रहे, चौथा दिन था आज अहमद बिन हंबल रह॰ को पता है कि या तो मेरी जान जाएगी या मार मार के मुझे तबाह कर देंगे, जेल से निकल कर आ रहे हैं और दिल में आ रहा है कि मैं बूढ़ा हूं, बनू अब्बास के कोड़े मैं नहीं बर्दाश्त कर सकता तो अपनी जान बचाने के लिए अगर मैंने कल्मए कुफ़्र कह भी दिया तो अल्लाह ने

इजाज़त दी है कि मैं अपनी जान बचाऊं। यह ख़्याल आ रहा था कि अचानक एक शख़्स मज्मे को हटाता हुआ तेज़ी से आया और क़रीब आ गया, कहा अहमद, कहा! क्या है। कहा! मुझे पहचानते हो? कहा नहीं। कहा मेरा नाम अबुल हैसम है, मैं बग़दाद का नामी गिरामी चोर हूं, देखो मैंने बनू अब्बास के कोड़े खाए मैंने चोरी नहीं छोड़ी, कहीं तुम बनू अब्बास के कोड़ों के डर से हक़ न छोड़ देना, अगर तुमने हक़ छोड़ दिया तो सारी उम्मत भटक जाएगी। तो इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ जब कभी याद करते कहते...... رحم الله ابا الهيثم ......अल्लाह अबुल हैसम पे रहम करे कि उस चोर की नसीहत ने मुझे जमा दिया मैंने कहा मेरे टुकड़े टुकड़े कर दे, अब मैं हक़ को नहीं छोडूंगा, और साठ कोड़े पड़े, महल में बोटियां उतर के गिरने लगीं और ख़ून से तर बतर हो गये और उधर जो बातिल का मुनाज़िर था, उसका नाम भी अहमद था, जब यह ख़ून ख़ून हो गये तो नीचे आया, और उनके क़रीब जाकर कहने लगा, अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि कुरआन मख़्लूक़ है तो मैं ख़लीफ़ा के अज़ाब से तुझे बचा लूंगा, उन्होंने उसी बेहोशी में कहा! अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि कुरआन अल्लाह का कलाम है और मख़्लूक़ नहीं है तो मैं तुझे अल्लाह के अज़ाब से बचा लूंगा।

☆☆☆

इस्लाम जानवरों पर ज़ुल्म से भी मना करता है

एक ऊँट दौड़ता हुआ आया ...... أَلْقَى بِجِرَانِهِ فَجَرْجَرَ ......एक ऊँट आता है और अपनी गर्दन आपके पांव में डाल के रोने लगा ...... حَتَّى ابْتَلَّ الْأَرْضُ ......यहां तक कि रोते ज़मीन तर हो गई, आपने फ़रमाया, ऊँट फ़रयादी बन के मेरे पास आया है, इतने

में एक सहाबी पीछे से दौड़ा दौड़ा आया, या रसूल स॰ मेरा ऊँट गुम हो गया है मैं उसे ढूंढता फिर रहा हूं, फ़रमाया यह तेरी शिकायत कर रहा है, अर्ज़ कर रहा है, अर्ज़ क्या क्या शिकायत कर रहा है, फ़रमाया यह यूं कह रहा है या रसूल स॰ मैं जब जवान था तो मैं उनके अहकाम करता था, पानी उनका भर के लाता था, लकड़ियां लाता था, और मेरे ऊपर सब कुछ लादते थे, मैं ले के चलता था, अब मैं बूढ़ा हो गया हूं तो यह मुझे ज़बह करना चाहते हैं आप मेरी जान बचाइये। उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह स॰ हम ज़बह तो करना चाहते हैं, फ़रमाया फिर यह मुझे दे दो, कहा यह आप पर कुर्बान, आपने फ़रमाया, ऊँट जा चला जा......فرغا رغوة......ऊँट ने आवाज़ निकाली, आपने फ़रमाया आमीन ......ثُمَّ رَغَى الثَّانِيَتِ......फिर दूसरी दफ़ा आवाज़ निकाली, आपने फ़रमाया आमीन, ...رَغَا رَغْوَتَ الثَّالِثَةِ......फिर तीसरी दफ़ा आवाज़ निकाली, आपने फ़रमाया, आमीन फिर चौथी दफ़ा आवाज़ निकाली, चौथी दफ़ा आप रोने लगे, सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह यह चक्कर हमें तो समझ नहीं आया, यह चक्कर सारा चल रहा है? फ़रमाया, यह मुझे दुआ दे रहा था, इसने मुझे पहली दफ़ा कहा, अल्लाह आप के ख़ौफ़ को भी दूर करे जैसे आपने मेरे ख़ौफ़ को दूर किया, मैंने कहा आमीन, उसने कहा अल्लाह आप की उम्मत को दुश्मन से हलाक होने से बचाए, कि यह बिल्कुल हलाक न हो जाऐं, मैंने कहा आमीन, उसने कहा, अल्लाह तआला आप की उम्मत को क़हत से हलाक न करे, मैंने कहा, आमीन। उसने कहा अल्लाह आप की उम्मत को हमेशा जोड़े रखे इस पर मैं रोने लग गया कि मुझे मेरे रब ने बताया कि तेरी उम्मत में भी इख़्तिलाफ़ होगा।

सुन्नते रसूल स॰ की बरकत

सहाबा रज़ि॰ से क़िला नहीं फ़तह हो रहा, सारे हैरान हैं, कि वजह क्या है, क़िला क्यों नहीं फ़तह हो रहा? तो अब तवज्जेह की कि किस वजह से क़िला नहीं फ़तह हो रहा, (मेरे भाइयो! मुसलमान की सोच देखो, किस बुनियाद पर क़ैसर व किस्रा को उन्होंने तोड़ा) आपस में सोच में पड़े कि क़िला क्यों नहीं फ़तह हो रहा? कहने लगे हम से मिस्वाक की सुन्नत छूटी हुई है, नतीजा यह निकला कि क़िला इसलिए फ़तह नहीं हो रहा कि मिस्वाक की सुन्नत छूटी हुई, सारे लश्कर को हुक्म दिया कि सब मिस्वाक करो, और हमारा लोग मज़ाक़ उड़ाते है कि यह क्या लकड़ियां मुंह में लेकर फिरते हो? अब तो नया ज़माना है, अब तो ब्रश करना चाहिये। यह क्या तुम लकड़ियां मुंह में देते रहते? तो ऐसे लोगों के साथ अल्लाह की मदद आएगी? मिस्वाक की सुन्नत के छूटने पर अल्लाह की मदद हट गई, तुमने मेरे हबीब की एक सुन्नत को हल्का समझा है, लिहाज़ा हमारी मदद तुम से दूर हो गई।

......☆......☆......☆......

आला तरबियत

हुज़ूर स॰ के तरीक़े पर जमना आज उम्मत से निकला हुआ है, सहाबा रज़ि॰ की उस रुख़ पर तरबियत फ़रमाई कि मरना क़ुबूल किया, अल्लाहु अकबर, अन्दाज़ा लगाइये कि हज़रत अली यहूदी के सीने पर चढ़े हुए हैं और उसे क़त्ल करना चाहते हैं और वह मुंह पर थूकता है, छोड़ के पीछे हट जाते हैं, कहा दोबारा आओ, यहूदी हैरान है, अरे क्यों? कहा पहले मैं तुझे अल्लाह और अल्लाह के दीन की वजह से क़त्ल कर रहा था, जब तूने मेरे मुंह पर थूका तो मेरे नफ़्स का गुस्सा शामिल हो गया, अब अल्लाह के

रसूल स॰ की रज़ा नहीं थी, अब अपने नफ़्स का गुस्सा था, दोबारा आओ, यहूदी ने कल्मा पढ़ लिया, आज तो मुसलमान, मुसलमान को क़त्ल कर रहा है, किस पर? कि उसने मुझे गाली दे दी बस इसी पर क़त्ल कर दिया, तो इन आमाल के साथ उम्मत कहां वजूद पकड़ेगी? मेरे भाइयो! मैं इस क़िस्से को पढ़ कर हैरान हो जाता हूं कि इतना अल्लाह रसूल से तअल्लुक कि थूका मुंह पर छोड़ के खड़े हो गये अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करूंगा, पहले मैं अल्लाह रसूल की वजह से कर रहा था, अब अपनी वजह से करूंगा, अब मैं क़त्ल नहीं करता, दोबारा आओ।

अल्लाह की मुहब्बत में ग़ैर को शरीक न कर

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह॰ के पास एक औरत आई। कहा हज़रत अगर पर्दे का हुक्म न होता तो मैं आप को अपना चेहरा दिखाती। लेकिन अल्लाह ने हराम क़रार दिया है। मुझे कि मैं अपना नक़ाब उठाऊं लेकिन अगर इजाज़त होती तो मैं आप को अपना चेहरा ज़रूर दिखाती कि मैं इतनी ख़ूबसूरत हूं, इसके बावजूद मेरा ख़ाविंद दूसरी शादी करना चाहता है तो शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह॰ ग़श खा के गिर गये। लोग बड़े हैरान कि किस बात पे ग़श आ गया। उन के पास एक औरत अपनी बात लेकर आई है। अपनी ग़ैरत का तक़ाज़ा ले कर आई है। जब होश आया तो फ़रमाया। ऐ लोगो। यह मख़्लूक़ है जो मुहब्बत में ग़ैर को शरीक नहीं कर रही। अल्लाह अपनी मुहब्बत में शरीक को कैसे बर्दाश्त करेगा। मख़्लूक़ तो बर्दाश्त करती नहीं लेकिन अल्लाह ने बर्दाश्त किया हुआ है। इस दिल में कितने बुत बिठाये हुए, कितना अल्लाह करीम है कि बर्दाश्त कर के चल रहा है।

यूसुफ़ अलै॰ को अपने बाप से चालिस बरस जुदा रखा फिर

चालिस साल के बाद मिलाया। रो रो के आंखें सफ़ेद कर दीं وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ सफ़ेद हो गई आंखें। जब मिल गये नां तो फिर अल्लाह तआला कहने लगे। बताउं क्यों दूर किया था। कहा बताइये। कहा एक दफ़ा नमाज़ पढ़ रहा था। यूसुफ़ अलै॰ बच्चा तेरे पास लेटा हुआ था। नमाज़ पढ़ने के दौरान यह रोने लगा। तेरी तवज्जोह मुझ से हट कर उधर चली गई। इस ग़ैरत ने जुदा किया था कि मेरा नबी हो कर नमाज़ में खड़ा हो कर अपने बच्चे को सोचे। इब्राहीम अलै॰ से क्यों कहा कि इस्माईल अलै॰ पर छुरी चला दे (हमें बताने के लिए) कि तूने नबी के तरीक़े पे आना है। यही हमारी मेराज है। यही हमारा मक़सद है इस पर जान चली जाए मंज़ूर है जान बच जाए الحمد الله।

......☆......☆......☆......

मिम्बर की चीख़ व पुकार

जिस खुजूर के सुतून पर आप टेक लगा कर ख़ुत्बा दिया करते थे जब आप स॰ के लिए मिम्बर बना दिया गया और आप स॰ हुज्रा मुबारक से तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर क़दम रखने लगे तो सुतून ने देखा कि आप आगे चले गये हैं और मुझे छोड़ दिया فحن حنين العشار तो ऐसा चीख़ा जैसे दस माह की गाभिन ऊँटनी चीख़ती है, इतनी ज़ोर से चीख़ा कि सारी मस्जिद में उसकी आवाज़ सुनाई दी, आप स॰ वापस मुड़े और उसको यूं सीने से लगाया और फ़रमाया क्या तू राज़ी नहीं है कि जन्नत में चला जाए और जन्नत वाले तेरे फल खाऐं? तो वह ऐसे ख़ामोश हुआ कि उसकी सिसकियां और हिचकियों की आवाज़ आ रही थीं आप स॰ ने फ़रमाया والذى نفس محمد بيده' لو لم التزمه अगर मैं उसको अपने से न लगाता مازال باكيا حطباحتى يوم القيامة حزنا على فراق

'رسولاللہ तो यह मेरी जुदाई के सदमें में क़यामत तक रोता रहता ऐसी बेजान चीजों को भी आप स० की रिसालत का इक़रार है और फिर आगे रिवायत मुख़्तलिफ़ हैं बाज़ में आता है कि आपने फ़रमाया कि जाओ उसको दफ़न कर दो उसको मस्जिद से निकाला गया और दफ़न कर दिया गया और बाज़ में आता है कि ज़मीन फट गई और वह उसके अन्दर ग़ाएब हो गया तो सारी मख़्लूक़ात पर आप की नुबूवत छाई हुई थी।

......☆......☆......☆......

ऊँटों की सरकशी

एक अंसारी सहाबी रज़ि० आए कि हुजूरे अक्रम स० मेरे दो ऊँट सरकश हो गये हैं, आप स० ने फ़रमाया कि मुझे ले चलो, बाग़ गये तो दरवाज़ा बन्द था, एक ऊँट सामने खड़ा था बिलबिला रहा था, आप स० ने फ़रमाया दरवाज़ा खोलो उसने कहा या रसूलुल्लाह! मुझे डर लगता है कि आप को नुक़्सान पहुंचाएँगे। आप स० ने फ़रमाया मुझे कुछ नही कहेंगे दरवाज़ा खोलो! जब ऊँट की निगाह आप स० पर पड़ी दौड़ कर आ के क़दमों में गिर गया اَلْقٰی بِجِرَانِہٖ आप स० ने रस्सी से बांध लिया कि ले यह कभी तेरा नाफ़रमान नहीं होगा दूसरे की तरफ़ देखा तो वह भी उसी तरह आया और आप स० के क़दमों पर सर डाल दिया आपने उसको भी रस्सी से बांध दिया कि लो यह भी नाफ़रमानी नहीं करेगा जानवरों को भी पता है।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं:

कि आप स० दरख़्तों के पास से गुज़रते दरख़्त कहते اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ यही हाल पत्थरों का था।

गोह का नुबूवत की गवाही देना

एक बद्दू आप की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसके हाथ में मरी हुई गोह थी आप के सामने फेंकी और कहने लगा जब तक यह तेरी रिसालत की गवाही न दे उस वक़्त तक मैं तेरी रिसालत की गवाही देने के लिए तय्यार नहीं हूं वह गोह भी मुर्दा थी आपने उससे इरशाद फ़रमायाः ऐ गोह! गोह ने कहा لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ يَا مُزَيِّنَ مَا وَفِي يَوْمِ الْقِيَامَةِ! लब्बैक मैं हाज़िर हूं ऐ क़यामत के दिन को ज़ीनत बख़्शने वाले जितने भी क़यामत में आयेंगे सबको ज़ीनत बख़्शने वाले, आपने फ़रमाया مَنْ تَعْبُدُ؟ तू बन्दगी किस की करती है? यह मुर्दा है शिकार शुदा है गोह ने जवाब दिया مَنْ فِي السَّمَاءِ عَرْشِهِ وَفِي الْاَرْضِ سُلْطَانِهِ وَفِي الْبَحْرِ سَبِيْلِهِ وَفِي الْجَنَّةِ رَحْمَتِهِ وَفِي النَّارِ عِقَابِهِ मैं उसकी बन्दगी करती हूं, जिसका अर्श आसमानों में और सलतनत ज़मीनों में, और उसके बनाए हुए रास्ते समुंद्र में, रहमत जन्नत में और अज़ाब जहन्नम में है, आपने फ़रमाया من انا؟ मैं कौन हूं? गोह ने जवाब दिया اَنْتَ رَسُوْلُ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَخَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ आप अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबीय्यीन हैं قَدْ اَفْلَحَ صَدَّقَكَ وَقَدْ خَابَ مَنْ كَذَّبَكَ आप के मानने वाले कामियाब और ठुकराने वाले नाकाम।

......☆......☆......☆......

कुरआन हिफ़्ज़ करने की फ़ज़ीलत

नुबूवत भी आप की मुकम्मल की जा रही और किताब भी मुकम्मल की जा रही जिन सीनों में यह कुरआन उतरेगा उनको जहन्नम की आग खा नहीं सकती चाहे वह बदअमली की वजह से जहन्नम में भी जाए लेकिन कुरआन के अल्फ़ाज़ को सीनों में लेने की बरकत यह होगी कि आग नहीं जला सकती, सांप काटे, बिच्छू

काटे, फ़रिश्ते पिटाई करें, यह सब हो सकते हैं क्योंकि उनके अन्दर कुरआन के अल्फ़ाज़ हैं, अमल कोई नहीं अल्फ़ाज़ की यह क़ीमत है अल्फ़ाज़ को भी अन्दर ले लें और अमल को भी अन्दर ले लें।

إِنَّ فِى الْجَنَّةِ نَهْرًا اِسْمُهٗ رَيَّانٌ عَلَيْهِ مَدِيْنَةٌ مِنْ مَرْ جَانَ لَهٗ سَبْعُوْنَ
أَلْفُ بَابٍ مِنْ ذَهَبٍ وَفِضَّةٍ لِحَامِلِ الْقُرْآنِ

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम रय्यान है जिस में सत्तर हज़ार दरवाज़े हैं जो सोने चांदी के हैं यह हामिले कुरआन के लिए हैं यहां हाफ़िज़े कुरआन के बजाए हामिले कुरआन फ़रमाया है कि यह कुरआन को लेकर चल रहे हैं उसमें उलमा भी दाख़िल हो जाऐंगे और हुफ़्फ़ाज़े किराम भी दाख़िल हो जाऐंगे जो कुरआन को लेकर चलते हैं अमल की शर्त नहीं सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की बरकत से जहन्नम की आग नहीं जलाएगी। और अगर अन्दर अमल को भी ले लिया अल्फ़ाज़ को भी ले लिया और उसके मुताबिक़ ज़िन्दगी को भी डाल दिया तो "نُوْرٌ عَلٰى نُوْر" यह सिर्फ़ एक महल दिया जा रहा है जिसके सत्तर हज़ार दरवाज़े फिर जब फ़रिश्ते उसको उस महल में बैठा देंगे तो पहला दरवाज़ा खुलेगा उस में से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते निकलेंगे कहेंगे अल्लाह पाक आप को सलाम भेजते हैं। और यह आप का है और हदिया सत्तर हज़ार उसको पेश करेंगे वह कहेगा रख दो वह चले जाऐंगे दूसरा दरवाज़ा खुलेगा उस में से एक लाख चालिस हज़ार फ़रिश्ते आऐंगे और आकर सलाम करेंगे और कहेंगे कि यह हदिये अल्लाह ने आप को दिये हैं एक लाख चालिस हज़ार हदिये, वह फ़रिश्ते चले जाऐंगे।

फिर तीसरा दरवाज़ा खुलेगा उस में से दो लाख अस्सी हज़ार फ़रिश्ते दाख़िल होंगे कहेंगे اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ आप को रब ने सलाम

भेजा है और यह दो लाख अस्सी हज़ार हदिये हैं जो आप को पेश किये जा रहे हैं वह कहेगा ठीक है रख दो चले जाऐंगे।

चौथा दरवाज़ा खुलेगा उस में से पांच लाख साठ हज़ार फ़रिश्ते आयेंगे वह आकर सलाम करेंगे और पांच लाख साठ हज़ार हदिये देंगे वह कहेगा रख दो।

फिर पांचवां दरवाज़ा खुलेगा उस से दो गुने उसमें से निकलेंगे फिर सातवां उस से दो गुने फिर आठवां उस से दो गुने फिर सारे सत्तर हज़ार दरवाज़े खुलेंगे तो उस में अरब हा अरब फ़रिश्ते दाख़िल होंगे और कितने हदिये ले कर आयेंगे यह उसकी क़ीमत अल्लाह लगा रहे हैं लोग बेशक न लगायें लोग तो कहेंगे बेचारा इमामे मस्जिद और यह बेचारे मौलवी लोगों के टुक्ड़े खा कर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं लोगों में तो यह बात चलेगी।

......☆......☆......☆......

ख़्वाब में मुलाक़ात

एक बुज़ुर्ग का इन्तेक़ाल हुआ, किसी को ख़्वाब में मिले पूछा क्या हुआ तेरे साथ? कहने लगे अल्लाह ही ने मेहरबानी फ़रमा दी वरना मैं तो हलाक हो गया था पूछा कैसे? फ़रमाया अल्लाह ने पूछा मेरे लिए क्या लाए हो? मैंने अर्ज़ की या अल्लाह मैं तेरे लिए सत्तर साल की तौहीद लाया हूं अल्लाह तआला ने फ़रमाया अच्छा फ़लां रात तेरे पेट में दर्द हुआ था पूछने वाले ने पूछा था यह दर्द क्यों हुआ तुमने कहा दूध पिया जिसकी वजह से दर्द हुआ उस वक़्त यह तौहीद कहां चली गई थी मेरे भाई हमें तो कहते हुए डर लगता है वरना हमारे अन्दर शिर्क की जड़ें पता नहीं कहां तक गहराइयों में जा चुकी हैं।

एक लफ़्ज़ है वहदानियत, एक लफ़्ज़ है मोटर, मोटर मोटर

कहने वालो को कोई आदमी यह नहीं समझता कि यह मोटर वाला है और खुद भी नहीं समझता कि मैं मोटर वाला हूं अगला यह समझता है कि यह बेचारा दीवाना है, मोटर का लफ़्ज़ एक हक़ीक़त पर दलालत कर रहा है कि वह एक चार पैसों वाली चीज़ है जिस में मशीन है इंजन है और उसके ऊपर सीटें हैं दरवाज़े यह लफ़्ज़ उसकी तरफ़ इशारा करता है एक आदमी मोटर की सूरत ले कर बैठा हुआ है तो कोई नहीं कहता कि यह मोटर वाला है हां एक आदमी दो तीन लाख की गाड़ी ख़रीदता है तो यह गाड़ी वाला है, और दो तीन लाख कमाना कितना मुश्किल है? फिर उस गाड़ी को लेना और रखना कितना मुश्किल है लफ़्ज़ की कोई क़ीमत नहीं है सूरत की कोई क़ीमत नहीं है हक़ीक़त की क़ीमत है यह तो दुनिया के ऐतबार से لا الــــه الاالـلّــه यह कल्मा तौहीद है यह तो नहीं कहा जा सकता कि उसकी कोई क़ीमत नहीं यह उसकी सूरत की कोई क़ीमत नहीं उसके लफ़्ज़ की भी क़ीमत है।

......☆......☆......☆......

अबू रेहाना रज़ि॰ की नमाज़ में मशग़ूलियत

हज़रत अबू रेहाना रज़ि॰ सफ़र से आये बीवी बड़ी इन्तिज़ार में है कि चलो आज तो ख़ाविंद घर में आया यह भी एक ज़माना था कि कल्मे के लिए फिरा करते थे उसको फैलाते थे जब यह वापस आये तो कहा कि दो रकअत नफ़िल पढ़ लूं? इशा की नफ़िल थी जब नमाज़ में खड़े हो कर कुरआन शुरू किया तो फ़ज्र की अज़ान हो गई अब आप बताइये जब आदमी दूर से आये तो उसकी बीवी को कितना इश्तियाक़ होगा, बीवी के साथ ही खड़े हो कर फ़ज्र की अज़ान तक नमाज़ मे मसरूफ़ रहे बीवी कहने लगी يَـــا اَبَـــا رَيْـحَـانـه غَـضَـبْـتَ وَرَجعْـتَ وَتَعَبَّدْ تَّ اَمَا لَنَا مِنْكَ نَصِيْبٌ ؟ अबू रेहाना

यह क्या सितम है एक तो फिरते फिराते रहे वापस आये फिर सारी रात खड़े हो कर थकते रहे क्या मेरा कोई हक़ नहीं है तेरे ऊपर कहने लगे نَسِيْتُ وَاللّٰهِ अल्लाह की क़सम मैं भूल गया कहने लगीं अल्लाह के बन्दे बाहर होते तो भूलना ठीक था मेरे कमरे में और मेरे साथ खड़े हो के कैसे भूल गया कहने लगे जब मैंने अल्लाहु अकबर कह कर कुरआन पढ़ना शुरू किया तो जन्नत और दोज़ख़ में ग़ौर करना शुरू किया और जन्नत और दोज़ख़ मेरी आंखों के सामने खुल गई तो उसी में मगन रहा मुझे ख़्याल ही नहीं रहा, ऐसी नमाज़ थी, हमें फ़िक्र ही नहीं कि हमें नमाज़ भी ठीक करनी है दुकान की डेकोरेशन, दरवाज़ा लगा दो शीशे लगा दो, कुर्सियां रख दो उस के ऊपर पता नहीं क्या बिछी दो, लाइनें लगा दो एयर कन्डीशन लगाओ और पता नहीं क्या क्या होता है दुकान ख़ूबसूरत होगी लोग ख़्वाह मख़्वाह आऐंगे भाइयो अल्लाह भी कहता है कि मेरी बारगाह में आता है तो नमाज़ की शकल ठीक कर ले अल्लाह को लूला लंगड़ा अमल टिकाया और दुकान में आया तो ख़ूब सजा अल्लाह के सामने आया तो गंदा हो के مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ के लाए हुए अहकामात पर अमल करने के लिए एक आदमी नमाज़ पढ़ने जा रहा है कोई ज़कात दे रहा है उस से पूछा अरे मियां यह पैसे का क्या कर रहे हो? उसने कहा ज़कात दे रहा हूं पूछा क्यों? उन्होंने कहा मुहम्मद को अल्लाह का रसूल माना है उन्होंने फ़रमाया है कि ज़कात दो अब ज़मीनदार उश्र निकाल रहा है क्योंकि मैंने मुहम्मद स॰ की रिसालत का इक़रार कर लिया है अब मेरी आमदनी घटे या बढ़े मेरा ख़र्चा पूरा हो या न पूरा हो मुझे उश्र निकालना है यह नहीं देखना कि मेरी मौत क्या है यह देखना है मुहम्मद रसूलुल्लाह ने क्या फ़रमाया है।

......☆......☆......☆......

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह०

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ मरहूम घर में तशरीफ़ लाए तो बेटियां कपड़ा मुंह पर रख कर बात करती हैं कहने लगे क्या करती हो? मुंह पर कपड़ा क्यों रखा हुआ है? तो ख़ादमा रोने लगी, कहने लगी अमीरुल मोमिनीन कुछ ख़बर है कि तेरी बेटियों ने आज कच्ची प्याज़ से रोटी खाई है, तीन बर्रे आज़म का वाली और हुक्मरान और वह उसकी बेटियां कच्चे प्याज़ से रोटी खाऐं हमारे हां मज़दूर की बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी नहीं खाती हैं उस से कच्चे प्याज़ की बदबू मुंह से आती है और आप को बदबू से नफ़रत है इसलिए कपड़े से मुंह को ढांपे हुए हैं हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि० रोने लगे कौन चाहता है कि उसकी औलाद मुसीबत में रहे मेरी बेटियो! मैं तुम्हें बड़े लज़ीज़ खाने खिला सकता था, लेकिन मै जहन्नम की आग को बर्दाश्त नहीं कर सकता सब्र करो अल्लाह अच्छा खिलाएगा फ़ाक़ों पर अल्लाह का वादा है कि अल्लाह पालते हैं नेकी पर अल्लाह का वादा है कि अल्लाह पालते हैं हराम पर अल्लाह का वादा नहीं, उस पर तो वादा है कि ज़लील व ख़्वार करूंगा, उनकी नसलें रोती हैं जो हराम कमाई औलाद के लिए छोड़ के मरते हैं वह क़ब्रों में औलाद को रोते हैं औलाद रोती है दुनिया में वह क़ब्रों में रोते, अब यहां गुज़ारा कैसे होगा।

......☆......☆......☆......

3 दिन से चूल्हा नहीं जला

जिसने कल्मा पढ़ा उस के लिए जन्नत तो है मुझे हुज़ूर स० के तरीक़े पर जमना है उनके पेट पर पत्थर बंधे हुए थे मेरे पेट पर पत्थर तो नहीं बंधे होते हैं उनके बच्चे पर सात सात दिन तक

फ़ाक़े पहुंचे हैं और वह फ़रयाद करते हुए पहुंचता है कि या रसूलुल्लाह फ़रिश्ते तस्बीह पढ़ कर पेट भरते हैं फ़ातमा क्या चीज़ खाए?

आपने फ़रमाया बेटी! उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे नबीय्ये बरहक़ बना कर भेजा है 3 दिन हो गये हैं मेरे घर में भी चूल्हा नहीं जला इसलिए आप स० से सादा घटिया ज़िन्दगी का मेयार मुंतख़ब किया ताकि यह कोई न कह सके कि गुज़ारा कैसे करें? पत्थर बांधने की गुन्जाइश है नबी में 40 आदमी की ताक़त होती है और जन्नत में एक आदमी में सौ आदमियों की ताक़त होगी ख़ातिमुल अंबिया की ताक़त कितनी होगी?

......☆......☆......☆......

पाकिस्तानी जमाअत फ़्रांस में

फ़्रांस में एक जमाअत चल रही थी पैदल तीन लड़कियों ने अपनी गाड़ी जमाअत वालों के पास खड़ी कर दी और बाहर निकलीं जेब से रुपये निकाले और जो आगे चल रहा था उसको दिये और जो अरब वहां जा कर आबाद हैं जिनमें जा कर जमाअतें काम करती हैं और उनको अपने साथ चलाते हैं उसी तरह वह मक़ामी अरब भी साथ चल रहा था उन लड़कियों ने उनको पैसे दिये कहने लगीं शायद आप लोगों के पास किराया नहीं है इसलिए यह किराया हम से ले लें तो उस अरब ने कहा इनके पास किराया और अपने अपने पैसे हैं वह कहने लगी फिर आप को सवारी नहीं मिली होगी? हम आप के लिए शहर जाते हैं और ख़ाली वैगन आप के लिए लाते हैं उस पर बैठ कर जहां चाहे चले जाएं उसने कहा वैगन उनके पास अपनी है वह तो सामान लेकर आगे चली गई है यह पैदल चल रहे हैं वह कहने लगीं यह पैदल

क्यों चल रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि जी अब आप हज़रात जवाब दो, उस जमाअत में जो आलिम थे उन से पूछा गया कि उनको क्या जवाब देना है (बाज़ जमाअतों में कोशिश होती है कि उनकी जमाअत में एक आलिम ज़रूर हो तो वह ज़ुबान बनता है) उन्होंने कहा उनसे कहो कि हम लोगों की ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हैं कि सारी दुनिया में अमन हो जाए और अल्लाह पाक अपने बन्दों से राज़ी हो जाए लड़कियों ने कहा अच्छा हमारी भी ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हो, कहा हां, आप की भी ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हैं और हम दुआ करते हैं कि अल्लाह सारी दुनिया के इन्सानों से राज़ी हो जाए कहा हमारे लिए भी दुआ करते हैं? कहा हां आपके लिए भी दुआ करते हैं अब उनमें से एक लड़की ने कहा कि अब मुझे पता चल गया कि आप कौन हैं? हम कौन हैं? कहा आप सब नबी हो अल्लाहु अकबर यह काम ख़त्मे नुबूवत की पहचान है काश हम इसको समझ लें, उन्होंने पूछा कि आप को किस तरह पता चला कि हम नबी हैं?

उन्होंने कहा हमने अपनी मज़्हबी किताबों में पढ़ा है कि नबी लोगों की ख़ैरख़्वाही के लिए फिरते थे और उनके लिए दुआ किया करते थे और अपना माल ख़र्च करते थे मख़्लूक़ से कुछ नहीं लेते थे उनके पीछे पीछे फिरते थे तो यह सारी बातें हमने आप में देखीं लिहाज़ा आप नबी हैं, तो उन्होंने कहा कि उन से कहो कि हम नबी नहीं हैं हम ऐसे नबी की उम्मत हैं उस नबी के बाद कोई नबी नहीं आएगा और इस उम्मत के ज़िम्मे नबी का काम लगा है क्योंकि हमारे नबी के बाद और कोई नबी नहीं आएगा। इस वजह से हम उनके पैग़ाम को लेकर दुनिया में फिर रहे हैं उन्होंने कहा ठीक है ठीक है हमारे लिए भी दुआ करें मेरे भाई दावत अल्लाह की तरफ़ बुलाना उसकी अज़मत और बुज़ुर्गी का बोलना रिसालत

की तरफ़ बुलाना और अपने दिल से लगाना मख़्लूक़ से कुछ न चाहना यह वह काम है जो बतलाया गया यह लोग आख़िरी नबी के उम्मती हैं पहले लोगों में जब बिगाड़ आता था तो नेक लोग नबियों का इन्तिज़ार करते थे, हमें नबियों के इन्तिज़ार का हुक्म नहीं मिला, हमें यह हुक्म मिला कि नबी के कल्मे को लेकर फिरते चले जाओ यह तब्लीग़ का काम ख़त्मे नुबूवत की पहचान है अगर उम्मत इस काम को छोड़ती है तो यह ख़त्मे नुबूवत का अमली इन्कार है अमली इन्कार से आदमी फ़ासिक़ हो जाता है ऐतेक़ादी इन्कार से काफ़िर होता है अगर हम बैठ जाएं भाई! कि बस नमाज़ पढ़ो अल्लाह अल्लाह करो हलाल रोटी खाओ बीवी बच्चों के हुक़ूक़ का ख़्याल करो, बच्चों की तालीम व तरबियत का ख़्याल करो बस इतना करो तो तुम्हारे लिए काफ़ी है यह एक ज़ेहन चल रहा है हर मुसलमान का तक़रीबन यह ज़ेहन है

......☆......☆......☆......

जाहिल का फ़त्वा

मुफ़्ती जैनुल आबिदीन साहब मोहतमिम दारुल उलूम फ़ैसलाबाद कहते हैं कि मैं रेलगाड़ी में सफ़र कर रहा था मग़्रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया तो मैं उठा क़िब्ला रुख़ देखने के लिए बाहर जाने लगा एक आदमी कहने लगा सूफ़ी जी हर जगह नमाज़ हो जाती है सीट पर बैठ कर पढ़ लो, जैसे आपने देखा होगा रेलगाड़ी में सीट पर बैठे बैठे पढ़ रहे हैं न क़िब्ला रुख़ न क़याम पे दोनों फ़र्ज़ हैं लोग कहते हैं हो जाती है नापाक सीट पर बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे होते हैं उनको कहो कि नमाज़ नहीं होती तो कहते हैं कि तुम्हें क्या ख़बर हो जाती है उनको क्या पता कि मैं मुफ़्ती से बात कर रहा हूं, मुफ़्ती कहने लगा कि भाई अभी मैंने फ़त्वे का काम तुम्हारे सुपुर्द नहीं किया वह क़िब्ला नुमा देख कर

नमाज़ पढ़ने लगा तो उसने किसी से पूछा यह कौन है? तो कहा यह मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन हैं फ़ैसलाबाद के और वह आदमी भी फ़ैसलाबाद का था वह उनके नाम को जानता था लेकिन शक्ल से नहीं जानता था वह जब नमाज़ पढ़ के आए तो कहने लगे माफ़ कर देना मुझे पता नहीं था कि आप हैं उन्होंने कहा आपका कुसूर नहीं है आज सारी उम्मत ही मुफ़्ती है लोग क्या क्या बातें बनाते हैं? उसको देखो यह कहां की तब्लीग़ है? बूढ़े मां बाप छोड़ के जाओ मां के क़दमों तले जन्नत है उनकी ख़िदमत करो वही जन्नत है हलाल खाओ यह भी जन्नत है नमाज़ पढ़ो यह भी जन्नत है यह ख़त्मे नुबूवत का ख़्वाहमख़्वाह झगड़ा डाला हुआ है फिर ख़त्मे नुबूवत की भी छुट्टी 6 अरब इन्सानों पर ज़ुल्म हो रहा है वह जहन्नम में जा रहे हैं हम कहते हैं हमारे ज़िम्मे नहीं है अच्छा हमारे ज़िम्मे नहीं तो किसके ज़िम्मे है? कौन जाए? उन्होंने कहा किताब भेज दो किताब तो मुर्दा चीज़ है उसे ज़िन्दगी कैसे समझ में आयेगी किताब तो नुक़ूश हैं उससे क्या पता चलेगा कि अख़्लाक़ किसे कहते हैं?

......☆......☆......☆......
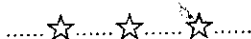
किताब मददगार है

बू अली सीना आये एक बुज़ुर्ग के पास बैठे रहे जब वह गए तो कहने लगे अख़्लाक़ नदारद, बदअख़्लाक़ आदमी है जब उसे पता चला कि मेरे बारे में यूं कहा है तो उसने अख़्लाक़ पर एक पूरी किताब लिखी और उनकी ख़िदमत में भेज दी उन्होंने कहा कि मैंने कब कहा था कि अख़्लाक़ न दांद मैंने तो कहा था नदारद मैंने कब कहा था अख़्लाक़ नहीं जानता जानता तो सब कुछ है लेकिन हैं नहीं मैंने कहा था उसे मालूम नहीं है किताब कैसे बताएगी कि क़ुर्बानी किसे कहते हैं किताब कैसे बताएगी कि

मुआशरा किसे कहते हैं किताब तब मददगार होती है जब मुआशरा क़ाएम हो एक मईशत चल रही है एक ज़िन्दगी चल रही है उसमें किताब मददगार है पूरी सतह हस्ती पर पूरी धरती पर एक बस्ती कोई दिखा दें कि जिस में हुज़ूरे अक्रम स. की पूरी ज़िन्दगी और पूरा दीन ज़िन्दा है? तो हम कहेंगे ठीक है छोड़ दो तब्लीग़ के काम को हम मख़्वाह धक्के खाते फिरते हैं सात बर्रे आज़म हैं पांच अरब इन्सान हैं एक बस्ती दस घरों पर मुशतमिल है।

......☆......☆......☆......

सहाबा किराम रज़ि. की मुशाबिहत

एक साथी रूस की जमाअत में गया पीछे उसको सोलह लाख का नुक़्सान हुआ वह वापस आये तो उसके सारे रिश्तेदारों ने उसका जीना हराम कर दिया तब्लीग़ करता रह और भी कर सारा घर लुटा दिया इसी का नाम इस्लाम है कि अपने बच्चे दर दर भीक मांगते रहें वह नीम पागल हो गया एक दफ़ा हम गश्त कर रहे थे बाज़ार में सौकड़ मन्डी में, तो वहां वह भी बैठा हुआ था और जो मन्डी का ताजिर था वह कहने लगा कि मौलवी साहब यह कोई तब्लीग़ है इस बेचारे का सारा घर लुट गया है सोलह लाख का नुक़्सान हुआ मैंने उससे कहा तुझे मुबारक हो! वह हैरान हो गये, उन्होंने कहा मौलवी यह क्या कह रहे हो मैंने कहा इजमाली बात तो यह है कि नुक्सान उसके मुक़द्दर में था

مَا اَصَابَتْ لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَكَ وَمَا اَخْطَئَتْ لَمْ يَكُنْ لِيُصِيْبَكَ رُفِعَتِ الْاَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ۔

नबी का फ़रमान है जो तक्लीफ़ आने वाली है उसे कोई हटा नहीं सकता जो राहत आने वाली है उसको कोई रोक नहीं सकता यह तक्लीफ़ आनी थी कारोबार में घाटा आना था तुम्हारी इस मन्डी में रोज़ाना घाटे पड़ते हैं लाखों के घाटे पड़ते हैं तुमने कभी

शोर मचाया तुमने कभी कहा कि उसके बच्चे भूके मर रहे हैं सूदी कारोबार करते करते जब वक़्त आता है दीवालिये निकल जाते हैं यह तब्लीग़ में गया था इसका नुक़्सान हुआ इसलिए शोर मचा रहे हैं इसका नुक़्सान होना था लेकिन यह मुबारक शख़्स है कि इसका नुक़्सान सहाबा किराम रज़ि॰ के नुक़्सान से मुशाबे हो गया।

......☆......☆......☆......

अबू तलहा अन्सारी रज़ि॰ का नुक़्सान

अबू तलहा अन्सारी बाग़ात के मालिक एक दिन घर में आए तो तमाम बाग़ात उज्ड़े हुए हैं और घर में एक आदमी के लिए भी रोटी नहीं अन्सार मदीना थे और पेट पर पत्थर बंधे हुए हैं यह उनका आलम है उनके बाग़ात क्यों लुट गये वह घाटे क्यों पड़े नबी की ख़त्मे नुबूवत की मेहनत की वजह से घाटे आये ख़त्मे नुबूवत के काम की वजह से नुक़्सान आया अगर ख़त्मे नुबूवत की मेहनत और दीन के काम का मिज़ाज यह होता कि अपने कारोबार को भी ठीक रखो और अपने घर के काम से फ़ारिग़ हो जाओ तो दीन का काम भी करो अगर दीन का मिज़ाज यह होता ख़त्मे नुबूवत का मिज़ाज यह होता पहले बीवी बच्चों को रोटी खिला लो फिर तब्लीग़ कर लो, तो फिर किसी सहाबी को पेट पर पत्थर बांधने की ज़रूरत न पड़ती, हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ तआला अन्हा को सात दिन के फ़ाक़े का कोई दुख नहीं तो हज़रत हसन व हुसैन रज़ि॰ का भूक की वजह से तड़प तड़प के रोना कोई समझ में नहीं आता यह बाग़ात उजड़ गये घर के घर वीरान हो गये यह क्यों हुआ? हालाँकि उन्हें आला और अदना की तमीज़ थी, हमें तमीज़ नहीं है वह अदना पर कुर्बान करते थे हम कुर्बान नहीं कर रहे यह ख़त्मे नुबूवत की लाइन का सबसे आला काम है ज़द पड़ गई नुक़्सान आ गया घाटा आ गया फ़र्ज़ करो अव्वल तो यह बहुत

लोग हैं जिनके साथ यह होता है और जिनके साथ यह होता है वह बड़े मुक़र्रब लोग हैं اشد الناس بلاء الا نبياء सबसे ज़्यादा मशक़्क़त में अंबिया होते हैं और यह नुक़्सान और घाटे बिला ऐवज़ नहीं हैं इस पर इतना मिलेगा कि उसकी और नबी की जन्नत के दरमियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।

......☆......☆......☆......

दावत के लिए निकल जाओ

और हज्जतुल विदा के बाद आप दो ढाई महीने भी ज़िन्दा नहीं रहे हज्जतुल विदा के बाद आप स॰ ने मआज़ रज़ि॰ को फ़रमाया मआज़ यमन जाओ वहां जाओ और عَسٰى اَنْ لَا تَلْقٰى بَعْدَ عَامِيْ هٰذَا अब तू आयेगा मुझे नहीं पाएगा لَعَلَّكَ تَمُرُّ بِمَسْجِدِىْ هٰذَا जब तू आयेगा मस्जिद तो होगी मैं नहीं हुंगा हुज़ूर स॰ को देखना दीन है और मां बाप के पास रहना दीन है उनकी ख़िदमत करना दीन है उनके लिए कमाई करना दीन है लोगों को दीन के मसाएल बताना भी दीन है और मआज़ बिन जबल रज़ि॰ भी अहले फ़त्वा में से थे हुज़ूरे अक्रम स॰ के पीछे नमाज़ पढ़ना उनके अहकाम सुनना यह सारे दीनी अवामिर हैं लेकिन आप स॰ ख़ुद उस दीन को क़ुर्बान करवा कर कह रहे हैं कि यमन जा यमन जा।

......☆......☆......☆......

मौलाना इलयास रह॰ की सोच की वुस्अत

मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रहमतुल्लाह के सामने छः या सात आदमी होते थे उनसे कहते हां भाई! बताओ पूरी दुनिया में जमाअत भेजनी है, क्या करें? उसमें शरीक एक एक आदमी ने मुझे बताया कि हमने कहा यह क्या शैख़ चिल्ली के मन्सूबे बना रहे हैं

छः आदमी हैं और कहते हैं कि पूरी दुनिया में जमाअतें भेजनी हैं इनका दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया या हमारा दिमाग़ ख़राब है सारी दुनिया को सामने रख कर सोच रहे हैं और तरतीब दे रहे हैं सारे आलम में जमाअतें भेजनी हैं सारे आलम में कल्मा फैलाना है क्या करें अगर हम सारे आलम की फ़िक्र नहीं करते तो हमें ख़त्मे नुबूवत वाला नूर नहीं मिल सकता और अब अल्लाह की निगाह बदल जाएगी उस पर अब ज़ाए करना एक है कुर्बान करना जमाअत में गया मां को तक्लीफ़ हो गई यह ज़ाए नहीं यह कुर्बानी हो रही है बाप को परेशानी होगी बच्चे रो रहे बीवी परेशान है और ताने दिये जा रहे हैं कि यह देखो भाई यह कौनसी तब्लीग़ है? यह कुर्बानी है यह जो रोना है यह अल्लाह के अर्श के दरवाज़े खुलवाएगा।

......☆......☆......☆......

लब्बैक या नबी अल्लाह

मेरे भाइयो! हज़रत ईसा अलै॰ का एक बस्ती पर गुज़र हुआ देखा तो सब बरबाद हुए पड़े हैं हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया कि इन पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा है।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (القرآن)

तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा लेकिन आज के कुफ़्र पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा? इसलिए कि आज मज़बूत इस्लाम दुनिया में नहीं है आज खरे कल्मे वाले कोई नहीं हैं जिस ज़माने में जब जिस वक़्त में माज़ी में मुस्तिक़बिल में हाल में जब भी यह कल्मे वाले कल्मे की हक़ीक़त को सीख लेंगे तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसेगा। चाहे वह ऐटम की ताक़त हो चाहे वह तलवार की ताक़त हो चाहे वह हुकूमत की ताक़त हो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा

बरसेगा जब कल्मे वाले वजूद में आयेंगे हज़रत ईसा अलै॰ फ़रमाने लगे यह सब अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से हलाक हुए हैं और आपको यह पता है कि हज़रत ईसा अलै॰ की आवाज़ पर मुर्दे ज़िन्दा होते थे आपने निदा की कि ऐ बस्ती वालो! जवाब आया लब्बैक या नबी अल्लाह।

......☆......☆......☆......

दुनिया की मुहब्बत बुरों की सोहबत

हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया तुम्हारा गुनाह क्या था और तुम किस सबब की वजह से हलाक हो गये? आवाज़ आई। हमारे दो काम थे जिसकी वजह से हम हलाक हुए एक तो हमें दुनिया से मुहब्बत थी एक तवाग़ीत के साथ मुहब्बत थी हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया तवाग़ीत के साथ मुहब्बत से क्या मतबल, आवाज़ आई, बुरे लोगों का साथ देते थे और बुरों की सोहबत में बैठते थे पूछा दुनिया की मुहब्बत से क्या मतलब? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी जैसे मां बच्चे से मुहब्बत करती है जब दुनिया आती थी तो हम ख़ुश होते थे और जब दुनिया हाथ से निकलती थी तो हम ग़म्गीन होते थे हलाल व हराम का ख़्याल किये बग़ैर दुनिया कमाते थे और जाएज़ व नाजाएज़ का ख़्याल किये बग़ैर दुनिया ख़र्च करते थे कमाई में हलाल हराम को नहीं देखते थे और ख़र्च करने में भी जाएज़ नाजाएज़ नहीं देखते थे इस पर हमारी पकड़ हुई हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया फिर तुम्हारे साथ क्या हुआ आवाज़ आई रात को हम सब अपने घरों में सोए हुए थे जब सुबह हुई तो हम सब हाविया में पहुंच चुके थे पूछा यह हाविया क्या है? कहा गया कि हाविया सिज्जीन है पूछा यह सिज्जीन क्या है आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी! सिज्जीन वह क़ैदख़ाना है

जिसका एक अंगारा सातों ज़मीन से बड़ा है और हमारे अरवाह को उनमें दफ़न कर दिया है हमारी रूहों को उनके अन्दर दफ़न किया है और उसमें दफ़न पड़े हैं हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया तुम ही एक बोल रहे हो दूसरे क्यों नहीं बोलते? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी! तमाम के तमाम को आग की लगामें चढ़ी हुई हैं वह नहीं बोल सकते मेरे मुंह में लगाम नहीं है मैं इसलिए बोल रहा हूं फ़रमाया तू क्यों बचा हुआ है? कहने लगा मैं हाविया के किनारे पर बैठा हुआ हूं और मेरे मुंह में लगाम भी नहीं है वजह इसकी यह है कि मैं उनके साथ तो रहता था लेकिन उन जैसे काम नहीं करता था तो उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया अब मैं किनारे पर बैठा हूं लेकिन लगाम नहीं चढ़ी पता नहीं कि नीचे गिरता हूं या अल्लाह तआला अपने करम से मुझे बचाता है मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

मुहम्मद स॰ और नूह अलै॰ एक चीज़ में मुश्तरक

मेरे भाइयो! हज़रत नूह अलै॰ उस कलमे को लेकर उठते हैं और सामने पूरी दुनिया का बातिल है हज़रत नूह अलै॰ और हुज़ूरे अक्रम स॰ में एक चीज़ मुश्तरक है हज़रत नूह अलै॰ को भी सारी दुनिया की तरफ़ नबी बना कर भेजा गया और आप स॰ को भी सारी दुनिया की तरफ़ भेजा गया सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उस ज़माने में दुनिया सिर्फ़ इतनी ही थी जिस में हज़रत नूह अलै॰ भेजे गये लेकिन हुज़ूर स॰ को क़यामत तक का ज़माना दे दिया गया और आप क़यामत तक के लिए इन्सानों के रसूल बना दिये गये हज़रत नूह अलै॰ सिर्फ़ अपने ज़माने के नबी थे और वह ज़माना वही था जिस में वह सारी इंसानियत थी और कहीं इंसानियत नहीं थी एक अकेले नूह अलै॰ उस कल्मे की दावत को लेकर उठे हैं

और इस हाल में उठे हैं ﴿رَبِّ اِنِّیْ دَعَوْتُ قَوْمِیْ لَیْلًا وَّنَھَارًا﴾(القرآن) या अल्लाह मैं कल्मे को लेकर दिन में भी फिरा रात में भी मेरे भाइयो! कल्मा ज़िन्दा हो जाए इसकी अल्लाह से दुआ मांगो ﴿فَلَمْ یَزِدْھُمْ دُعَآئِیْٓ اِلَّا فِرَارًا﴾(القرآن) में नूह कह रहे हैं कि या अल्लाह दावत देता रहा यह मुझ से भागते रहे मैं उन्हें तेरी तरफ़ बुलाता रहा यह मुझ से दूर होते रहे मैंने जब भी दावत दी ﴿وَاِنِّیْ كُلَّمَا دَعَوْتُھُمْ لِتَغْفِرَ لَھُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَھُمْ فِیْٓ اٰذَانِھِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِیَابَھُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا﴾(القرآن) मैं उन्हें तरी तरफ़ पुकारता यह मुंह पर पर्दे डालते कानों में उंगलिया देते मुझसे भागते लेकिन ऐ अल्लाह! मैं इसके बावजूद दावत देता रहा।

......☆......☆......☆......

क़िला ज़मीन पर आ गिरा

हज़रत शरजील बिन हस्ना रज़ि॰ एक दुब्ले पतले से सहाबी रज़ि॰ हैं वही के कातिब थे वही लिखते थे मिस्र में एक क़िला नहीं फ़तह हो रहा था कुछ दिन ज़्यादा गुज़र गये जब मुहासिरा शुरू हुआ रोज़ाना मुहासिरा करते थे एक दिन जब शरजील बिन हस्ना रज़ि॰ को बहुत जोश आया घोड़े को ऐड़ लगा के आगे बढ़े और फ़सील के क़रीब जा के फ़रमाया एक क़ब्तियो! सुनो हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बला रहे हैं अगर उसका तुम्हारे इस क़िले को तोड़ने का इरादा हो जाए तो आन की आन में तोड़ सकता है और لا الہ الا اللہ اللہ اکبر कह कर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आ गिरा उन्होंने यह कल्मा सीखा हुआ था कल्मा पढ़ कर जब उंगली उठाई तो सारा क़िला ज़मीन के साथ मिल गया यह कल्मा सीखा हुआ था मैं आपको पक्की रिवायतें बता रहा हूं अपनी तरफ़ से नहीं सुना रहा वह कल्मा सीखा हुआ

था यह वह गधे नहीं थे कि जिसने शेर की खाल को पहन रखा था हम गधे हैं कि जिन्होंने शेर की खाल को पहन रखा है और कहते हैं कि हम इस्लाम वाले हैं अभी तो हमने कल्मा सीखा नहीं है।

......☆......☆......☆......

अपने पेशाब में ग़र्क़ का वाक़िआ

जब कल्मा अन्दर में आता है तो बातिल ऐसे टूटता है जैसे तुम अंडे के छिल्के को तोड़ते हो जैसे अल्लाह ने क़ौमे नूह के बातिल को तोड़ा एक भी न बचा तीन आदमी ग़ार में छिपे उन्होंने कहा यहां तो कोई नहीं आयेगा, न पानी आएगा न कोई और आयेगा ऊपर से पत्थर रख लिया। ग़ार में छिप गये मुतमईन हुए अल्लाह अगर चाहता तो पानी को बाहर से भी दाख़िल कर सकता था वह अपनी कुदरत को दिखाना चाहता है तीनों को पेशाब आया ऐसे ज़ोर का पेशाब कि रोक नही सके, पेशाब के लिए बैठ गये अल्लाह तआला ने पेशाब को जारी कर दिया पेशाब बन्द नहीं होता निकलता जा रहा है हत्ता कि वह तीनों अपने पेशाब में ग़र्क़ होकर मर गये अल्लाह ने किसी को न छोड़ा और अपने कल्मे वाले की बात को सच्चा किया और अपने कल्मे वाले नूह को जैसे उसने कहा था رب لا تذر على الارض من الكفرين ديارا या अल्लाह! एक भी चलता हुआ मत छोड़, अल्लाह ने कहा मेरे नूह! देख ले तेरे कल्मे पर मैंने एक को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ा सब मरे पड़े हैं सब बरबाद हुए पड़े हैं।

......☆......☆......☆......

बुरे फ़ेल का बुरा अन्जाम

हज़रते लूत अलै० की कौम में जब वह बुरा फ़ेल फैला और वह औरतों को छोड़ कर लेवातत का शिकार हुए वह ऐसी बदबख़्त कौम थी जिन्होंने ऐसे काम को शुरू किया जो कभी किसी ने किया ही नहीं था इसलिए जो अज़ाब कौमे लूत पर आया है किसी कौम पर नहीं आया जितने अज़ाब कौमे लूत पर आये किसी कौम पर नहीं आये सबसे पहले अल्लाह جل جلاله ने जिब्रईल अलै० को भेजा कि इन बदबख़्तों को उठाओ, उन्होंने "पर" की नौक पर उठाया और पहले आसमान तक पहुंचाया यहां तक कि फ़रिश्तों ने इस बस्ती के मुर्गों की अज़ानें सुनीं फिर उल्टा के ज़मीन की तरफ़ फेंका, ऊपर से पत्थरों की बारिश से उनके चेहरे मस्ख़ कर दिये और आंखें धंसा दीं आंखें धंस गईं चेहरे मस्ख़, पत्थरों की बारिश ज़मीन को ﴿جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا﴾ ﴿القرآن﴾ ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का हिस्सा ऊपर और फिर अबदुल आबाद के लिए पानी के अज़ाब में मुब्तला कर दिया गया वह बुहैरा मौत जो है सत्तर मील एक झील है जिस में कोई जानदार नहीं रह सकता जो उस में जाता है मर जाता है आज तक वह इस अज़ाब में जल रहे हैं कल्मे की ताक़त ने कौमे लूत की ताक़त को तोड़ के दिखा दिया।

......☆......☆......☆......

नौ शेरवान की हैरानगी

"नौ शेरवान" हैरान है कि यह मेरे बुत कदे की आग कैसे बुझ गई और मेरे महल के चौदह कंगरे कैसे टूट के गिर पड़े उनका एक बड़ा पादरी आया और कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि दरयाए फ़ुरात ख़ुश्क हो गया है और अरब घोड़े ईरानी घोड़ों को भगा के ले जा रहे हैं वह हैरान व परेशान कि यह क्या हुआ उस

ज़माने में एक इसाई आलिम था उसको बुलाया उससे ताबीर ली उस आलिम ने कहा मेरा एक मामू शाम में रहता है उस से जा के पूछता हूं शाम में आकर पूछता है उसने उसके पूछे बग़ैर ही कहा कि मुझे पता है और मैं जानता हूं कि उसने तुझको किस लिए भेजा है उसने तुझे इसलिए भेजा है कि उसके बुत कदे की आग बुझ गई और उसके चौदह कंगरे टूट के गिर गये उसे जा के बता दो कि जब वह नबी ज़ाहिर होगा और लकड़ी को लेकर चलेगा आपकी सुन्नते मुबारका थी कि असा हाथ में रख कर चला करते थे और कुर्आन की तिलावत हर तरफ़ गूंजने लगेगी।

सुन लो मेरे भाइयो! ज़रा ग़ौर से सुन लो कि यह अलामत क्या बता रही है कि किस वक़्त दुनिया में दीन उठेगा जब कुर्आन की तिलावत कसरत से होने लग जाएगी जब कुर्आन की तिलावत कसरत से हागी जिसके हाथ में लाठी होगी तो फिर याद रखना वह शाम भी उसका बन जाएगा वह ईरान भी उसका बन जाएगा फिर आल सासान की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी और कैसर की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी और उस नबी का कल्मा बुलन्द हो के रहेगा।

......☆......☆......☆......

बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया

यमन में एक काहिन कभी बाहर नहीं निकलता था, जिस दिन हुज़ूरे अक्रम स॰ पैदा हुए तो वह काहिन घबरा के बाहर निकला कि ऐ अह्ले यमन! आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया जिस दिन आप स॰ पैदा हुए बड़े बड़े बुतख़ानों के बुतों से आवाज़ आई कि हमारा ज़माना ख़त्म अब नबी का ज़माना शुरू हो गया बुतों के तोड़ने वाले का ज़माना आ गया और आप स॰ के हाथों बुत टूटे

आप बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमा रहे हैं तीन सौ साठ बुत उस वक़्त बैतुल्लाह में थे आप चलते जा रहे हैं और बुत को इशारा करते हैं ﴿جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا﴾(القرآن) और इशारा करते ही बुत टूट के गिरता है बार बार इशारा फ़रमाते हैं और बुत टूट के गिरते हैं तीन सौ साठ बुत जो बैतुल्लाह में रखे थे हाथ के इशारे से हालांकि उस वक़्त कमान हाथ में थी कमान को किसी बुत से लगाया नहीं बल्कि इशारा करते चले जा रहे थे और बुत टूटते चले जा रहे थे कि बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया।

......☆......☆......☆......☆......

यहूदी का चिल्लाना और शोर मचाना

एक यहूदी मक्के की गलियों में शोर मचाता फिरता है आज कोई बच्चा पैदा हुआ है? बताओ कोई बच्चा पैदा हुआ है? किसी ने कहा फ़लां का लड़का पैदा हुआ है, पूछा कि उसका बाप ज़िन्दा है कहा हां कहने लगे नहीं, नहीं कोई ऐसा बच्चा बताओ कि जिसका बाप मरा हुआ हो कहा कि हां अब्दुल मुत्तलिब का पौता पैदा हुआ है कहा हां मुझे दिखाओ जब देखा तो चीख़ निकली, अरे बनू इस्राईल! तेरी हलाकत, आज बनू इस्राईल से नुबूवत निकल गई और ऐ कुरैश की जमाअत! तुम नुबूवत को आज हमसे ले गये एक दिन आयेगा यह एक दिन टक्कर लेगा जिसकी टक्कर की आवाज़ मश्रिक़ और मग़्रिब में सुनाई देगी अभी तो आप स॰ पैदा हो रहे हैं वह अभी शुरू नहीं किया मोजिज़ा दलीले नुबूवत है करामत दलीले विलायत है और दावत मक़्सदे नुबूवत है और इत्तिबाए सुन्नत मक़्सदे विलायत है मक़्सद की ताक़त मोजिज़े की ताक़त से ज़्यादा होती है मक़्सद की ताक़त करामत की ताक़त

से ज़्यादा होती है मोजिज़ा दलालत के तौर पर होता है और मक़सद असल के तौर पर होता है आप जिसको लेकर आये वह मक़सदे दावत था कि मैं दाई हूं شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا मैं दाई हूं दाई दावत नुबूवत, का मक़सद कल्मा की तरफ़ बुलाना, मोजिज़ा दलालते नुबूवत, मोजिज़े में वह ताक़त नहीं जो मक़सद में ताक़त है और आप के मोजिज़े की ताक़त यह है कि उंगली के इशारे से चांद के दो टुक्ड़े हुए जब आप के मोजिज़े की यह ताक़त है कि चांद दो टुक्ड़े हुआ तो आपका जो मक़सद था कल्मे की दावत ज़ब वह मक़सद वजूद में आयेगा तो मेरे भाइयो उसकी ताक़त का कौन अन्दाज़ा कर सकता है।

......☆......☆......☆......

जानवर और इताअते रसूल स॰

एक सहाबी रज़ि॰ बकरी को घसीट कर ज़बह करने ले जा रहे हैं हुज़ूरे अक्रम स॰ ने सहाबी रज़ि॰ से फ़रमाया तू इसको नर्मी से ले जा और बकरी से कहा कि तू अल्लाह के हुक्म पर सब्र कर। तो बकरी ने में–में करना बन्द कर दिया। हिरनी को पता है कि मुझे ज़बह किया जाएगा लेकिन वह नबी की बात पर दौड़ती हुई आ रही है और अपने बच्चे को छोड़ के आ रही है आप स॰ ने उसे बांध दिया और ख़ुद वहीं खड़े हो गये थोड़ी देर हुई तो वह सहाबी रज़ि॰ आ गये जो शिकार कर के लाए थे आपने फ़रमाया भाई! मैं एक सिफ़ारिश करता हूं, मैं एक दरख़्वास्त करता हूं सहाबी रज़ि॰ ने कहा या रसूलल्लाह स॰! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हिरनी को खोला आप स॰ के हवाले किया आप स॰ ने उसकी रस्सी को छोड़ा कि चली जा अपने बच्चों के पास।

......☆......☆......☆......

झाड़ियों की फ़रमांबरदारी

एक मरतबा आप जंगल में तशरीफ़ ले जा रहे हैं फ़ारिग़ होने के लिए छोटी छोटी झाड़ियां थीं जिसके पीछे पर्दा नहीं होता था। आप स॰ ने हज़रत जाबिर रज़ि॰ से फ़रमाया ऐ जाबिर रज़ि॰! जाओ उन झाड़ियों से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि मेरे लिए आपस में जुड़ जाओ। हज़रत जाबिर रज़ि॰ झाड़ियों के पास जा रहे हैं और उनसे कह रहे हैं कि अल्लाह का रसूल फ़रमा रहा है कि मेरे लिए आपस में जमा हो जाओ झाड़ियां भागती हुई आईं और आपस में जुड़ गईं अब पर्दा हो गया, आप फ़ारिग़ हुए खड़े हुए झाड़ियां फिर चलते चलते अपनी जगह पर जा के खड़ी हो गईं।

......☆......☆......☆......

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि॰ की साबित क़दमी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि॰ को क़ैद किया गया और उन्हें डराया गया कि ईसाई हो जा फिर लालच दिया गया कि ईसाई हो जा कहा नहीं होता फिर सबसे ख़तरनाक हर्बा आज़माया यह नौजवान बड़े मज़ाक़िया सहाबा रज़ि॰ में से थे यह सहाबी रज़ि॰ ऐसे थे कि हुज़ूरे अक्रम स॰ को भी हंसाते हंसाते कहीं ले जाते थे इतने हंसाया करते थे और उनको सहाबा रज़ि॰ गधा कहा करते थे (अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि॰ हमाद) एक दफ़ा किसी ने आकर शिकायत की या रसूलुल्लाह! यह अब्दुल्लाह रज़ि॰ बहुत मज़ाक करते हैं आप स॰ ने फ़रमाया अरे उसे कुछ न कहा करो यह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है अब ईसाइयों ने आप पर आख़िरी हर्बा आज़माया कि एक ख़ूबसूरत लड़की उसके साथ कमरे में बन्द कर दी, शराब और सुअर का गोश्त साथ रख

दिया और उस लड़की से कहा कि उससे ज़िना करवाओ जिस तरह भी हो, जब मुसलमान औरत के चक्कर में फंसेगा तो यह ईमान भी बेचेगा और सब कुछ बेचेगा तीन दिन और तीन रातें वह लड़की सारा ज़ोर लगाती है कि किसी तरह यह मेरी तरफ़ तो देखेगा तब ज़िना की ख़्वाहिश पैदा होगी और जब देखेगा ही नहीं और आंख को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल करेगा अब यह कुर्आन उस सहाबी रज़ि० के अन्दर ज़िन्दा है उन्होंने हमारी तरह तफ़सीरें नहीं पढ़ी थीं और न उस ज़माने में तफ़सीरें लिखी गई थी वह तफ़सीरें नहीं जानते थे बल्कि वह कुर्आन जानते थे वह आसार रु रमूज़ नहीं जानते थे बल्कि वह कुर्आन जानते थे वह बड़े बड़े लम्बे चौड़े मसाएल पर बातें नहीं किया करते थे वह कहते थे हमारे नबी ने यूं कहा हम भी ऐसे करते हैं हमें और कोई पता नहीं इस मौक़े पर हमारे नबी ने कहा कि आंख को झुकाओ अब हज़रत अब्दुल्लाह की आंख का पर्दा झुका हुआ है यह नबी का गुलाम है आज बाज़ार में पता लगेगा कि गुलामी कितने लोगों को हासिल है जब तुम बाज़ार में चलोगे फिर तुम्हें पता चलेगा कि तेरे अन्दर नबी की कितनी गुलामी है वह तो अकेला है लड़की ख़ूबसूरत है लेकिन उसके सामने दो आयतें आ रही हैं قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ ﴿القرآن﴾ मुसलमानों से कह दो कि आंखों को झुकाएं अब यह आयत अब्दुल्लाह ने पढ़ी हुई नहीं थी और दूसरी आयत उनके सामने यह आ रही थी:

وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿القرآن﴾

हज़रत यूसुफ़ अलै० का क़िस्सा सामने आ रहा है एक तरफ़ अल्लाह का अम्र है कि आंखों को झुकाओ और नबी का तरीक़ा मालूम है कि इस मौक़े पर नबी ने क्या किया है आंख को झुकाने

का हुक्म दिया है और इधर हज़रते यूसुफ़ का क़िस्सा याद आ रहा है कि अल्लाह ने यह क़िस्सा क़िस्सा ख़्वानी के लिए नहीं सुनाया अल्लाह ने यह क़िस्सा इसलिए सुनाया है कि ऐ मोमिन! तेरी आंख ऐसे झुके जैसे यूसुफ़ ने अपने दामन को बचाया है غلقت الابواب दरवाज़े बन्द और मुज़य्यन وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ और दावत दे रही है कि आओ मेरी तरफ़ और सब के सब दरवाज़े बन्द हैं और यूसुफ़ अलै० अपने रब को याद कर के कहते हैं अर्ज़ करते हैं मैं अपने रब की पनाह चाहता हूं मैं यह काम नहीं कर सकता अब यह क़ुर्आन भी हम पढ़ते हैं कि हम बस तफ़सीरें पढ़ते हैं वह (सहाबी) क़ुर्आन अन्दर में लेते थे क़ुर्आन कहीं लिखा हुआ नहीं था पूरे मुल्क में एक नुस्ख़ा होता था लेकिन अन्दर में हर एक के था हक़ीक़त में सहाबा मुहम्मदी थे उनके अन्दर नुबूवत की गुलामी थी तीन दिन तक लड़की ज़ोर लगाती रही कि अब्दुल्लाह रज़ि० की आंख तो उठ जाए अब्दुल्लाह रज़ि० को क्या चीज़ रोक रही है यह वह आमाल हैं जो अल्लाह की रहमत को उतारते हैं हमारे मसले इन आमाल से हल होंगे हमारे मसले दुनिया के उन सबसे हल नहीं होंगे। आख़िर में वह ईसाई सरदार ने उस लड़की से अलैहदगी में कहा तूने उसको गुनाह पर आमादा क्यों न किया तो वह कहने लगी उसने आंख उठा कर मुझे देखा ही नहीं तो मैं उसे कैसे गुनाह पर आमादा करती।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बिन हुज़ाफ़ा रज़ि० पर तीन दिन लड़की ने ज़ोर लगाया कि किसी तरह तो यह मेरी तरफ़ देखे तो सही तीन दिन के बाद बादशाह के पास गई और कहने लगी कि अरे बादशाह! तुमने मुझे किस के पास भेजा था पता नहीं कि वह पत्थर था या लोहा था न उसने मुझे देखा न उसने खाया न पिया तो मैं उसे कहां गुम्राह करती क़ैसर ने बुलाया और हुक्म दिया कि

उसे खौलते हुए पानी में डाल दो कढ़ावा आग पर चढ़ाया और उसमें तेल डाला कहने लगे कि जब यह खौलने लगे तो उसके दो साथी उसमें डालो अगर यह फिर भी ईसाई न हो तो उसको भी डाल दो जब दो साथियों को डाला गया और वह जल भुन गये जब उनको डाला जाने लगा तो यह रोने लगे तो उन्होंने कहा कि यह कौन रो रहा है? उनको वापस लाओ कहा क्यों रो रहे हो? तो फ़रमाया कि मैं न मौत के ख़ौफ से और न ज़िन्दगी के शौक़ में रो रहा हूं, फिर क्यों रो रहे हो? फ़रमाया रोया इसलिए हूं कि मेरी सिर्फ़ एक जान है अब ख़त्म हो जाएगी मैं चाहता हूं कि मेरे जिस्म पर जितने बाल हैं उतनी मेरी जानें होतीं वह एक एक दीन के लिए कुर्बान हो जातीं अब हमारे जज़्बे हैं बाप चाहता है मेरा बेटा बड़ा आदमी बने बड़ा डॉक्टर बने बेशक बने लेकिन अगर वह मुहम्मदी नहीं बना तो वह बरबाद है हलाक है हम चाहते हैं कि मुहम्मदी बन जाए।

......☆......☆......☆......

हज़रत अली रज़ि॰ चार दिन से भूके हैं

हज़रत अली रज़ि॰ से बढ़ कर कौन कमाई कर सकता था ख़ैबर के दरवाज़े को अकेले पकड़ कर उठा कर फेंक दिया अली रज़ि॰ ऐसे ताक़तवर थे कि ख़ैबर के दरवाज़े को जिसे चालिस आदमी खोलते थे उसे पकड़ा और उठा के फेंक दिया वह कमाई नहीं कर सकते थे? दो बेटों को रोटी नहीं खिला सकते थे। वह किस बात पर कुर्बान हो रहे हैं हमारे लिए कुर्बान हो रहे हैं कि हम ने कल्मे को सारे इन्सानों तक पहुंचाना है चार दिन की भूक बर्दाश्त कर लो कोई बात नहीं हज़रत अली रज़ि॰ सर्दी में बाहर फिर रहे हैं परेशान हैं इतने में हुज़ूरे अक्रम स॰ भी बाहर निकले आपने फ़रमाया कि ऐ अली रज़ि॰ इस सर्दी में क्या कर रहे हो?

अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स.! मैं क्या करूं, भूक इतनी सख़्त लगी हुई है कि घर में बैठा नहीं जा सकता और ऊपर से सर्दी और भूक सर्दी में भूक और भी ज़्यादा लगती है आपने फ़रममाया अली रज़ि.! मैं भी भूका हूं मुझे भी भूक ने घर से निकाला है आगे चले तो कुछ सहाबा रज़ि. बैठे थे आपने पूछा यहां क्या कर रहे हो? कहा या रसूलुल्लाह स.! भूक की शिद्दत ने घर से निकाल दिया है फ़रमाया अच्छा भाई! अब तो कुछ करना पड़ेगा एक खुजूर का दरख़्त सामने खड़ा है सर्दी का ज़माना है सर्दी में खुजूरें कहां से आती हैं आपने फ़रमाया ऐ अली रज़ि.! जाओ उस खुजूर से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खुजूर खिलाओ। हज़रत अली रज़ि. दौड़े दौड़े गये खुजूर के दरख़्त से खुजूर गिराने को कहा तो खुजूर के पत्तों में से ताज़ा ताज़ा खुजूरें गिरने लगीं हम से तो खुजूरें ही अच्छी थीं कि अल्लाह के रसूल स. की बात को मानती थीं हज़रत अली रज़ि. की झोली भर गई आप उठा के लाए कि भाई खाओ, सबको खिलाया खुद भी खाया उनको भी खिलाया पेट भर गया कुछ बच गईं फ़रमाया जाओ यह फ़ातमा रज़ि. को भी दे के आओ वह भी कई दिनों से भूकी है भूक पर उम्मत को उठाया।

हज़रत अली रज़ि. यहूदी के सीने पर

अल्लाहु अकबर अन्दाज़ा लगाइये कि हज़रत अली रज़ि. यहूदी के सीने पर चढ़े हुए हैं और उसे क़त्ल करना चाहते हैं ,और वह मुंह पर थूकता है छोड़ के पीछे हट जाते हैं कहा कि दोबारा आओ यहूदी हैरान अरे क्यों! कहा कि पहले तुझे मैं अल्लाह और रसूल की वजह से क़त्ल कर रहा था जब तूने मेरे मुंह पर थूका तो मेरे नफ़्स का गुस्सा शामिल हो गया अब अल्लाह और रसूल

की रज़ा नहीं थी अब अपने नफ़्स का गुस्सा था दोबारा आओ लेकिन यहूदी ने कल्मा पढ़ लिया और आज तो मुसलमान मुसलमान को क़त्ल कर रहा है किस पर? कि उसने मुझे गाली दे दी तो इन आमाल के साथ उम्मत कहां से वजूद पकड़ेगी इस किस्से को सुन कर या पढ़ कर मैं हैरान हो जाता हूं कि इतना तअल्लुक़ रसूल से कि थूका मुंह पर छोड़ के खड़े हो गये अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करूंगा पहले मैं अल्लाह और उसके रसूल स॰ की वहज से कर रहा था अब मैं अपनी वजह से करूंगा।

......☆......☆......☆......

नबी स॰ की हिच्कियां बंध गई

हम्ज़ा रज़ि॰ आगे कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और यह हज़रात हुज़ूरे अक्रम स॰ के साथ थे हज़रत तल्हा रज़ि॰ और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ आगे थे, वह्शी की ज़द में आ गये दोनों हाथों में तलवार ले कर चल रहे थे कि वह्शी ने पत्थर के पीछे से बैठ कर जो निशाना मारा और आपके पेट में बरछा लगा आंतें और जिगर कटा आप गिरे। और हज़रत तल्हा रज़ि॰ उसकी तरफ़ को बढ़े हम्ज़ा रज़ि॰ वह्शी की तरफ़ गिरते गिरते बढ़े तो वह्शी कहने लगा कि मैं भागा कि कहीं मेरे ऊपर कोई हमला न हो लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ को उल्टी आई और जान निकल गई जब शोहदा की तलाश हुई आपने फ़रमाया चचा कहां हैं? हम्ज़ा कहां हैं? देखा ज़िन्दों में तो नहीं, ज़ख़्मियों में भी नहीं मेरा चचा मेरा चचा किसी ने कहा वह तो शहीद हो गये जब हुज़ूरे अक्रम स॰ तशरीफ़ लाए और अपने चचा की लाश को देखा कि नाक कटा हुआ......कान कटे हुए......सीना फटा हुआ......कलेजा निकला हुआ......आंतें फटी हुई ......तो आप इतने रोए इतने रोए कि आपकी हिच्कियां बंध गई।

हुज़ूरे अक्रम स॰ के रोने पर सहाबा रज़ि॰ भी रोने लग गये, सब रो रहे थे आप इतने ज़ोर से रो रहे थे यहां तक कि हज़रत जिब्राईल अलै॰ आसमान से आये और आ के यूं अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स॰! अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि मेरे हबीब ग़म न करो हमने आपके चचा को अपने अर्श पर लिखा है, اَسَدُ اللّٰهِ وَاَسَدُ رَسُوْلِهٖ حَمْزَةُ अल्लाह और उसके रसूल के शेर हैं वह्शी से कितना दुख उठाया होगा। सत्तर दफ़ा हम्ज़ा रज़ि॰ पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, जब मक्का फ़तेह हुआ तो वह्शी के क़त्ल का हुक्म दिया कि जो वह्शी को पाले क़त्ल करे, लेकिन जब मदीना मुनव्वरा में आये तो वह्शी पर भी तरस आया कि क़त्ल हुआ तो दोज़ख़ में चला जाएगा वह्शी ताएफ़ चला गया वह्शी के पास खुसूसी तौर पर एक आदमी भेजा कि वह्शी अल्लाह का रसूल कहता है कि कल्मा पढ़ ले मुसलमान हो जा जन्नत में चला जाएगा यह अख़्लाक़े नुबूवत थे वह्शी कहने लगा मैं कल्मा पढ़ के क्या करूंगा? मैंने तो वह सारे काम किये हैं जिस पर तुम्हारे रब ने दोज़ख़ का कहा, क़त्ल, ज़िना, शिर्क, शराब, मैं क्या करूंगा उसने आकर जवाब दे दिया आपने उसको दोबारा भेजा फिर दोबारा भेजा, किसके पास चचा के क़ातिल के पास।

......☆......☆......☆......

कुतेला अदुव्वुल्लाह

ख़न्दक़ का मौक़ा ख़ौफ़ सर्दी, भूक और इधर अम्र जो कि काफ़िरों के पहलवान थे छलांग लगाते हुए मदीना मुनव्वरा आए और आवाज़ लगाई कि है कोई मेरे मुक़ाबले के लिए। हज़रत अली रज़ि॰ खड़े हुए या रसूलल्लाह! मैं तय्यार हूं हुज़ूरे अक्रम स॰ ने फ़रमाया अरे! बैठ जा यह अम्र है अम्र जो एक हज़ार के बराबर

शुमार किया जाता है हज़रत अली रज़ि॰ बैठ गये वह फिर कहने लगे, है कोई मुक़ाबले में, हज़रत अली रज़ि॰ फिर खड़े हुए, हज़रत अली रज़ि॰ की उम्र चौबिस साल थी और वह अम्र लड़ाइयों में फिरता फिराता, आपने फ़रमाया कि बैठ जा यह अम्र है। फिर तीसरी मरतबा कहने लगा कोई है, हज़रत अली रज़ि॰ ने कहा मैं हूं आपने फ़रमाया बैठो, आपने अर्ज़ किया नहीं या रसूलुल्लाह! मुझे जाने दीजिए चाहे अम्र ही है क्या हुआ जान जाएगी तो आपके नाम पर तो जाएगी हज़रत अली रज़ि॰ ने कहा कि अम्र ने पूछा कौन हो? कहा अली रज़ि॰ अब्दे मनाफ़ का नहीं बिन अबी तालिब कहा भतीजा तो कहा हां अली रज़ि॰ ने कहा कि अम्र मैंने सुना है कि तुझे दो बातों की दावत दी जाए तो उस में से एक ज़रूर कुबूल करता है कहने लगा हां फ़रमाया मैं तुम्हें यह दावत देता हूं कि अल्लाह व रसूल स॰ के साथ हो जा, नहीं नहीं यहां यह देखा जाएगा कि अल्लाह व रसूल स॰ किसके साथ है उसके साथ हो जा मुक़ाबले में चाहे बाप हो चाहे बेटा बिरादरी है चाहे जमाअत है चाहे तिजारत है चाहे बीवी है मैं तो अल्लाह और उसके रसूल का गुलाम हूं उसने घोड़े से छलांग लगाई ऐसे गुस्से में जैसे आग का शोला होता है और जो ज़ोर से हमला आवर हुआ मिट्टी का गुबार उठा और दोनों छिप गये सारे सहाबा रज़ि॰ फ़िक्र ऐसे वक़्त में हुज़ूरे अक्रम स॰ भी दुआ में लग गये या अल्लाह! मदद फ़रमा इतने में हज़रत अली रज़ि॰ की तक्बीर की आवाज़ सुनाई दी قُتِلَ عَدُوُّ اللّٰه अल्लाह का दुश्मन क़त्ल हो गया हज़रत अली रज़ि॰ की जो तलवार लगी तो अम्र के दो टुकड़े हो गये हज़रत अली रज़ि॰ ने खड़े खड़े शेअर पढ़े जिसका तर्जुमा यह है:

1...... कि ऐ कुफ़्फ़ार की जमाअत पीछे हट जाओ तुम्हें पता चल

गया है कि अल्लाह अपने रसूल स. को और उसके मानने वालों को अकेला नहीं छोड़े हुए है।

2...... वरना मेरे जैसा अम्र को क़त्ल नहीं कर सकता था। अल्लाह हमारे साथ हैं जिसने उसको क़त्ल कर के दिखा दिया कि मेरी ताक़त तुम्हारे साथ है।

......☆......☆......☆......

यहूदी के हज़रत बायज़ीद बिस्तामी रह. से 26 सवालात

यहूदी का बहुत बड़ा मज्मा और उनका एक आलिम उन में तक़रीर कर रहा है हज़रत बायज़ीद बिस्तामी जाकर रह. उस मज्मे में बैठ गये उनके बैठते ही उनके आलिम की ज़ुबान बन्द हो गई मज्मे में शोर हुआ कि हज़रत बोलते क्यों नहीं? आलिम ने कहा دَخَلَ فِيْنَا مُحَمَّدِىٌ कोई मुहम्मदी हमारे मज्मे के अन्दर आ गया है जिसकी वजह से मेरी ज़ुबान बन्द हो गई دَخَلَ فِيْنَا مُحَمَّدِىٌ हम में कोई मुहम्मदी आ गया है, ज़ुबान बन्द। उन्होंने कहा उसे खड़ा करो क़त्ल करेंगे, कहा नहीं भाई! जो मुहम्मदी हो खड़ा हो जाए हज़रत बायज़ीद बिस्तामी रह. खड़े हो गये यहूदी आलिम ने कहा मैं सवाल करूंगा तू जवाब देगा बायज़ीद रह. ने कहा कि दूंगा हज़रत बायज़ीद रह. ने फ़रमाया कि मैं एक सवाल करूंगा तो जवाब देगा, कहा दूंगा यहूदी आलिम ने सवालात शुरू कर दिये पहला सवाल किया।

(1) एक बताओ जिसका दूसरा नहीं। फ़रमाया। अल्लाह एक है उसके साथ दूसरा नहीं।

(2) कहा दो बताओ जिसका तीसरा न हो। फ़रमाया اليل والنهار दिन और रात उसका तीसरा नहीं

(3) कहा: तीन बताओ जिसका चौथा न हो। फ़रमाया लौह व

क़लम व कुर्सी यह तीन हैं इसका चौथा नहीं

(4) कहा: चार बताओ जिसका पांचवा न हो। फ़रमाया। तौरात, ज़बूर, इन्जील और कुर्आन यह चार हैं इसका पांचवा नहीं।

(5) कहा: कि पांच बताओ जिसका छटा नहीं। फ़रमाया। अल्लाह ने अपने बन्दों पर पांच नमाज़ें फर्ज़ की हैं। छः नहीं।

(6) कहा कि छः बताओ जिसका सातवां नहीं फ़रमाया:

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ﴿القرآن﴾

छः दिन में ज़मीन व आसमान बनाए हैं सात नहीं

(7) कहा: कि सात बताओ जिसका आठवां नहीं। फ़रमाया:

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿القرآن﴾

मेरा रब कहता है कि मैंने सात आसमान बनाए हैं इसलिए आसमान सात हैं उसका आठवां नहीं

(8) कहा: आठ बताओ जिसका नौवां न हो। फ़रमाया:

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ﴿القرآن﴾

मेरे रब के अर्श को आठ फ़रिश्तों ने पकड़ा हुआ है नौ ने नहीं।

(9) कहा: वह नौ बताओ जिसका दसवां नहीं। फ़रमाया:

فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ ﴿القرآن﴾

हज़रत सालेह अलै० की क़ौम में नौ बड़े बड़े बदमाश थे। दसवां नहीं था अल्लाह ने नौ कहा है

(10) कहा: वह दस बताओ जिसका ग्यारहवां नहीं। फ़रमाया: हज में कोई ग़लती हो जाए तो अल्लाह ने हम पर सात रोज़े वहां रखने और तीन घर पर रखने को फ़रमाया है। تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ﴿القرآن﴾ यह दस हैं ग्यारह नहीं

(11) कहा: वह ग्यारह बताओ जिसका बारह नहीं। फ़रमाया हज़रत

यूसुफ़ के ग्यारह भाई थे बारह नहीं थे।

(12) कहाः वह बारह बताओ जिसका तेरह नहीं। फ़रमाया। साल में अल्लाह ने बारह महीने बनाए हैं तेरह नहीं

(13) कहाः वह तेरह बताओ जिसका चौदह नहीं। फ़रमायाः

رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سٰجِدِينَ ﴿القرآن﴾

हज़रत यूसुफ़ अलै॰ ने अपने बाप से कहा कि मैंने ग्यारह सितारे देखे एक सूरज देखा एक चांद देखा जो मुझे सज्दा कर कर रहे हैं यह तेरह हैं चौदह नहीं।

(14) कहाः कि बताओ वह क्या चीज़ है जिसको खुद अल्लाह ने पैदा किया फिर उसके बारे में ख़ुद ही सवाल किया फ़रमाया हज़रत मूसा अलै॰ का डंडा। अल्लाह की पैदाइश......अल्लाह की पैदावार लेकिन खुद सवाल किया ऐ मूसा! وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى ﴿القرآن﴾ तेरे हाथ में क्या है।

(15) कहाः कि बताओ सबसे बेहतरीन सवारी। फ़रमाया, घोड़ा

(16) कहाः कि बताओ सबसे बेहतरीन दिन। फ़रमाया जुमा का दिन

(17) कहाः कि बताओ सबसे बेहतरीन रात। फ़रमाया लैलतुल क़द्र

(18) कहाः कि बताओ सबसे बेहतरीन महीना, फ़रमाया। माह रमज़ानुल मुबारक

(19) कहाः कि बताओ वह कौनसी चीज़ है जिसको अल्लाह ने पैदा कर के उसकी अज़्मत का इक़रार किया फ़रमाया। अल्लाह ने औरत को मक्कार बनाया और उसके मकर का इक़रार किया إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿القرآن﴾ औरत को मकर बड़ा ज़बरदस्त है हुज़ूरे अक्रम स॰ ने फ़रमाया कि मैंने नहीं देखा कि बड़े बड़े अक़्लमन्द के क़दम उखाड़ने वाली हो। और कोई चीज़ नहीं है सिवाए औरत के

बड़ों बड़ों के अक़्ल पर पर्दा डाल देती है।

(20) कहा बताओ वह कौनसी चीज़ है जो बेजान मगर सांस लेती है? وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ फ़रमाया मेरा रब कहता है कि मुझे सुबह की कसम जब वह सांस लेती है

(21) कहा बताओ वह कौनसी चौदह चीज़ें हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने इताअत का हुक्म दे दिया और उनसे बात की। फ़रमाया सात ज़मीं सात आसमानः

ثُمَّ اسْتَوٰىٓ اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا. اَوْ كَرْهًا قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿القرآن﴾

अल्लाह ने सात ज़मीनें सात आसमान बनाए और उन चौदह को ख़िताब फ़रमाया कि मेरे सामने झुक जाओ तो उन चौदह के चौदह ने कहा कि या अल्लाह! हम आपके सामने झुक रहे हैं।

(22) कहाः बताओ वह कौनसी चीज़ है जिसे अल्लाह ने ख़ुद पैदा किया फिर अल्लाह ने उसे ख़रीद लिया? फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुसलमानों को पैदा किया है और उनको ख़ुद ख़रीद लिया जन्नत के बदले में।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ﴿القرآن﴾

अरे मुसलमान अल्लाह की क़सम न तू बीवी का है न तू बच्चों का है न तू तिजारत का है न तू सदारत का है न तू हुकूमत का है न तू किसी जमाअत का है तू अल्लाह और उसके रसूल का है अगर तू अल्लाह और रसूल का बनके चलेगा तो यह सारा नक़्शा तेरे ताबे हो के चलेगा और अगर अल्लाह व रसूल से टकराएगा तो अल्लाह ज़लील व ख़्वार करके छोड़ेगा।

(23) कहाः बताओ वह कौनसी बेजान चीज़ है जिसने बेजान हो

कर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया? फ़रमाया हज़रत नूह अलै० की कश्ती पानी पर चली और चलते चलते जब बैतुल्लाह पर आई और बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए।

(24) कहा: बताओ वह कौनसी क़ब्र है जो अपने मुर्दे को लेकर चली? फ़रमाया हज़रत यूनुस अलै० की मछली जो अपने अन्दर में हज़रत यूनुस अलै० को बिठा कर चालिस दिन तक फिरती रही और वह क़ब्र की तरह थी क़ब्र की तरह चल रही थी और क़ब्र है चल रही थी लेकिन अल्लाह की कुदरत क़ाहिरा ग़ालिबा हज़रत यूनुस अलै० को मछली के पेट में बिठा कर न मरने दिया न भूका रखा, न प्यासा रखा न बीमार किया न परेशान किया, बल्कि मछली को शीशे की तरह कर दिया, हज़रत यूनुस अलै० मछली के पेट में बैठ कर सारे दरया का तमाशा देखते अन्दर से बाहर का मन्ज़र देखते मछली का एक ही मेदा और उसमें ग़िज़ा भी आ रही है लेकिन हज़रत यूनुस अलै० अमानत हैं आराम से बैठे है मेदे की हरकत हज़रत यूनुस अलै० को तक्लीफ़ नहीं दे रही लेकिन मछली की ग़िज़ा भी खाई जा रही है हज़रत यूनुस अलै० अमानत बनके बैठे हुए हैं।

(25) कहा: कि बताओ वह कौनसी क़ौम है जिसने झूट बोला फिर भी जन्नत में जाएगी? फ़रमाया:

وَجَآءُ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا

﴿القرآن﴾

हज़रत यूसुफ़ अलै० के भाई शाम को आये और बकरी का ख़ून कुर्ते के ऊपर मल कर आये और झूट बोला कि हज़रत यूसुफ़ अलै० को भेड़िया उठा के ले गया लेकिन हज़रत याक़ूब अलै० के इस्तिग़फ़ार पर और उनकी तौबा करने पर अल्लाह उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाऐंगे।

(26) कहा: कि बताओ वह कौनसी क़ौम है जो सच बोलेगी फिर भी जहन्नम में जाएगी। फ़रमाया यहूदी और ईसाई एक बोल में सच हैं यहूदी कहते हैं ईसाई बातिल पर हैं और ईसाई कहते हैं कि यहूदी बातिल पर हैं इस बोल में दोनों सच्चे हैं।

قَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ﴿القرآن﴾

दोनों सच्चे है इस बोल में लेकिन दोनों जहन्नम में जाएंगे तो और भी बहुत सवालात हैं लेकिन वक़्त बहुत हो गया है इसलिए बाक़ी को छोड़ रहा हूं।

......☆......☆......☆......

हज़रत बायज़ीद रह॰ का सवाल

अब हज़रत बायज़ीद रह॰ ने फ़रमाया कि अब मेरा भी एक सवाल है मैं सिर्फ़ एक सवाल करूंगा जवाब दोगे, कहा दूंगा। फ़रमाया बता दे जन्नत की चाबी यहूदी आलिम ख़ामोश हो गये तो नीचे मज्मे से लोगों ने कहा कि बोलते क्यों नहीं? तुमने सवालों की बौछार कर दी और वह हर एक का जवाब देता रहा और आप एक का भी जवाब नहीं दे रहे कहने लगा जवाब मुझे आता है मगर तुम मानोगे नहीं यही आज हम कहते हैं कि जनाब मुझे सारा पता है पता है तो मानते क्यों नहीं? कहते हैं क्या करें मजबूर हैं इसी मजबूरी को तोड़ने के लिए कहते हैं कि अल्लाह के रास्ते में निकला जाए यहूदी आलिम ने कहा जवाब तो मुझे आता है तुम मानोगे नहीं, कहने लगे अगर तू कहेगा तो हम मानेंगे कि जन्नत की चाबी तो मुहम्मद रसूल स॰ है हुज़ूरे अक्रम स॰ ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत की चाबी मेरे हाथ में है और जन्नत का झंडा मेरे हाथ में है सारी दुनिया के इंसान मेरे झंडे के नीचे जन्नत में जाऐंगे कोई मेरे झंडे से निकल नहीं सकता जन्नत का दरवाज़ा

बन्द और चाबी आपके हाथ में कोई जा नहीं सकता जन्नत वाले जन्नत के दरवाज़े पर पहुंच चुके हैं

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّى إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا ﴿القرآن﴾

आए है दरवाज़े पर खड़े है दरवाज़ा बन्द है हज़रत आदम अलै॰ के पास आते हैं ऐ हमारे बाप! जद तू ही हमारा अव्वल तू ही हमारा सबसे बड़ा तू ही जन्नत का दरवाज़ा खुलवा। वह इरशाद फ़रमाऐंगे अरे मैंने ही तो तुम्हें जन्नत से निकलवाया था मैं तुम्हें कहां से दाख़िल कराऊं यह मेरे बस की बात नहीं है हज़रत नूह अलै॰ के पास आयेंगे आप जद सानी है आप दरवाज़ा खुलवाइये वह कहेंगे कि मैं नहीं खुलवा सकता आज मेरे बस की बात नहीं है हज़रत मूसा अलै॰ के पास आयेंगे फिर हज़रत ईसा अलै॰ के पास आयेंगे हज़रत ईसा अलै॰ इरशाद फ़रमाऐंगे कि मेरे बस की बात नहीं है जाओ नबी अरबी स॰ के पास जाओ जिसके हाथ में जन्नत की चाबी है और जिसकी इत्तिबा में दुनिया की कामयाबी है इतना भी आज ईमान नहीं है कि अपनी दुकान के हराम को निकाल सकते तो यह इस्लाम कहां से ज़िन्दा करेगा जब इतना ईमान नहीं है कि एक सुन्नत को सजा सके तो यह दुनिया में दीन कैसे ज़िन्दा करेगा उसकी नमाज़ें उसको क्या नफ़ा देंगी दिल हज़रत मुहम्मद स॰ वाला नहीं है माफ़ करना दिल मेरा भी और आपका भी वही क़ारून वाला है कि माल हुआ और माल हो पैसा हुआ और पैसा हो दरवाज़ा बन्द है आज कोई खुलवा के तो दिखाए।

जापानी कुत्ता

हम जानवर से इब्रत हासिल कर लें, जापान में एक प्रोफ़ेसर था जब वह युनिवर्सिटी पढ़ाने जाता तो इस्टेशन तक अपने कुत्ते

को साथ लेकर जाता वह कुत्ता प्रोफ़ेसर को रवाना कर के फिर घर आ जाता दोपहर को तीन बजे मालिक को लेने के लिए वह कुत्ता युनिवर्सिटी जाता तो एक दफ़ा प्रोफ़ेसर को युनिवर्सिटी ही में हार्ट अटैक हुआ वहां से उसको अस्पताल ले जाया गया वहां पर मर गया लेकिन कुत्ता अपने टाइम पर तीन बजे मालिक को लेने गया अब मालिक आया नहीं तो इन्तिज़ार करके शाम को वापस चला गया अगले दिन ठीक तीन बजे वहां जाके बैठ गया वह शाम को वापस चला गया नौ साल तक वह कुत्ता मुसलसल वहां पर आता रहा और उसी जगह वह कुत्ता बैठे बैठे मर गया और अभी भी उसकी जगह उस कुत्ते का एक बुत बना खड़ा है यह तो एक कुत्ते की वफ़ा है हम तो इंसान हैं। अल्लाह तआला ने सूरह अलआदियात में बड़ा गिला किया है:

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا فَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا فَأَثَرْنَ بِهِ
نَقْعًا فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ

कसम है तेज़ी से दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम है उनकी जो पत्थरों पर पांव रखते हैं तो आग निकलती है (अरब जब घोड़े दौड़ाते थे तो उनके पैर पत्थरों पर पड़ते तो आग निकलती थी) और क़सम है उन घोडों की जो गुबार उड़ाते हैं जो सुबह के वक़्त हमलाआवर होते हैं और दुश्मन के अन्दर घुस जाने वाले घोड़ों की अल्लाह पाक क़समें खा रहे हैं और आगे मज़मून यह है की ऐ इंसान! तू बड़ा नाशुक्रा है इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इन आयात में जोड़ यह है ऐ मेरे बन्दे! मैंने घोड़े को पैदा किया? घोड़े का वजूद बनाया और फिर तेरी मिल्क में दिया उसके अन्दर मैंने रखी मालिक से वफ़ा, वफ़ा मालिक ने रखी है तूने क्या किया? एक वक़्त में पानी पिलाया और दो वक़्त चारा खिलाया,

कभी सूखा खिलाया कभी तर खिलाया लेकिन तेरे दो वक़्त के खाने की उसने वह वफ़ा की है तू उस पर सवार होता है तो वह दौड़ता है तू हमला करता है वह आगे चलता है तू दुश्मन के दरमियान उतरता है तो वह दरमियान में कूदता है सारा दिन लड़ता है तू पीछे मुंह नहीं मोड़ता आगे सुबह फिर हमला करता है तो तेरा घोड़ा यह नहीं कहता कि मैं थका हुआ हूं, मैं नहीं जानता वह फिर तेरे साथ चलता है सबअ मुअल्लिक़ात (यह दर्स निज़ामी की किताब का नाम) का शायर अपने घोड़े की तारीफ़ करता है।

يَدْعُوْنَ عَنْتَرَ وَالرِّمَاحُ كَأَنَّهَا

أَشْطَانُ بِئْرٍ فِيْ لَبَانِ الْأَدْهَمِ

सबअ मुअल्लिक़ात शेअर की मशहूर किताब है वह अपने घोड़े की तारीफ़ करता है कि मैं जब अपने घोड़े लेकर हमलाआवर होता हूं तो इतने बड़े बड़े नेज़े उस घोड़े के सीने में लग रहे होते हैं जैसे कुवें के डोल में जो रस्सी लगती है यह बात पूरी समझ में उस वक़्त आती है जबकि अरब का नक़्शा सामने हो, अरब में पानी बहुत नीचे होता है तो उसके लिए बहुत लम्बी सी रस्सी होती थी तो लम्बी रस्सी डोल से बांध कर पानी निकालते थे नेज़ा जितना लम्बा होता है उतना ज़ोर से अन्दर उतरता है बड़ी ताक़त से अन्दर जाता है तो वह कहता है जब मैं घोड़े को लेकर हमला करता हूं तो कुवें की रस्सी की तरह लम्बे नेज़े उसके सीने पर लगते हैं तो वह घोड़ा कभी नहीं कहता कि मालिक मैं ज़ख़्मी हो गया हूं पीछे हटता हूं उसका यह हाल होता है कि वह ऊन की शलवार पहन लेता है मेरी नाफ़रमानी नहीं करता अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे! घोड़ा तेरा इतना वफ़ादार है तू फिर भी मेरा वफ़ादार क्यों नहीं बनता, मैंने तुझे कहां से कहां पहुंचाया, कितनी काएनात की मशीनों को तेरी ख़िदमत पर लगाया हुआ है

तो क्या मेरा हक़ नहीं कि तू मेरी मान के चले।

......☆......☆......☆......

एक सहाबी का वाक़िआ

एक सहाबी आये फ़रमाया या रसूलुल्लाह स॰ أُرِيْدُ اَنْ يُوْسِعَ فِىْ رِزْقِى मैं चाहता हूं कि मेरा रिज़्क बढ़ जाए हम सारे कहते हैं कि बढ़ जाए फ़रमाया اَدِمْ عَلَى الطَّهَارَةِ يُوْسِعْ عَلَيْكَ رِزْقَكَ तू बावजू रहा कर अल्लाह तेरा रिज़्क बढ़ा देगा कितना मुश्किल है कितना ज़ोर लगता है बावजू रहने में यह ख़बर है नबी की यह किसी अल्ख़ामिस पढ़े की ख़बर नहीं है किसी कार्मस पढ़े की ख़बर नहीं है यह हबीबे मुस्तफ़ा स॰ की ख़बर है फिर उसने कहा उरीदू अन अकूनन्नास इज़्ज़ता, सबसे ज़्यादा मुझे ही इज़्ज़त मिल जाए? तो आप स॰ ने जवाब दिया لَاتَسْئَلْ مِنْ اَمْرِكَ شَيْئًا اِلَى الْخَلْقِ تَكُنْ اَكْرَمُ النَّاسِ अपनी ज़रूरत मख़्लूक़ में से किसी को न बताओ सिवाए अल्लाह के किसी को पता न हो उसके सामने जितना मर्ज़ी मांग ले मख़्लूक़ के सामने चुप हो जा तो अल्लाह तआला सबसे ज़्यादा इज़्ज़त अता फ़रमाएगा। फिर सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स॰ कि मैं ताक़तवर बन जाऊं? आज कल के दौर में ताक़त हासिल करने के लिए कितना ज़ुल्म हो रहा है और कितने मासूमों की जानों से खेला जा रहा है अल्लाह तआला के हबीब ने इसका भी तरीक़ा बतलाया ताकि किसी के ख़ून का क़त्रा भी न बहे, सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स॰? أُرِيْدُ اَنْ اَكُوْنَ اَقْوَى النَّاسِ आपने फ़रम تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ تَكُنْ اَقْوَى النَّاسِ تَوَكَّلْ सीख लो अल्लाह पर यक़ीन कर लो अल्लाह पर भरोसा करना सीख लो तो सबसे ज़्यादा ताक़तवर बन जाओगे। सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स॰ اريد ان اكون عالم الناس मैं चाहता हूं कि सबसे बड़ा आलिम बन जाऊं? इल्म के रास्ते मेरे ऊपर खुल जाऐं तो आप स॰

ने बड़ा आसान रास्ता बतलाया اِتَّقِ اللّٰهِ تَكُنْ اَعْلَمُ النَّاسِ तक़्वा इख़्तियार करो सबसे बड़ा आलिम बन जाएगा। सहाबी ने अर्ज़ किया या اَنْ اَكُوْنَ اَعَفُّ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ रसूलुल्लाह मैं चाहता हूं कि दुनिया और आख़िरत की ज़िल्लतों से बच जाऊं आप स॰ ने फ़रमाया कि पाक दामन बन जा अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें तेरे क़दमों में डाल देगा। सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया اُرِيْدُ اَنْ اَكُوْنَ مِنْ اُخُصِّ النَّاسِ اِلَى اللّٰهِ मैं चाहता हूं कि लोगों में मेरी खुसूसियत क़ायम हो जाए आप स॰ ने झंडे के बग़ैर उसका तरीक़ा बतलाया कि अक्सर ज़िक्रुल्लाह अल्लाह का ज़िक्र कसरत से कर अल्लाह तआला तुझे खुसूसियत नसीब फ़रमा देगा। अब हमारे मसाएल का हल अल्लाह और उसके रसूल स॰ की ज़ुबान से कितने आसान तरीक़े बतलाए जा रहे हैं उनको हासिल करना चपड़ासी और बादशाह दोनों के लिए आसान है अल्लाह ने मक़्सद तक पहुंचना बहुत आसान किया है ज़रूरियाते ज़िन्दगी और मक़ामात मुख़्तलिफ़ बनाए हैं किसी को दाल रोटी खिलाता है किसी को गोश्त खिलाता है यह बताना है कि यह चीज़ें मेयारे इज़्ज़त नहीं अल्लाह ने अपने हबीब को सबसे पस्त मेयार ज़िन्दगी दो की क़यामत तक यह कीड़ा दिलों से निकल जाये कि इज़्ज़त और ज़िल्लत का मेयार दौलत और फ़क्र नहीं दीन और अल्लाह की इताअत और नाफ़रमानी है इज़्ज़त की बुनियाद अल्लाह की इताअत है और ज़िल्लत की बुनियाद अल्लाह की नाफ़रमानी है किसी फ़क़ीर को दुनिया में देखा है कि पेट पर दो पत्थर बांधे हों अल्लाहु अक्बर कितना फ़क्र और ये फ़क़ीरी मज्बूरी की नहीं इख़्तियारी है सारे ख़ज़ानों की चाबियां सामने रख दी गईं।

......☆......☆......☆......

फ़ातमा के घर पर्दा करने के लिए चादर नहीं

हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ बीमार हैं उनका हाल पूछने के लिए आप स॰ और एक सहाबी इमरान बिन हुसैन जो कि कुरैश के सरदार थे वह भी साथ थे दरवाज़े पर जाकर पूछा कि बेटी अंदर आउं मेरे साथ एक और आदमी भी है तो हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स॰ मेरे घर में इतना कपड़ा नहीं कि मैं पर्दा कर सकूं चादर कोई नहीं चेहरा छुपाने के लिए ज़ाहिर जिस्म को छुपाने के लिए चादर कोई नहीं हमारे इल्म के मुताबिक़ यह कैसी ज़िल्लत की ज़िंदगी है ये भी कोई ज़िंदगी है कि कपड़ा कोई न हो रोटी कोई न हो यह हमारी जहालत का इल्म है और ज़मीन व आसमान वालों का इल्म एक जैसा चल रहा है उनकी ज़िंदगी उनकी सबसे प्यारी बेटी जन्नत की औरतों की सरदार, और जन्नत के सरदारों की माँ, निस्बत देख سَيِّدُ شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ ये जन्नत के सरदारों हसन और हुसैन उनकी माँ और अललाह के शैर की बीवी और मुहम्मद स॰ की बेटी इस हाल में है घर में चादर पर्दे को नहीं तो आप स॰ ने अपनी चादर मरहमत फ़रमाई कि मेरी चादर से पर्दा करो, आप स॰ अंदर तशरीफ़ लाए और पूछा बेटी क्या हाल है उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह स॰ पहले भूख थी की दो मेहमान और आ गए भूख दूर करने को कोई अस्बाब नहीं रोटी नहीं बीमारी के इलाज के पैसे नहीं, तो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गले लगाया और आप भी रोने लगे अल्लाहु अकबर ताएफ़ पत्थरों की बारिश में रोना नहीं आया, ऐ बेटी! ग़म न कर وَالَّذِىْ بَعَثَ اَبَاكَ بِالْحَقِّ مَا ذُقْتُ مِنْ ثَلَاثَةِ اَيَّامٍ فَوَاقًا उस ज़ात की क़सम जिसने तेरे बाप को नबी बनाया है आज तीसरा दिन है मैंने भी एक लुक़्मा तक नहीं खाया है तेरे

घर में फ़ाक़ा है तो तेरे बाप के घर में भी फ़ाक़ा है यहाँ यह बोल फ़रमाया कि मैं कहने लगा था तो मुझे ये सारा वाक़िआ याद आ गया तो शुरू कर दिया यहाँ यह बोल फ़रमाया عَلٰى رَبِّىْ لِيَجْعَلَ مَا بَيْنَ الْمَكَّةِ ذَهَبًا मेरे रब ने मुझ पर पेश किया कि आप चाहें तो सारे अरब के पहाड़ों को सोना बना दूँ अरब के पहाड़ मक्का और मदीना के दरमियान पहाड़ सोना बन जाता तो क्या इससे क्या होता सारा अरब ही पहाड़ी इलाक़ा है अख़ीर मअक फिर ये बनके खड़े नहीं रहेंगे आपके साथ चलेंगे।

आपको तोड़ने की और काटने की मशक़्क़त में नहीं डालूंगा जितना फ़रमाऐंगे उतना होकर सामने आऐंगे मैंने इन्कार किया ऐ बेटी फिर क्या चाहिए मैंने कहा मुझे यह चाहिए कि اَجُوْعُ يَوْمًا وَاَشْبَعُ يَوْمًا एक दिन भूका रहूं और एक दिन खाना खाऊँ तो मेरी उम्मत के अक्सर लोग फ़क़ीर होंगे उनकी तसल्ली के लिए कि तुम्हें रोटी नहीं मिली तो तुम्हारे नबियों को भी तीन तीन दिन रोटी नहीं मिली अरे तुम्हारे बेटे के इलाज के लिए पैसे नहीं मिल रहे तो तुम्हारे नबी की सबसे महबूब बेटी की दवा के लिए पैसे नहीं मिले थे तुम्हारे बेटों को पहनने के लिए कपड़े नहीं मिल रहे तो तुम्हारे नबी की सबसे प्यारी बेटी को भी जिस्म ढापने के लिए कपड़े नहीं थे यह सिर्फ़ उम्मत के ग़रीब की तसल्ली के लिए थी अब यहाँ हमारी अक़्ल बरबाद हुई इन गाड़ियों और कोठियों को इज़्ज़त का मेयार बनाया गया फिर तो क़ारून सबसे बड़ा इज़्ज़त वाला था। उस जैसे शख़्स दौलत वाला आदमी दुनिया में कोई नहीं गुज़रा न आईन्दा कोई आएगा अल्लाह ने ख़ज़ानों समेत उसको ग़र्क़ कर दिया कहा कि बेटी मैं ख़ुद भूका हूँ मेरे रब ने तो कहा था कि ये पहाड़ सोना बना दूँ मैंने कहा नहीं اِذَا جُعْتُ जब भूक लगेगी

تَضَرَّعْتُ اِلَيْكَ وَذَكَرْتُكَ मैं तुझे याद करूँगा तेरे सामने आह व ज़ारी करूँगा या अल्लाह! मुझे खाने दें وَاِذَا شَبِعْتُ حَمِدْتُكَ وَشَكَرْتُكَ जब खाना खाऊँगा तो तेरा शुक्र अदा करूँगा और तेरी तारीफ़ करूँगा।

......☆......☆......☆......

लुक़्मान अलैहिस्सलाम की अपनी औलाद को पहली नसीहत

लुक़्मान अलैहिस्सलाम अपने बच्चे को समझा रहे हैं يَابُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿सूरह लुक़मान﴾ ऐ बेटा! अपने दिल को सारी मख़्लूक़ से पाक कर के अल्लाह का बन जा यह पहला सबक़ है जो माँ बाप ने औलाद को सिखाना है शिर्क बड़ा ज़ुल्म है किसी का माल छीनना ज़ुल्म नहीं सबसे बड़ा ज़ुल्म शिर्क है सारी दुनिया के यहूद व नसारा में सबसे बड़ा ज़ुल्म है अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ क्योंकि उन्होंने अल्लाह की ज़ात का शरीक ठहरा दिया पहला सबक़ बच्चों को सिखाना لا الٰه الا اللّٰه है لا الٰه الا اللّٰه का मफ़हूम बताना और उसके तक़ाज़े क्या हैं अल्लाह तआला के हाथ से सब कुछ होना बतलाना और अल्लाह पाक की अज़्मत दिल में बिठाना अल्लाह से डराना।

يَا بُنَيَّ اِنَّهَا اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللّٰهُ ﴿سورة لقمان﴾

ऐ बेटा! याद रखना गुनाह करोगे या बुराई या अच्छाई करोगे पहाड़ के अन्दर छिप के करोगे तो अल्लाह को पता चल रहा है और वह राइ के बराबर बुराई या अच्छाई है या ज़मीन के अंदर घुस जाओ वहाँ बैठ कर करो किसी को पता न चले या आसमान

पर चढ़ के करो फिर भी तेरा रब तुझे देख रहा है یـاتِـىٰ بِهَـا اللّٰه अल्लाह उसे ज़ाहिर कर देगा लिहाज़ा अल्लाह की ज़ात को हर वक़्त सामने रख कर उससे डरते रहो जुनैद बग़दादी रह॰ के पास एक आदमी आता है कि नसीहत फ़रमाइये तो जुनैद बग़दादी रह॰ ने फ़रमाया बेटा गुनाह करना है तो वहाँ चला जा जहाँ अल्लाह न देखता हो, कहा अल्लाह तो हर जगह देखता है तो फ़रमाया फिर गुनाह करना ही छोड़ दे जब अल्लाह हर जगह देखता है तो तौबा कर ले। ولا تـمـش فـى الا رض और तकब्बुर से चला भी न कर, किस तरह सिखा रहे हैं आज कल कोई माँ बाप ऐसी तरबियत करते हैं واقـصـد فى مشيك और अपने चलने में आजिज़ी से चला कर। واغْـضُـضْ مِنْ صَـوْتِكَ मुंह और गला फाड़ के बात न किया कर اِنَّ اَنْـكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ सबसे बुरी आवाज़ गधे की है जो सबसे ज़्यादा मुंह फाड़ता है औलाद के मसाइल का हल बताया कि अपनी औलाद से सुख लेना अपनी आंखों की ठंडक बनाना है तो उन्हें बी॰ ए॰ की डिग्री की ज़रूरत नहीं बल्कि उनको इन सिफ़ात की ज़रूरत है यह सिफ़ात उनके अंदर पैदा करो। तो भाई अल्लाह के इल्म के ताबे हो जाना यह हमारी दुनिया और आख़िरत के मसाइल का हल है और अल्लाह के इल्म से बग़ावत करना और अपनी तरतीब क़ायम करना यह दुनिया और आख़िरत के मसाइल की बरबादी हैं दुनिया में दौलत का मिल जाना काई बड़ी चीज़ नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि अल्लाह उससे राज़ी हो गया और उसके मसले का हल निकल आया कभी अल्लाह खुश हो के देता है कभी नाराज़ हो के देता है कभी खुश हो के लेता है कभी नाराज़ हो के ले लेता है इसका कोई अंदाज़ा नहीं जैसे कि अल्लाह ने सुलेमान को हुकूमत दी खुश हो के

फ़िरऔन को हुकूमत दी नाराज़ हो के और बदर में भूके शहीद हो रहे तो अल्लाह उनसे नाराज़ है? रूम और फ़ारस को हुकूमत दे रहे और हुज़ूर स॰ पेट पर पत्थर बांधे हुए हैं तो क्या अल्लाह अपने हबीब से नाराज़ है? नहीं राज़ी है।

......☆......☆......☆......

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह॰ की कैफ़ियते नमाज़

मस्जिद में आग लग गई और इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह॰ अंदर नमाज़ पढ़ रहे थे सारे नमाज़ी भाग गए शोर मचा आख़िर आग ने घेर लिया फिर लोग अंदर गए और उसको पकड़ के घसीट कर बाहर ले आए कहने लगे हज़रत जी आपको पता ही नहीं चला कि सारी मस्जिद में आग लग गई फ़रमाने लगे कि जहन्नम की आग ने दुनिया की आग का पता ही चलने नहीं दिया जहन्नम की आग ने दुनिया की आग से ग़ाफ़िल रखा अच्छा भाई हम इतने दर्जा की नहीं ले सकते इतने दर्जे की तो ले सकते हैं कि तक्बीर से सलाम फेरने तक अल्लाह ही अल्लाह हो और कोई न हो

......☆......☆......☆......

हज़रत अली रज़ि॰ की कैफ़ियते नमाज़

हज़रत अली रज़ि॰ की रान में तीर लगा और तीर नोकदार था अंदर फंस गया निकालना चाहा निकल नहीं सका बड़ी तक्लीफ़ हुई तो उन्होंने कहा कि छोड़ दो नमाज़ पढ़ेंगे तो निकाल लेंगे तशरीफ़ लाए मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए नमाज़ शुरू की लोग आए और उन्होंने बड़े झटके से उसको निकाला होगा वैसे तो निकल नहीं सकता था लेकिन जिस्म से रूह कटकर अल्लाह से जुड़ी हुई थी सलाम फेरने के बाद पूछा कि तीर निकालने आए हो

कहा कि तीर तो हमने निकाल लिया जी कहा कि मुझे तो पता ही नहीं चला यक़ीनन हमारी नमाज़ यहाँ तक नहीं पहुंच सकती लेकिन मैं क़सम खाने को तय्यार हूँ कि यहाँ तक हमारी आ सकती है कि अल्लाहु अक्बर से लेकर सलाम फेरने तक किसी का ख़्याल न आए हम उसकी मेहनत ही नहीं करते हमारी सारी मेहनत का रुख़ अपने ज़ाहिर को बनाने पर है और अपनी चीज़ों को संवारने पर है आज जो गाड़ियां चल रही हैं 1935ई॰ में भी यही गाड़ियां होती थीं। 1935ई॰ का मॉडल देखें और आज का मॉडल देखें 1935ई॰ के घर और आज के घर एक हैं।

सारी मेहनत इधर है तो वह निखरती जा रही है जो नमाज़ 1950ई॰ में पढ़ रहा था वही नमाज़ 1995ई॰ में पढ़ रहा है उसमें एक ज़र्रा भी आगे नहीं गया मेहनत कोई नहीं।

......☆......☆......☆......

अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हु का ईमान बिलग़ैब

ईमान बिलग़ैब आ गया अल्लाहु अक्बर ईमान बिलग़ैब का हाल यह है कि अली रज़ि॰ ने फ़रमाया لَوْ كُشِفَ الْغِطَاءُ زَادَتْ إِيمَانًا कि तुम मेरी नज़रों से आसमान के पर्दे हटाकर जन्नत और जहन्नम दिखा दो तो मेरे ईमान और यक़ीन में ज़र्रा बराबर भी इज़ाफ़ा नहीं होगा बग़ैर देखे ईमान इतना बन चुका है तो हमारा ईमान इतना नहीं बन सकता लेकिन इतना तो बन सकता है कि हम अल्लाह के वादे पर यक़ीन करके हराम छोड़ दें, सूद छोड़ दें, ज़िना छोड़ दें, ख़यानत छोड़ दें, शराब छोड़ दें, बद्दयानती छोड़ दें, इतना यक़ीन हासिल करना मुसलमान पर फ़र्ज़ है तबलीग़ से अल्लाह के हुक्मों को सीख लें और अल्लाह पाक अपने वादों को पूरा करने वाला है जो अल्लाह के लिए किसी चीज़ को छोड़ता है

तो अल्लाह उसे बेहतर देता है।

......☆......☆......☆......

उसको दो जो ख़ज़ानों वाला है

हबीब रज़ि॰ की बीवी रोटी का आटा गूंद रही थी आटे को रखा पड़ोसन से आग लेने चली गई पीछे फ़क़ीर आया उन्होंने सारा आटा उठा कर उसको दे दिया और तो कुछ पकाने के लिए घर में नहीं था सिर्फ़ वही आटा था बीवी वापस आई तो कहने लगी आटा कहाँ गया? काफ़ी देर गुज़र गई तो कुछ भी नहीं बताया तो कहने लगी तुने सदक़ा कर दिया है? कहा हां! बीवी कहने लगी एक रोटी जितना आटा तो रख लेते आधी आधी मिल कर खा लेते उन्होंने कहा नहीं नहीं जिसको दिया है वह बड़े ख़ज़ानों वाला है भूक जब ज़्यादा चमक गई तो दरवाज़े पर दस्तक हुई आप रज़ि॰ दरवाज़े तक गए और अंदर घर में मुस्कुराते हुए तशरीफ़ लाए और इस हाल में थे प्याला भरा हुआ गोश्त का और रोटियों की चंगीर भरी हुई कहने लगे असल में दोस्ती ऐसे सख़ी से है मैंने भेजा था सिर्फ़ रोटी के लिए उसने साथ साथ सालन भी दे दिया हम सब कुछ तो नहीं लगा सकते जितना लगाने को कहा है इतना लगाऐं ज़कात तो दें ग़रीब का हक़ तो न मारें।

......☆......☆......☆......

एक दो दस ले लो

एक आदमी अली रज़ि॰ के पास आया एक ऊँट उसके हाथ में है और कहा मुझे यह ऊँट बेचना है अली रज़ि॰ ने कहा कितने का बेचोगे कहने लगा कि चालिस दिरहम का अली रज़ि॰ ने कहा अरे भाई उधार का तो मैं ख़रीदार हूँ नक़द देना चाहते हो तो किसी और को दे दो और उधार मैं ले सकता हूँ उसने कहा बिल्कुल मैं

तय्यार हूँ आप ले लें कहा कि यहाँ बांधो वह आदमी ऊँट बांध कर अपने घर चला गया वहीं बैठे ही थे कि एक दूसरा आदमी आया और कहने लगा ये ऊँट किसका है? अली रज़ि॰ ने कहा मेरा है पूछने लगा कि बेचना है? कहा हाँ! कितने का लोगे? ताजिर ने कहा कि दो सौ का लूंगा, उस वक़्त दो सौ दिरहम दिए और ऊँट लेकर चला गया और हज़रत अली रज़ि॰ ने 140 दिरहम उसके घर भिजवाए और 60 दिरहम हाथ में लेकर मुस्कुराते हुए घर में आए और हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ के सामने रखे और कहा तेरे रब का वादा है मनजाआ बिलहस्नती फ़लहू अशरन अम्सालुहा जो एक देगा मैं उसको दस दूंगा ईमान को बनाना हर मुसलमान पर फ़र्ज़े अैन है इतने दर्जे का ईमान कि उससे ज़िना छुड़वा दे झूट छुड़वा दे सूद छुड़वा दे रिश्वत छुड़वा दे यह तो फ़र्ज़े अैन है लोग कहते हैं कि तबलीग़ में जा रहे हैं उनके पीछे उनके घर के इतने मसाइल हैं अल्लाह की क़सम यह मसाइल के हल होने के लिए जा रहे हैं कि इससे मसाइल हल होंगे जब अल्लाह से जुड़ेंगे ईमान आएगा तक़्वा आएगा तो अल्लाह तआला का ग़ैबी निज़ाम चलेगा।

तीसरी चीज़ बताई وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُوْنَ दिए हुए माल को ख़र्च करते हैं उसका अदना दर्जा ज़कात है ज़मीनदार के लिए उश्र है और ताजिर के लिए ज़कात है चौथी चीज़ बताई وَيُؤْمِنُوْنَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ जाहिल नहीं रहते अपनी ज़रूरियात का इल्म भी हासिल करते रहते हैं यह नहीं कि नमाज़ की रकात कितनी हैं? और नमाज़ के फ़र्ज़ कितने हैं? और नमाज़ में क्या पढ़ना है? कम अज़ कम छः सूरतें तो हर मुसलमान के ज़िम्मे हैं कि याद करें दो सूरतें फ़ज्र की नमाज़ के लिए दो सूरतें ज़ुहर की फ़र्ज़ नमाज़ के लिए दो सूरतें अस्र के फ़र्ज़ों के लिए दो

सूरतें मग़रिब के फ़र्ज़ों के लिए और दो सूरतें इशा के फ़र्ज़ों के लिए हर रकअत को قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पर टर्खा देना इतनी जहालत यह इल्म हासिल करते हैं अपनी ज़रूरियात का अल्लाह की मअरिफ़त का पहली किताबों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह के नबी के इल्म पर जम जाते हैं अगर्चे सारी दुनिया मुख़ालिफ़ हो अल्लाह और रसूल की ख़बर उनको इधर उधर नहीं कर सकते।

......☆......☆......☆......

हज़रत उस्मान रज़ि॰ की हूर से शादी

हज़रत उस्मान का तिजारती क़ाफ़िला आया और ज़माना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का है मदीना में क़हत पड़ गया था जब क़हत पड़ जाता तो चीज़ें कम होती हैं फिर ताजिर चीज़ें ग़ायब कर लेते है खून चूसने के लिए यह वह ताजिर नहीं हैं जिन्होंने हुज़ूर स॰ वाली ज़िंदगी सीख ली हो यह तो पैसे वाले ताजिर हैं तो क़ाफ़िला सौ ऊँट साज़ो सामान से भरे हुए तो पर्चों वाले ताजिर आ गए उन्होंने कहा जी क्या लोगे तो उस्मान रज़ि॰ ने कहा तुम क्या दोगे उन्होंने कहा दस रुपये की चीज़ बारह में ले लेंगे फ़रमाया कि उसकी क़ीमत ज़्यादा लग चुकी है तुम बढ़ाओ कहा हम दस रुपये की चीज़ चौदह रुपये में ले लेंगे फ़रमाया इससे भी ज़्यादा क़ीमत लग चुकी है कहा कि पंद्रह में ले लेंगे इससे ज़्यादा गुंजाइश नहीं उन ताजिरों ने पूछा इतनी ज़्यादा क़ीमत कौन लगा के गया मदीना के ताजिर सारे के सारे सामने बैठे हुए हैं फ़रमाने लगे हज़रत उस्मान रज़ि॰ कि इससे पहले मेरे रब ने लगाया है कि तुम मुझे एक दोगे मैं तुम्हें दस दूंगा। مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا मैं तुम सबको गवाह बनाता हूँ कि मेरा यह सारा माल बमा असल ज़र के मदीना के फ़ुक़रा पर सदक़ा है। रात को हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ हुज़ूरे अक्रम स॰ के चचाज़ाद भाई उन्होंने ख़्वाब

में देखा कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ेद घोड़े पर सवार हैं सब्ज़ पोशाक है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेज़ी से निकल रहे हैं तो उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़ ली या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप से बात करने को जी चाहता है बैठने को जी चाहता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज जो उस्मान रज़ि॰ ने अल्लाह के नाम पर सदक़ा किया वह कुबूल हो गया और अल्लाह ने उसकी एक जन्नत की हूर से शादी की है उसके वलीमे में सारे जन्नतियों को बुलाया है मैं भी उसके वलीमे में शिर्कत के लिए जा रहा हूँ तो मेरे भाइयो! अल्लाह के इल्म पर आ जाना या हमारे तमाम मसाइल का हल चूंकि हमें उस ईमान की यह सतह हासिल नहीं इसलिए यह मेहनत करनी पड़ेगी कि मेहनत करते करते ईमान इस सतह पर आ जाए कि सारी दुनिया अल्लाह के हुक्मों के सामने बेहैसियत नज़र आए देखो ना मैं जब हुक्मे इलाही को तोड़ता हूँ तो गोया पैसे की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को तोड़ता हूँ जब अपने नफ़्स की ख़्वाहिश की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को तोड़ता हूँ तो गोया मैंने अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को अल्लाह के हुक्म से भी ऊंचा कर दिया जो यह तबलीग़ का काम हो रहा है उसमें इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों का पाबंद बन के चले।

पूरी ज़िंदगी पाबंद बनने के लिए एक दिन काफ़ी नहीं यह बर्स हा बर्स की मेहनत है फिर चार महीने लगाने से मसला हल नहीं होता यह मुस्तक़िल मेहनत है कि रोज़ाना अपने ईमान को सीखने के लिए वक़्त निकालें बदहज़्मी होती है तो सारी ज़िंदगी परहेज़ करना पड़ता है इस तरह हमारी ज़िंदगी की सारी गर्दिश टेढ़ी हो

चुकी है यह एक दिन में तो ठीक नहीं होगी लेकिन नाउम्मीद होने की भी कोई बात नहीं एक मरतबा तौबा कर लें तो पिछले सारे गुनाह मआफ़ होंगे।

......☆......☆......☆......

एक ही वार में दो टुक्ड़े

ख़ैबर का क़िला फ़तेह नहीं हुआ अबू बक्र रज़ि॰ से नहीं हुआ, उमर से नहीं हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कल झंडा उसको दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार करता है और अल्लाह और उसका रसूल स॰ भी उससे प्यार करते हैं जानिबैन की मुहब्बत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कभी इमारत और हुकूमत की ख़्वाहिश भी दिल में पैदा नहीं हुई आज ख़्वाहिश पैदा हुई कि काश झंडा मुझे मिल जाए क्योंकि आपने जो इरशाद फ़रमाया यह बहुत बड़ी गवाही है कि अल्लाह और उसका रसूल स॰ उससे प्यार करते हैं तो अगले दिन फ़रमाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली रज़ि॰ कहाँ हैं अली रज़ि॰ की आंखें ख़राब थीं देख नहीं सकते थे कहा कि जी आंखें ख़राब हैं फ़रमाया बुलाओ बुलाया गया आंखों में लुआबे मुबारक डाला फिर फ़रमाया कि जाओ उनसे पहले एक सहाबी हमलाआवर हुए थे हज़रत सईद बिन आमिर रह॰ बहुत बड़े सहाबी हैं मुख़ालिफ़ीन के हमले से शहीद हो गए उन काफ़िरों में से एक दंदनाता हुआ आया कि कोई है मेरे मुक़ाबले में? عَلِمَتْ خَيْبَرُ اَنِّى مَرْحَبُ شَاكِ السِّلَاحِ بَطَلٌ مُجَرَّبٌ، मैं वह मरहब हूँ जिसको ख़ैबर जानता है हथ्यारों का आज़माया हुआ हूँ हज़रत अली रज़ि॰ जवाब में आगे बढ़े اَنَا الَّذِىْ سَمَّتْنِىْ اُمِّىْ حَيْدَرُ اَكُلِيْتُ فَابَاتَ كُرَيْهُهُ الْمُنْذِرَا मैं भी आ रहा हूँ जिसका नाम उसकी माँ ने हैदर रखा है हैदर शेर को कहते हैं शेर के अरबी ज़बान में सौ के क़रीब नाम हैं

मैं शेर हूँ जंगल का जिसको देखकर सबके होश गुम हो जाते हैं कहा كَلَيْثِ غَابَاتٍ मैं जंगल का शेर हूं एक ही वार में दो टुकड़े कर दिए और ख़ैबर के क़िले को उठाकर फेंक दिया जिसको बाद में चालिस आदमियों ने उठाया जो दुनिया में बड़े होते हैं तो दीन में आने के बाद उधर भी बड़े बन जाते हैं तो जिन लोगों को अल्लाह ने दुनिया में वजाहत दी है तो मेरे भाइयो! क्यों ज़ाए करते हो कितने कमा लोगे।

......☆......☆......☆......

हज़रत उमर रज़ि॰ का ज़ुहद

मेरे भाइयो! हज़रत उमर रज़ि॰ बूढ़े हो गए सहाबा ने कहा कि अब यह बूढ़े हो गए हैं और यह बहुत मशक़्क़त करते हैं उन्हें चाहिये कि यह अब अपना तरीक़ा तबदील करें अब यह पतला कपड़ा पहनें अब यह अच्छा खाना खाऐं अब यह कोई नौकर रख लें जो उनके लिए खाना पकाया करें लेकिन भाई बात कौन करे? उन्होंने कहा कि बेटी से कहो वह बात करें हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ को तय्यार किया गया कि आप बात फ़रमाऐं अगर हज़रत मान जाऐं तो फिर हमारी बात बता देना अगर न मानें तो तो फिर हमारे नाम न बताना और यह मशवरा करने वाले कौन थे? हज़रत उस्मान रज़ि॰, हज़रत अली रज़ि॰, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰, हज़रत सअद रज़ि॰ और हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ यह छः सहाबा थे यह बड़े बड़े सहाबा मशवरा करने वाले हैं हज़रत उमर रज़ि॰ अपनी बेटी के घर में आए बेटी ने कहा अब्बा जान! आप बूढ़े हो गए हैं और मुल्कों के वफ़्द आते है बड़े बड़े बादशाहों के वफ़्द आते हैं अब आप अच्छा खाना खाया करें अच्छा लिबास पहना करें और कोई नौकर रख लें जो आप सल्ल॰ की ख़िदमत किया करे जिससे आपको राहत पहुंचे फ़रमाया बेटी! घर वाले को पता होता है कि

मेरे घर में क्या है कहने लगी हाँ! फ़रमाया बेटी तुझे पता है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए और आप सल्ल॰ ने कभी भी पेट भर के खाना नहीं खाया फ़रमाया यह तुझे पता है कहा हाँ पता है कि सुबह खाया तो शाम को न खाया शाम को खाया तो सुबह को न खाया कहने लगी हाँ फ़रमाया बेटी! तुझे पता है कि एक दफ़ा खाना तूने घर में एक छोटी सी मेज़ पर रख दिया था और हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए थे आपने खाने को मेज़ पर देखा तो आप सल्ल॰ के चेहरे का रंग बदल गया था और आप सल्ल॰ ने गुस्से से वहाँ से खाना उठवा कर ज़मीन पर रख कर खाया था फ़रमाया हाँ बेटी! तुझे याद है कि हुज़ूरे अक्रम स॰ के पास ही जोड़ा होता था जब मैला होता था तो खुद ही धोते थे और धोकर उसे खुश्क करते थे यहाँ तक कि नमाज़ का वक़्त हो जाता था और हज़रत बिलाल रज़ि॰ अज़ान देकर कहते थे या रसूलुल्लाह स॰ अस्सलात तो अभी आप सल्ल॰ का जोड़ा खुश्क नहीं होता था आप इंतेज़ार करते थे यहाँ तक कि आपका जोड़ा खुश्क होता और उसे पहन कर फिर आप सल्ल॰ एक जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे।

फ़रमाया ऐ बेटी! तुझे याद है कि एक औरत ने आप स॰ की ख़िदमत में दो चादरें हदया भेजी थीं एक चादर पहले भेज दी दूसरी में देर हो गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सिवाए उस चादर के कोई कपड़ा न था तो आप स॰ ने चादर को गाठें लगाकर अपने सतर को ढांका और जाके नमाज़ पढ़ाई थी फ़रमाया क्या तुझे याद है? बेटी ने कहा हाँ याद है फिर हज़रत उमर रज़ि॰ रोना शुरू हुए।

फ़रमाया बेटी! सुन ले मेरी और मेरे साथियों की मिसाल ऐसी है जैसे तीन राही तीन मुसाफ़िर चले पहले एक चला और चलता

चलता मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा फिर दूसरा चला और वह भी चलता चलता मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा, अब मेरी बारी है अल्लाह की क़सम! मैं हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े से नहीं हटूंगा और अपने आप को इसी मशक़्क़त पर रखूंगा यहाँ तक कि मैं अपने नबी से जाकर मिल जाऊं मेरे दो साथी एक जगह पहुंच चुके अब मेरी बारी है मुझे भी पहुंचाना है। मेरे भाइयो! हालाँकि हज़रत उमर रज़ि॰ वह इंसान थे जिनको अल्लाह तआला के नबी ने कहा कि ऐ उमर रज़ि॰ मैंने जन्नत में एक हसीन व जमील व ख़ूबसूरत महल देखा मैंने पूछा ये किसका महल है? तो मुझे कहा गया कि ये एक कुरैशी नौजवान का महल है जब मैं महल में दाख़िल होने लगा तो फ़रिश्ते ने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह उमर रज़ि॰ का महल है।

मेरे भाइयो! जिसको जन्नत की ऐसी बशारतें मिलीं और आप स॰ ने फ़रमाया मेरे दो वज़ीर हैं दुनिया में अबू बक्र रज़ि॰ और उमर रज़ि॰ और दो वज़ीर हैं आसमानों में जिब्राईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम और आपने फ़रमाया कि क़यामत के दिन उठूंगा मेरे दाऐं तरफ़ अबू बक्र रज़ि॰ और बाऐं तरफ़ उमर रज़ि॰ और बिलाल रज़ि॰ मेरे आगे आगे अज़ान देता होगा ये सारी ख़ुशख़बरियां सुनी हैं लेकिन बेटे से कह रहे हैं मेरा सर ज़मीन पर डाल दे। मैं अपने चेहरे पर मिट्टी मलना चाहता हूँ कि मेरे रब को उस पर तरस आ जाएगा।

......☆......☆......☆......

बदल गया इंसान

हज़रत शाह अब्दुल क़ुद्दूस साहब रह॰ हिंदुस्तान में बड़े मशाइख़ में से गुज़रे हैं उनका लड़का कबूतर–बाज़ बन गया बाप

का इंतिक़ाल हो गया एक मरतबा बाज़ार में कबूतर उड़ा रहा था तो एक मीरासी बाज़ार में निकला, बड़ा जुब्बा पहना हुआ पीछे मुरीदों की क़तार और आगे आगे वह जा रहे थे तो अबू सईद जो अब्दुल कुद्दूस साहब का लड़का हंसने लगा कि अरे तुमने पीरी कब से संभाली तो उसने कहा जब से तुमने कबूतर–बाज़ी संभाली हमने पीरी संभाली बस दिल पर एक चोट लगी अपनी माँ के पास आए कहने लगे मेरे बाप की मीरास कहाँ हैं माँ ने कहा बेटा तेरे बाप की मीरास तो जलालाबाद चली गई तेरे बाप की मीरास जलालुद्दीन रह० जलालाबादी के पास वहाँ पर है कहने लगे बहुत अच्छा, घर छोड़ा और अपने बाप की मीरास हासिल करने के लिए निकल खड़े हुए।

......☆......☆......☆......

हज़रत अली रज़ि० और फ़िक्रे आख़िरत

ज़रार बिन ज़म्रा कनानी फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि० की वह आवाज़ आज मेरे कान सुन रहे हैं रात भीग चुकी है और सितारे फीके पड़ चुके हैं मांद पड़ चुके हैं और वह अपनी मस्जिद के मेहराब में खड़े हैं अपनी दाढ़ी को पकड़े हुए तड़प रहा है जैसे सांप के डसने से इंसान तड़पता है और रोता है जैसे कोई ग़मों का मारा हुआ रोता है और दुनिया को कह रहा है मुझे धोका देने आई है मुझे देखने आई है मेरे सामने मुज़य्यन होके आई है दूर हो मैं तुझे तीन तलाक़ दे चुका हूँ, तेरी उम्र थोड़ी, तेरी मुसीबत आसान ऐ मेरे अल्लाह! मेरे पास सफ़र का तौशा कोई नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है और यह कौन कह रहा है? जिनके बारे में हुज़ूरे अकरम स० ने एक मरतबा हज़रत अली रज़ि० का हाथ अपने हाथ में पकड़ा और यूं कहा ऐ अली रज़ि० खुश हो जा जन्नत में

तेरा घर मेरे घर के सामने होगा ये कह रहे हैं कि मेरे पास तौशा नहीं है मेरे पास सफ़र का तौशा नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है।

......☆......☆......☆......

आप सल्ल० का रोना और हंसना

मेरे भाइयो! जब हम मैदान ही में न उतरें हमारी इस्तिदाद कैसे चमकेगी हज़रत अबू लुबाना रज़ि० को हुज़ूरे अक्रम स० ने फ़रमाया मैं उस पर रोया कि यह किस हाल में गया और जो हज़रत सअद का अल्लाह के पास उसका दर्जा देखा तो मैं हंस पड़ा कि अल्लाह ने कितना ऊँचा रुत्बा दे दिया और मैंने उससे मुंह फेर लिया हुज़ूरे अक्रम स० क्यों रोते थे? इसलिए कि आप जन्नत व दोज़ख़ अपनी आंखों से देख रहे थे।

......☆......☆......☆......

दस लाख दिरहम का वाक़िआ

एक सहाबी रज़ि० दूसरे के पास जाते हैं कि जनाब आपने मुझे दस लाख रुपये दिये हैं कहने लगे जब चाहें आ के ले जाना मेरे भाई मुहतरम जब घर में आए और अपना हिसाब देखा तो लेने नहीं थे देने थे अब उसका ज़र्फ़ देखें कि उनको भी पता है कि लेने हैं देने नहीं हैं और पैसे भी कोई थोड़े नहीं हैं दस लाख रुपये और वह भी आज से चौदह सौ साल पहले जब उनको पता चला कि देने हैं लेने नहीं तो भागे भागे आए और कहा अरे अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० जो हुआ भाई माफ़ करना वह रुपये तो मैंने तुम्हारे देने थे फ़रमाया चल वह मैंने तुम्हें हदया कर दिये मआफ़ कर दिए अब अल्लाह ने इतना दे दिया कि हिसाब ही नहीं यह उसका बेटा है जो हब्शा की हिज्रत करके भूकों पर भूक गुज़ारी वतन से दूर वक़्त गुज़ारा और मूता के मैदान में भूके प्यासे जान दे

दी, आज उन्ही को अल्लाह तआला रिज़्क़ दे रहा है कि दस लाख रुपये लेने थे और वह ग़लती से कह रहा है कि तू दे सिर्फ़ इस बात पर मुसलमान का ख़्याल रखते हुए कि मैंने मआफ़ कर दिया अल्लाह ने दुनिया भी बनाई आप यक़ीन करें कि हुज़ूरे अक्रम स॰ दुनिया और आख़िरत की कामयाबियां लेकर आए हैं लेकिन हम उसके लिए उठते ही नहीं।

......☆......☆......☆......

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वादा सच्चा वादा

मेरे भाइयो! यरमूक की लड़ाई का मैदान एक नौजवान लड़का अबू उबैदा रज़ि॰ से कह रहा है ऐ अबू उबैदा रज़ि॰ मैं हुज़ूरे अक्रम स॰ के पास जा रहा हूँ तुम्हें कोई पैग़ाम पहुंचाना है तो बताओ? जज़्बे देखो हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ रोने लगे और कहा कि ऐ भाई हुज़ूरे अक्रम स॰ को पैग़ाम दे देना कि आपने जो वादे हमारे साथ किए थे हमने उनको सच पाया और अल्लाह की मदद अपनी आंखों से देख ली मर रहे हैं और जन्नत को जा रहे हैं एक सहाबी रज़ि॰ के भतीजे को उठा के लाया गया ज़ख़्मी कटे पड़े हैं उनके चचा बड़े सहाबी रज़ि॰ थे देखा तो रोने लगे और कहने लगे या अल्लाह मेरे भतीजे को ठीक कर दे भतीजे को थोड़ा सा होश आया तो कहने लगे ऐ चचा मेरे लिए दुआ मत करो वह देखो हूर मुझे पुकार रही है मेरे लिए दुआ मत करो। ये वह लोग हैं जो नेक आमाल करके आख़िरत वाले बन गए।

......☆......☆......☆......

एक नौजवान का वाक़िआ

एक नौजवान लड़का खड़ा हुआ जवानी में जज़्बा होता है ना ख़्वाहिशात का, एक आयत पर वह लड़का खड़ा हुआ बड़े मालदार

आदमी का लड़का था बाप मर गया अकेला जायदाद का वारिस था कहने लगा अब्दुल वाहिद क्या कह रहे हो अल्लाह ने जन्नत दे दी माल व जान के बदले में? कहा हाँ कहने लगे फिर मैं भी सौदा करता हूँ अभी सौदा करता हूँ अभी पता चलेगा तुम कितना सौदा करते हो दुकान खींचती है या आख़िरत खींचती है उस लड़के ने कहा कि फिर मैं भी सौदा करता हूं कहा बेटा देख लो निकलना आसान नहीं है अभी मग़रिब से पहले एक नौजवान भाई कह रहा था कि एक आदमी राएवंड गया मैंने पूछा कि क्या देखा? कहा कि मिट्टी गुबार देखा और कुछ नहीं देखा हाँ भाई! जो घरों में एयरकंडीशन लगाऐंगे उन्हें फिर गर्द व गुबार में कहाँ चैन नसीब होगा अब्दुल वाहिद ने कहा देख लो बेटा ये निकलना आसान नहीं है उस लड़के ने कहा जब अल्लाह तआला जन्नत दे रहा है तो फिर निकलना कौनसा मुश्किल है मेरे दोस्तो इसी की आवाज़ लगाई जा रही है कि आख़िरत का जज़्बा बन जाए।

मौलाना मोहम्मद इल्यास साहब रह॰ फ़रमाते थे मैं दो चीज़ें चाहता हूँ कि मुसलमानों की जमाअतें बन बन कर अल्लाह के रास्ते में दीवानावार फिरती हों और अल्लाह के कल्मे को बुलंद कर रही हों जैसे सहाबा रज़ि॰ के ज़माने में फिरते थे एक तो ऐसा ज़ाहिरी ढांचा चाहता हूँ और अंदर में ये चाहता हूँ कि दिल में से सारे जज़्बे निकाल कर एक ही जज़्बा चाहता हूँ कि अल्लाह के और अल्लाह के रसूल के नाम पर मरना चाहता हूँ लड़के ने कहा कि कब निकलोगे? फ़रमाया पीर के दिन कहा मैं आ जाऊँगा सबसे पहले वह लड़का आया या उस वक़्त तुर्किस्तान में दावत चल रही थी बिलाद रूम में दिन में साथियों की ख़िदमत रात में अल्लाह के सामने खड़ा होना जब रूम के शहर में पहुंचे

मुसलमानों की आदत थी कि पहले दावत देते थे कोई लश्कर किसी मुल्क के फ़तह के लिए नहीं कोई हमला किसी फ़तह के लिए नहीं हुआ सब कलमा बुलंद करने के लिए हुआ।

मुग़ीरा बिन शोबा रज़ि॰ जैसे रुस्तम कहने लगे "अगर हम तुम्हारा यह कल्मा पढ़ लेंगे तो क्या करोगे? फ़रमाया हम उन्हीं क़दमों से वापस चले जाऐंगे तुम्हारे मुल्क में लौट कर नहीं आऐंगे सिर्फ़ चंद आदमी तुम्हें इस्लाम सिखाने के लिए छोड़ जाऐंगे या फिर तुम्हारे पास आऐंगे तो तिजारत के लिए आऐंगे वैसे नहीं आऐंगे दावत दी दावत देने के बाद टक्कर हुई ये नौजवान घोड़े पर सवार थोड़ी सी नींद आई आंख खोली कहा हाए मैं "عَيْنَاء مَرْضِيَة" का शौक़ीन हूँ लोगों ने कहा बेचारा लड़का पागल हो गया वह लड़का घोड़ा दौड़ाता हुआ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह॰ के पास आया और कहने लगा शैख़ कुछ न पूछो "عَيْنَاءٌ مَرْضِيَّةٌ" का हाल उन्होंने कहा बेटा! मुझे भी तो कोई बताओ मैं थोड़ी सी नींद सोया तो मुझे ख़्वाब में एक आदमी नज़र आया कि आओ मुझे "عَيْنَاءٌ مَرْضِيَّةٌ" के पास ले चलो।

इससे पहले एक हदीस सुन लो मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत जन्नत में एक हूर है जिसका नाम عيناء है जब महल से निकलती है तो सत्तर हज़ार नौकर दाएं तरफ़ और सत्तर हज़ार नौकर बाएं तरफ़ एक लाख चालीस हज़ार ख़ुद्दाम पुकार के कहती है कि नेकियों को फैलाने वाले और बुराईयों को मिटाने वाले कहां पर हैं।

लड़के ने कहा ख़्वाब में उस आदमी ने कहा कि चलो तुझे ऐना के पास ले चलूं मुझे एक बाग़ में दाख़िल किया उसमें एक नहर पानी की उसका एक किनारा याकूत का दूसरा किनारा मोती का उसमें पानी उछलता हुआ और उसके किनारे पर लड़कियां

ख़ूबसूरत हसीन व जमील ऐसी हसीन व जमील कि मैं उनके हुस्न व जमाल को बयान नहीं कर सकता मुझे देख कर कहने लगीं मरहबा ये तो ऐना के घर वाला आ गया मैंने उनको सलाम किया उन्होंने जवाब दिया मैंनें उनसे पूछा वह ऐना कहां है?

उन्होंने कहा हम उस की बांदियां और नौकरानियां है आप आगे चले जाऐं बस आगे बढ़ा एक दूध की नहर, नहर के किनारे ऐसी ख़ूबसूरत लड़कियां जिन्हें देख कर फ़ित्ने का अंदेशा था मुझे देख कर कहने लगीं मरहबा ऐना के घर वाले के लिए मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने जवाब दिया मैंने पूछा ऐना कहां है?

उन्होंने कहा हम उस की बांदियां है हम उसकी लौंडियां आप आगे को चलें मैं आगे को चला एक शराब की नहर और उसके किनारे ऐसी ख़ूबसूरत लड़कियां कि मैं पिछली लड़कियों को भी भूल गया मुझे देख कर कहने लगीं मरहबा ये तो ऐना के घर वाला आ गया मैंने सलाम किया उन्होंने जवाब दिया मैंने पूछा वह ऐना कहां है? उन्होंने कहा कि हम उसकी बांदियां और नौकरानियां हैं आगे जाओ मैं आगे को चला एक शहद की नहर और शहद की नहर के किनारे बड़ी ख़ूबसूरत लड़कियां ऐसी ख़ूबसूरत लड़कियां जिन्हें देख कर उनकी ख़ूबसूरती को बयान नहीं कर सकता उन्होंने भी मुझे मरहबा कहा मैंने उन्हें सलाम किया उन्होंने मुझे जवाब दिया मैंने पूछा वह ऐना कहां है?

उन्होंने कहा हम उसकी बांदियां और नौकरानियां हैं आप आगे को चलें मैं आगे चला गया तो एक ख़ूबसूरत मोती का ख़ेमा जिसे आप बंगला कह लो, लोग आज बंगले बनाते हैं कमाते कमाते जब बूढ़े हो जाते हैं तो बड़े बड़े बंगले खड़े कर देते हैं इसलिए फ़रमाया ऐसे घर बनाते हो जिनमें तुम्हें रहना नहीं है वहाँ नहर के

किनारों पर साठ साठ मील बंगले हैं ख़ेमे के दरवाज़े पर एक ख़ूबसूरत लड़की ने मुझे देखा फिर ख़ेमे के अंदर मुंह कर के कहा ऐना तेरा ख़ाविंद आ गया मैं अंदर दाख़िल हुआ अंदर एक सोने का तख़्त जवाहिरात जड़े हुए तख़्त पर फ़र्श फ़र्श पर तकिए तकियों पर टेक लगाए एक लड़की है जिसके हुस्न व जमाल को न कोई बता सकता है न कोई तसव्वुर कर सकता है और उसका चेहरा रौशन है और वह मुझे देख कर मुस्कुराई कहने लगी ऐ अल्लाह के दोस्त! तेरा मेरा विसाल अब क़रीब है तू मेरे पास अब आने वाला है कहने लगा मैं दौड़ के आगे बढ़ा कि उसे गले लगाऊं उसने कहा ठहर जा ठहर जा अभी तो तेरी ज़िंदगी बाक़ी है लेकिन आज रात तू मेरे पास आएगा और रोज़ा इफ़्तार मेरे पास करेगा लड़का कहने लगा मैं अब यहाँ रहना नहीं चाहता मुझे वहाँ जाने दो सबसे पहला मुसलमान नौजवान अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान हुआ यही लड़का था जब मुसलमानों का लश्कर वापस आया तो लड़के की माँ आई कहने लगी अब्दुल वाहिद! मेरा हदया कहाँ है? वह क़बूल हो गया कि मरदूद हो गया? यह माँ का जज़्बा है आज की माँ कहती है कि मेरा बेटा जाए नहीं बाप कहता है कि मेरा बेटा तबलीग़ में चला गया तो नाकारा हो गया।

......☆......☆......☆......

ईसा अलैहिस्सलाम का ख़्वाब

ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में देखा कि एक गाए थी उसका माथा फटा हुआ दुम कटी हुई ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम कौन हो? कहा कि दुनिया कहा तेरा यह हाल क्या है? कहा जो मेरे आशिक़ हैं मेरे पीछे भागते हैं उन्होंने दुम तो काट दी लेकिन मुझे क़ाबू नहीं कर सके फिर कहा यह माथा क्यों फटा हुआ है?

कहा जो लोग मुझे छोड़ के भागते हैं मैं उनके पीछे भागती हूँ उन्होंने मुझे ठोकरें मार मार कर ज़ख़्मी कर दिया मैं उनको क़ाबू नहीं कर सकती।

......☆......☆......☆......

दुनिया की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ई रह॰ का क़ौल

इमाम शाफ़ई रह॰ ने कहा اِنَّ هٰذِهِ الدُّنْيَا تُخَادِعُنِىْ كَامْرَأَة لَسْتُ اَعْرِفُ حَالَهَا यह इसी का तर्जुमा है दुनिया मुझे धोका देने आती है 50, 70 साल की औरत सुर्ख़ी पाउडर लगाकर किसी को धोका दे सकती है हाँ जिसकी आंखें ख़राब हों वह उसे धोके में डाले तो अलग बात है यह दुनिया मुझे धोका दे रही है मैं उसकी सुर्ख़ी के पीछे उसकी सियाही को जानता हूँ मैं उसके हुस्न के पीछे उसकी बदसूरती को जानता हूँ मैं उसकी चमक के पीछे उसके अंधेरों को जानता हूँ मैं उसकी खुशियों के पीछे उसके ग़मों की बारिश को जानता हूँ, مُدَّتَا لِىْ يَمِيْنُهَا उसने मुझे हाथ दिया कि आज وَقَطَعْتُهَا وَشِمَالَهَا मैंने वह हाथ भी काट लिया और उसका उल्टा हाथ भी काट लिया منع الى حرامها واجتنبت حلالها अल्लाह ने कहा था हराम न खाना मैंने हलाल को भी छोड़ दिया यानी मैंने हलाल को भी फूंक फूंक कर इस्तेमाल किया فَرَاَيْتُهَا مُحْتَاجَةً ग़ौर किया तो वह बेचारी खुद ही मोहताज थी।

......☆......☆......☆......

रुबई बिन आमिर का वाक़िआ

यह काम इस उम्मत को मिला है इसलिए हज़रत रुबई बिन आमिर रज़ि॰ अल्लाह उनको जज़ा दे बात को ऐसे खोल दिया जैसा कि रौशन दिन होता है रुस्तम ने पूछा यह ईरान की फ़ौज

का बड़ा सालार لـمـاذا اتيـت क्यों आए हो? भूक की वजह से कपड़ा चाहिए क्यों आए हो? रुबई बिन आमिर रज़ि॰ ने फ़रमाया नहीं।

اَنَّ اللّٰهَ بَعَثَنَا आए नहीं हैं हमें अल्लाह ने भेजा है।

﴿لِنُخْرِجَ الْعِبَادَ مِنْ عِبَادَةِ الْعِبَادِ اِلٰى عِبَادَةِ رَبِّ الْعِبَادِ وَمِنْ جَوْرِ الْاَدْيَانِ اِلٰى عَدْلِ الْاِسْلَامِ وَمِنْ ضِيْقِ الدُّنْيَا اِلٰى سَعَتِهَا وَاَرْسَلْنَا بِدِيْنِهٖ اِلٰى خَلْقِهٖ حَتّٰى تَنْقَضٰى مَوْعَدُ اللّٰهِ فَقَالَ رُسْتَمُ فَمَا مَوْعَدُ اللّٰهِ؟ قَالَ: اَلْجَنَّةُ لِمَنْ قُتِلَ وَالنَّصْرُ لِمَنْ بَقِىَ﴾

हमें अल्लाह ने भेजा है कि जाओ मेरे बंदों को कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में ले आओ मेरे बंदों को लोगों की गुलामी से निकाल कर मेरा गुलाम बना दो लोगों की इबादत से निकाल कर मेरा इबादत गुज़ार बना दो बातिल के जुल्म से निकाल कर इस्लाम के अद्ल पर लाओ दुनिया की तंगी से निकाल कर आख़िरत की राहत पा ले आओ अल्लाह ने हमें दीन देकर भेजा है तुम्हें दावत देंगे यहाँ तक कि अल्लाह का वादा पूरा हो उसने कहा क्या वादा है अल्लाह का? कहा हम में से जो क़त्ल होगा जन्नत में जाएगा और जो ज़िंदा रहेगा तुम्हारा मालिक बनेगा तुम्हारी गर्दन तोड़ेगा और अल्लाह साथ था दावते इल्लल्लाह का काम था तो सारी ताक़तें टूटती चली गईं क़ैसर गया वह फ़ारस गया वह किसरा गया वह यमन गया नव्वे बरस में तुर्किस्तान तक, इस्तंबूल तक, उंदुलस, पुर्तगाल, जुनूबी फ़्रांस और उधर अलजीरिया, मराकश लीबिया, अल्जज़ाइर, तिवनिस अफ़्रीक़ा सारा हमारे पाकिस्तान में मुल्तान में कश्मीर तक यह 90 बरस में बोंडरी खींची गई है यह जहाज़ नहीं थे घोड़े ऊँट व ख़च्चर गधे थे सारी काएनात उनके क़दमों में सरकती चली गई तो तबलीग़ कोई

जमाअत नहीं اَلتَّبْلِيغُ فَرِيْضَةٌ كُلِّ مُسْلِمٍ तबलीग़ हर मुसलमान का फ़र्ज़ है मुसलमान बन कर सारे आलम को इस्लाम की दावत दें हर मुसलमान औरत के ज़िम्मे है कि सारे आलम की औरतों को इस्लाम की दावत दे इसी पर इस उम्मत को इम्तियाज़ है क्यों? دَعْوَتْ اِلَى اللهِ उनका काम है यह एक नेकी करेगा मैं उसको दस दूंगा مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا अल्लाह की बारगाह में हुज़ूर स॰ ने अर्ज़ किया या अल्लाह! दस भी ठीक हैं।

......☆......☆......☆......

सलमान फ़ारसी रज़ि॰ से एक सवाल

सलमान फ़ारसी रज़ि॰ से किसी ने कहा कि तुम्हारे नबी स॰ ने तुम्हें बैतुलख़ला में जाने का तरीक़ा भी बताया है फ़रमाया हाँ! हमारे नबी स॰ ने हमें हत्ता कि बैतुलख़ला तक जाने का तरीक़ा भी बताया है यह कैसी अज़ीम किताब है कि चलने का भी तरीक़ा बताया बड़ी आजज़ी और तवाज़ो से चलते हैं وَاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُوْنَ قَالُوْا سَلَامًا कोई उनसे जहालत का मुआमला करे तो वह उनसे वही जहालत का मुआमला नहीं करते बल्कि उनसे सलामती की बात करते हैं इसका मतलब यह कि कोई बुरा सुलूक करे तो उससे क़ता तअल्लुक़ करके अलग हो जाते हैं नहीं यह जहालत के बदले में सलामती का रवय्या इख़्तियार करते हैं सलामती का बोल बोलते है। उनकी रात कैसी होती है يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا कभी सज्दे में होते हैं कभी क़याम में होते हैं एक सहाबी रज़ि॰ रात को नमाज़ पढ़ रहे हैं और नमाज़ में रो रहे हैं اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ कह रहे हैं सुबह मस्जिद में आए तो आप स॰ ने फ़रमाया आज तेरे रोने ने आसमान के फ़रिश्तों को भी रुला दिया।

रात कैसी होती है यह क़ुर्आन ने बताया दिन कैसा होता है

यह कुर्आन ने बताया وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا तो पूरा दस्तूरे हयात कुर्आन बताता है कि भाई! जो तक़्वा इख़्तियार करेगा यह सब कुछ ले जाएगा यह किताबे कामिल है इसमें बातिल की मिलावट कोई नहीं لَا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِه‍ٖ

......☆......☆......☆......

अज़ाब जल्दी शुरू हो गया

सुलेमान बिन अब्दुल मलिक बड़ा ख़ूबसूरत था वह एक वक़्त में चार निकाह करता था चार दिन के बाद चारों को तलाक़ देकर चार और करता था उनको तलाक़ देकर चार और करता था बांदियां अलग थीं लेकिन 35 साल की उम्र में मर गया चालीस साल भी पूरे नहीं किए दुनिया में कितनी अय्याशी की उन्होंने उसके मुक़ाबिल उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ 41 साल उनके भी पूरे नहीं हुए लेकिन उसने अल्लाह को राज़ी करना शुरू कर दिया अब देखिए कि जब सुलेमान को क़ब्र में रखने लगे तो उसका जिस्म हिलने लगा तो उसके बेटे अय्यूब ने कहा मेरा बाप ज़िंदा है हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा عَجَّلَ اللّٰهُ بِالْعُقُوْبَتِهٖ बेटा! तेरा अब्बाजान ज़िंदा नहीं है अज़ाब जल्दी शुरू हो गया है जल्दी दफ़न करो हालांकि ज़ाहिरी तौर पर सुलेमान बिन अब्दुल मलिक बनू उमय्या के ख़ूबसूरत शहज़ादों में से था उमर बिन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उसको क़ब्र में उतारा और चेहरे से कपड़े को हटाकर देखा तो चेहरा क़िब्ले से हट कर दूसरी तरफ़ पड़ा था और रंग काला सियाह हो गया था और उसी तख़्त पर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने बैठ कर वह काम किया जो अल्लाह की किताब कुर्आन कहता है जो अल्लाह के हबीब स० ने कहा अल्लाह से तअल्लुक़ बनाया फिर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

रह॰ ने अपने एक वज़ीर को बुलाया जिसने सुलेमान को मशवरा दिया था कहा मैं तीनों ख़लीफ़ों का चेहरा क़ब्र में देख चुका हूँ उनके चेहरे क़िब्ले से हट चुके थे तुम मुझे देखना मेरे साथ क्या होता है जब उमर को दफ़न करने लगे तो अल्लाह ने पहले ही इन्तिज़ाम कर दिया था जब क़ब्र में उतारने लगे तो एक हवा चली और एक पर्चा गिरा जब पर्चे को उठा कर देखा तो उस पर लिखा था कि पहली सतर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम दूसरी सतर بَـرَاءَةٌ مِـنَ الـلّٰـهِ عُـمَـرَ بْـنَ عَبْدُ الْعَزِيْزِ مِنَ النَّارِ यह परवाना है उमर के लिए अल्लाह की तरफ़ से निजात का तो उन्होंने परवाना समेत उनको क़ब्र में रख दिया वज़ीर ने उनके कफ़न की गिरह को खोला और वह चेहरा क़िब्ले की तरफ़ था और ऐसा लगा जैसे चौदहवीं का चांद कब्र में उतर आया उसने अल्लाह से दोस्ती लगा ली थी। तो भाइयो! यह मुबारक मज्मूआ यह मुबारक रातें कुर्आन का ख़त्म यह सारी बातें क़ुबूलियत की हैं जो अल्लाह से मांगेगा अल्लाह देगा।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

......☆......☆......☆......

एक अंसारी सहाबिया की मोहब्बत

एक अंसारिया को यह पता चला कि हुज़ूरे अक्रम स॰ उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए वह बेक़रार निकली अभी पर्दे का हुक्म भी नहीं आया था 5 हिज्री में पर्दे का हुक्म आया है यह ग़ज़वे उहुद तीन हिज्री में हुआ था। तो बड़ी बेचैनी से कह रही हैं مَـاذَا فَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ مَاذَا فَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ؟ एक आदमी ने आकर कहा قُتِلَ زَوْجُكِ उमर बिन जमूअ की बीवी ने यह ख़बर दी कि قُتِلَ زَوْجُكِ तेरा शौहर क़त्ल हो गया اِنَّـا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ مَاذَا فَعَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ यह बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हुआ उसने फिर कहा

कि तेरा बेटा शहीद हो गया उसने कहा انا للہ وانا الیہ راجعون बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हाल है? उसने कहा तेरा भाई भी क़त्ल हो गया कहा कि انا للہ وانا الیہ راجعون यह तो बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हाल है? उस औरत का ख़ाविंद, बेटा और भाई तीनों शहीद हो गए तो उसके पीछे कोई न रहा लेकिन हुज़ूरे अक्रम स॰ की मुहब्बत ऐसी है कि उसको उनकी परवाह ही नहीं, कहा गया कि हुज़ूर स॰ ठीक हैं حتی تقر عینی जब तक हुज़ूरे अक्रम स॰ को देख कर मेरी आंखें ठंडी न हो जाएं तो मुझे चैन और सुकून नहीं आ सकता तो दौड़ लगाई उहुद की तरफ़ जब वहाँ जाकर हुज़ूर स॰ को देखती है कि सामने से हुज़ूर स॰ तशरीफ़ ला रहे हैं और यह औरत आप स॰ के सामने बैठ कर आप स॰ के कुर्ते के दामन को पकड़ कर कहती है या रसूलुल्लाह स॰! आप ज़िंदा हैं तो सारा जहाँ भी मिट जाए तो मुझे कोई ग़म नहीं।

......☆......☆......☆......

आप स॰ की जाफ़र रज़ि॰ से मुहब्बत

आप स॰ हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के घर गए यह आप स॰ के चचाज़ाद भाई थे बेचारे पहले से धक्के खा रहे थे पांच हिज्री आप रज़ि॰ हब्शा में रहे फ़त्हे ख़ैबर पर वापस तशरीफ़ ले आए एक साल भी अपने पास नहीं रखा कि फिर वापस कर दिया जब यह शहीद हुए तो आप स॰ ने फ़रमाया ऐ जाफ़र रज़ि॰ तेरा जाना मुझ पर बहुत ही गिराँ गुज़रा है लेकिन इसके बावजूद तेरा कुर्बान होना मुझे ज़्यादा महबूब है तरी जुदाई मुझे गिराँ है और तेरा मेरे साथ रहना इतना पसंद न होता जितना यह पसंद आ गया कि तू अल्लाह पर फ़िदा हो गया जब ख़ैबर के मौक़े पर जाफ़र आए तो

आप स॰ ने फ़रमाया कि तेरे आने से मुझे ख़ैबर के फ़तेह से भी ज़्यादा खुशी हुई, उनके घर गए तो हज़रत अस्मा रज़ि॰ आटा पीस कर रख के बच्चों को नहला कर चूल्हे पर बैठ गई थीं जब हुज़ूरे अक्रम स॰ तशरीफ़ ले आए तो आपका चेहरा मुतास्सिर था अस्मा रज़ि॰ ने आप स॰ के चेहरे पर देखा तो थोड़ी हिस बेदार हो गई कि जाफ़र के साथ कुछ हो गया है पूछने की हिम्मत नहीं थी हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के तीन बेटे थे औन, मुहम्मद और अब्दुल्लाह रज़ि॰ सबसे बड़े थे औन रज़ि॰ दरमियाने मुहम्मद रज़ि॰ सबसे छोटे अब्दुल्लाहे थे उन तीनों को आप स॰ ने बुलाया और उनको प्यार करते हुए रोने लगे उनकी तरफ़ मुंह करके तो हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने देखा आंसू टपकते हुए पूछा या रसूलुल्लाह स॰ जाफ़र रज़ि॰ का क्या बना चूंकि आपके आंसू छलक रहे थे वही बताने के लिए काफ़ी थे लेकिन डूबते को तिन्के का सहारा कि शायद ज़ख़्मी हुए हों या शायद ज़िंदा हों तो आप स॰ ने फ़रमाया अस्मा احتسب। तू अपने अल्लाह से अज्र की उम्मीद रख वहीं गिर कर बेहोश हो गई ऐसे घर टूटे तब इस्लाम यहाँ आकर हम तक पहुंचा, भाइयो! हमारे घर नहीं टूटेंगे हम इस क़ाबिल नहीं हैं आज़माने को नहीं तअल्लुक़ चाहिये हमें अल्लाह इतना नहीं आज़माएगा कुछ तो क़दम उठाऐं इस काम को अपने ज़िम्मे तो समझें कि दीन का काम करना मेरे ज़िम्मे है पहुंचाना हमारे ज़िम्मे है तब्लीग़ दरमियान में एक वास्ता है एक घंटे मैंने बात की है उसमें कहा कि तब्लीग़ी जमाअत का मिम्बर बनें।

दो बातें की हैं अल्लाह के वास्ते अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह स॰ के हुक्मों के पाबंद बनके चलो वरना बर्बाद हो जाऐंगे अपनी औरतों को भी सम्झाओ और अपने आप को भी सम्झाओ अल्लाह के रास्ते में खुद भी निकलो और अपनी औरतों

को भी निकालो।

......☆......☆......☆......

हज़रत इस्माईल रह० का वाक़िआ

इमाम इस्माईल रह० क़ुर्आन पढ़ रहे थे एक बद्दू साथ बैठा हुआ था जब इमाम इस्माईल रह० ने यह आयत पढ़ी وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْا اَيْدِيَهُمَا الخ चोर मर्द और चोर औरत का हाथ काटो आगे है ان اللّٰه غفو الرحيم तो बद्दू के कान खड़े हुए और कहने लगा यह किसका कलाम पढ़ रहे हो तो उन्होंने कहा कि यह अल्लाह का कलाम है तो बद्दू ने कहा لَيْسَ كَلَامُ اللّٰهِ यह अल्लाह का कलाम नहीं है यह ऊँट चराने वाला कह रहा है कि यह अल्लाह का कलाम नहीं है फिर उन्होंने सोचा कि وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ बद्दू ने कहा यह है अल्लाह का कलामे अल्लाह इमाम ने कहा क्या तुम आलिम हो? कहा नहीं फिर तुम्हें कैसे पता चला कि وَاللّٰه غَفُوْرٌ الرَّحِيْمٌ है और यह وَاللّٰه عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ है बद्दू ने कहा अल्लाह के बंदे पीछे तो देखो क्या कह रहा है चोर का हाथ काट दो इस हुक्म के साथ, غَفُوْرُ الرَّحِيْم का लफ़्ज़ जुड़ता नहीं غَفُوْرُ الرَّحِيْمُ لَمْ يَحْكُمْ بِقَطْعِ عَزِيْزِ حَكِيْمِ पीछे हुक्म के साथ जोड़ खाता है غَفُوْرٌ رَحِيْمٌ पिछले हुक्म से जोड़ नहीं खाता यह बारीकी आज किसको समझ आ सकती है ये तर्जुमा आप को बताया था किसी ने तो ज़रूरत पड़ी वह तो क़ुर्आन की रूह को समझते थे हम रूह नहीं समझते लेकिन फिर भी हमें ज़रूरत है يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا कितनी दफ़ा क़ुर्आन में हमें पुकारा है? कभी हमने सोचा है कि क़ुर्आन में यह 90 दफ़ा हमें पुकार कर हमसे मुतालबा करता है अल्लाह मियां हमें इसमें बहुत सारे अहकाम देना चाहते हैं और इसी तरह बहुत सारे अहकाम ऐसे हैं जो हुज़ूरे अक्रम स० की

ज़िंदगी में थे और हमारे ज़िम्मे नहीं हैं। मिसाल के तौर पर يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا यह हुक्म आज कोई नहीं। يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا आज यह हुक्म कोई नहीं। يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ، यह हुक्म आज कोई नहीं يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا الخ، इसी तरह के दस हुक्म ऐसे थे जो हुज़ूरे अक्रम स॰ के ज़माने के साथ ख़ास थे अब कोई नहीं।

फिर इनके अलावा बाक़ी में ग़ौर किया कि उसमें तकरार कितना है? एक ही हुक्म को अल्लाह पाक बार बार दोहरा रहा है: يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اتَّقُوْا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَافَّةً يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا آمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ

इन तमाम तकरार को जमा कर दिया जाए एक ही हुक्म है बारबार कहा जा रहा है ऐ ईमान वालो! मुसलमान हो जाओ ऐ ईमान वालो! तक़्वा इख़्तियार करो वग़ैरा तकरार को अगर जमा किया जाए तो पंद्रह के क़रीब और निकल जाऐंगे तो 30/40 के क़रीब अहकाम रह जाऐंगे तो उन 30/40 बातों को आदमी पूरा करें इस अदद को आप हत्मी न समझें आगे पीछे हो सकता है मैं अंदाज़े से कह रहा हूँ इस वक़्त पूरा मेरे ज़ेहन में नहीं है जो चंद बातें हैं उन्हें आदमी कर लें तो हमेशा की ज़िंदगी बन जाए कितना आसान काम है इसको ज़िंदा करने के लिए हम कहते हैं निकलो भाई! हर मुसलमान चलता फिरता हुआ इस्लाम बन जाए और औरतें इस्लाम बन जाए अल्लाह ने क़ुर्आन में किसी औरत का नाम नहीं लिया सिवाए मरयम के।

औरत की ज़ात और उसके नाम तक भी पर्दे में हैं अमरीका में

आने से क्या अल्लाह का क़ानून बदलेगा? क़ानून वैसे ही रहेगा अल्लाह और रसूल से मुहब्बत हो तो अमरीका में रहना आसान है अगर मुहब्बत अल्लाह व रसूल से नहीं है तो मदीने में रहते हुए भी मुश्किल है।

......☆......☆......☆......

हज़रत आसिया का वाक़िआ

मुहब्बत हो जाए तो कोई रोक नहीं सकता। हज़रत आसिया फ़िरऔन की बीवी है मुहब्बत हो गई आसिया को ईमान पर ले आई ईमान अंदर रासिख़ हो गया पूरी मिस्र की हुकूमत को ठोकर मार मार दी नहीं चाहिए, लटका दो सूली पर सूली पर लटकाना आसान है सबसे पहले सूली का ईजाद करने वाला भी फ़िरऔन है हाथों में कील गाड़ के लक्ड़ी गाड़ देता था अब बारी आई आसिया की अगर वह कहती कि नहीं मानती तो दिल में ईमान था सिर्फ़ ज़बान से कह देती तो उसके लिए जाइज़ था मआफ़ था लेकिन ईमान की एक सिफ़त ऐसी आती है कि जान लगाना और जान पर खेल जाना महबूब बन जाता है तो वह उस सिफ़त में आ गई थी अभी उस आदमी से जो मर्ज़ी आए मनवालो उससे नीचे वाला ईमान हो तो वह हज़ारों बहाने करेगा यही बहाना काफ़ी है कि लोग क्या कहें गे लोगों को फ़ुर्सत मिलेगी कुछ कहने की।

......☆......☆......☆......

दीन के मुआमले में मख़्लूक़ को न देखो

एक छोटी किताब अंग्रेज़ी में है उसमें एक कहानी थी बाप बेटे दोनों गधे पर सवार जा रहे थे लोगों ने कहा देखो यह कैसे ज़ालिम हैं कम्ज़ोर सा गधा है दोनों उस पर बैठे हुए हैं तो बाप ने कहा बेटा तू उतर जा मैं बैठा रहता हूँ वरना लोग और भी कुछ

कहेंगे ताकि उनकी ज़बान बंद हो जाए आगे कुछ और लोग खड़े थे उन्होंने कहा यह कैसा ज़ुल्म है खुद सवार है छोटे से बच्चे को पैदल चला रहे हैं तो बाप ने कहा बेटा तू ऊपर आजा मैं नीचे चलता हूँ वरना लोग क्या कहेंगे? थोड़े लोग आगे खड़े थे उन्होंने कहा यह कैसा नाफ़रमान बेटा है? खुद सवार है और बाप को नीचे चला रहा है अब बेटा भी सवारी से उतारा और दोनों पैदल सवारी के साथ साथ चल दिए आगे कुछ लोग खड़े थे उन्होंने कहा कि यह कैसे पागल लोग है? सवारी साथ है और पैदल चल रहे हैं तो बाप ने कहा बेटा अब क्या करें तो बेटे ने कहा गधे को सर पर उठा लें गधे को सर पर उठाकर चल रहे हैं, तो वह तस्वीर अब भी मेरे ज़ेहन में है जो स्कूल के ज़माने में किताब में देखी थी।

......☆......☆......☆......

नमाज़ बाजमाअत के असरात

1982ई॰ में जब इंग्लिस्तान गए थे तो हमारे साथ डॉक्टर अम्जद साहब थे उनकी आदत ऐसी थी कि गोरों को भी दावत देना शुरू कर देते हैं तो एक गोरे को दावत दी तो उसने कहा कि इस्लाम तो मुझे प्यारा है लेकिन मुसलमानों से नफ़रत है इस्लाम अच्छा मज़हब है और मुसलमान बुरा है दूसरे साहब ने कहा कि पहले आप अमली तौर पर मुसलमान हो जाइये तो फिर हम मुसलमान हो जाएंगे इस तबलीग़ की मेहनत के ज़रीए से एक तो पूरा दीन सिखाने की दावत दी जा रही है कि हम पहले पूरे दीन को सीखें और अगली बात के लिए ज़ेहन बनाया जा रहा है कि सारी दुनिया के इंसानों के पास भी अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाना पड़े तो हमें जाना है यह दावते इल्लल्लाह हमारी ज़िम्मेदारी है इसी पर तो ये सारे मरातिब और फ़ज़ाएल हैं इस वक़्त इस्लाम में

जो देर हो रही है हमारी वजह से हो रही है हम दो साल पहले कैनेडा गए हमारे साथ ये वाक़िआ पेश आया वहाँ पर पूरी दुनिया की सबसे बड़ी आबशार गिरती है (जिसको नया गिरा आबशार कहते हैं) लाखों इंसान वहाँ पर देखने के लिए आए होते हैं हम उसके क़रीब से गुज़र रहे थे तो नमाज़ का वक़्त हो गया तो हमने यहीं नमाज़ पढ़ने का इरादा कर लिया हमने एक तरफ़ होकर अज़ान दी और चादरें बिछाईं तो एक अमरीकन कुर्सी पर बैठ कर हमें देखता रहा हमने उसी आबशार की नहर से वज़ू किया और नमाज़ की तय्यारी करने लगे तो वह कहने लगा कि आप मुसलमान हैं? हमने कहा हाँ हम मुसलमान हैं तो उसने कहा कि मेरे भी कुछ दोस्त मुसलमान हैं जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो वह हमारे क़रीब हो गया तो कुछ साथियों ने कहा कि आप मुसलमान क्यों नही हो जाते? तो कहने लगे कि मेरा दिल चाहता है शायद मेरी बीवी न माने तो मैंने कहा कोई और बीवी अल्लाह तआला देगा इसकी क्या बात है? तो वह कल्मा पढ़ कर मुसलमान हो गया तो हमने उसको एक इस्लामिक सेंटर का पता दे दिया कि आप वहाँ तशरीफ़ ले जाइए इन्शाअल्लाह मज़ीद रहनुमाई मिल जाऐगी। केलिफ़ोर्निया में एक अरब लड़का खड़ा था पगड़ी कुर्ता पाजामा पहना था एक लड़की आ गई और कहने लगी तुम कौन हो? तो अरब कहने लगा कि मुसलमान उस लड़की ने पूछा कि यह लिबास कैसा है? उसने कहा कि मेरे नबी का है तो उसने कहा कि यह तो बहुत ख़ूबसूरत लिबास है दूसरे मुसलमान यह क्यों नहीं पहनते हैं अरब बोला कि यह उनकी ग़फ़लत है और ग़लती है फिर उसने कहा कि इस्लाम क्या है? मुझे बताओ तो सही? पांच मिनट बात की तो मुसलमान हो गई इस वक़्त जो देर

हो रही है यह हमारी तरफ़ से हो रही है कि हम तब्लीग़ को अपना काम बना कर दीन सीख कर पूरी दुनिया में फैल जाएं तो मुल्कों के मुल्क इस्लाम में आऐंगे अब आप बोलिए और बताइए कौन कौन तय्यार है इसके लिए अब आप की बारी है हमने अपनी बात अर्ज़ कर दी अब आप फ़रमाऐं कि कोई भाई 4,4 माह के लिए नक़द तय्यार है।

......☆......☆......☆......

आजज़ी पर गुनहगारों को मआफ़ी

बनी इस्राईल में एक नौजवान था। गुनहगार बड़ा नाफ़रमान। लोगों ने शहर से निकाल दिया। वीराने में जाकर पड़ गया वहाँ बीमार हो गया कोई पूछने न आया। मरने का वक़्त आ गया तो आसमान को देख कर कहने लगा या अल्लाह मुझे अज़ाब देकर तेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होगा। मुझे मआफ़ करके तेरा मुल्क थोड़ा नहीं होगा तू देख रहा है لَااَحَدَ قَرِيْبًا وَّلَا حَمِيْمًا न मेरा कोई रिश्तेदार मेरे पास है न मेरा कोई दोस्त मेरे पास है सबने मुझे ठुकरा दिया है मैं हूँ ही इस काबिल को ठुकराया जाऊं और तू मेरी उम्मीद को पूरा फ़रमा दे और मुझे महरूम न फ़रमा और मुझे मआफ़ कर दे बेशक तेरा फ़रमान है اِنِّىۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ यह कहा और उसकी जान निकल गई मूसा अलैहिस्सलाम पर वहि आई कि मेरा एक दोस्त फ़लां वीराने में मर गया है उसे जा के गुस्ल दो और जनाज़ा पढ़ो और जितने शहर के बदक़माश और नाफ़रमान हैं उनसे कहो कि उसके जनाज़े में शिर्कत कर ली उनकी भी बख़्शिश कर दूँगा। यह जो ऐलान हुआ तो लोग भागे भागे गए कि हर कोई गुनहगार है। आगे जाकर देखा तो वही शराबी जुवारी ज़ानी। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम आप क्या कह रहे है यह तो ऐसा

था उन्होंने कहा या अल्लाह तेरे बंदे तो यह हैं आप वह कह रहे हैं अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह भी सच्चे हैं मैं भी सच्चा हूँ। यह ऐसा ही था जैसे यह कह रहे हैं लेकिन जब मरा है तो ऐसी बेबसी में मरा है और मुझे पुकारा है तो इस तरह तड़प के पुकारा है कि मुझे मेरी ज़ात की क़सम उसने तो सिर्फ़ अपनी ही बख़्शिश मांगी कमज़र्फ़ निकला सारे जहान की बख़्शिश मांगता तो मैं सबको मआफ़ कर देता। तो भाई यह जो तबलीग़ का काम हो रहा है दुनिया में कोई अलग मेहनत नहीं है बल्कि इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान ख़्वाह जिस शोबे से तअल्लुक़ रखता है अल्लाह का बंदा अल्लाह का फ़रमांबरदार बनके चल एक बात। अगली बात फ़रमांबरदारी कैसी हो हमने तो अल्लाह को नहीं देखा।

......☆......☆......☆......

महकमए पुलिस का एक वाक़िआ

मैं इस बात पर आप ही के महकमे का क़िस्सा सुनाता हूँ जब तक हाकिम की अज़मत न हो हुक्म की अज़मत दिल में नहीं आती। हाकिम की अज़मत होगी तो हुक्म की अज़मत आएगी। एक आपके एस पी हैं अब्दुल ख़ालिक़ साहब फ़ैसलाबाद में लगे हुए थे हमने ऐसी बात करते करते उनको तीन दिन के लिए निकाला उनकी ट्रांसफ़र हो हो गई फिर उन्होंने चार महीने लगाए। अढ़ी आ गई वह चलने के लिए फ़ैसलाबाद आ गए तो उस वक़्त जो एस पी था ज़फ़र अब्बास साहब वह मेरा क्लास फ़ेलो था लाहौर में स्कूल में हम इकट्ठे पढ़ते थे हम दोनों उसको मैं और अब्दुल ख़ालिक़ मिलने के लिए गए। वह जो पुलिस का बड़ा थाना है उसका एक दरवाज़ा बंद रहता है और एक दरवाज़ा खुला रहता है अवाम के लिए हमें वह क़रीब था हम वहाँ से अंदर जाने लगे

सामने सिपाही खड़ा था तो अब्दुल ख़ालिक़ साहब ने कहा भाई दरवाज़ा खोलना उसने दोनों को देखा सूफ़ी साहब नज़र आए। उसने कहा अतूं आओ (यानी इधर से आओ) उन्होंने कहा भाई तेरी बड़ी मेहरबानी खोल दे दरवाज़ा। उसने कहा अतू आओ (यानी इधर से आओ) उन्होंने कहा भाई तेरी बड़ी मेहरबानी खोल दे दरवाज़े उसने कहा सन्निया नई बंदाए अतूं आओ। पहले तो तबलीग़ी उसूल अपनाया भाई बड़ी मेहरबानी खोल दे जब वह न माना तो कहा मैं अब्दुल ख़ालिक़ एस पी। फिर वह ठक (सलूट ज़ोरदार) चाबी भी निकल आई और ताला भी खुल गया दरवाज़ा भी खुल गया कभी आगे चले कभी पीछे चले सर सर। बाद में मैंने अब्दुल ख़ालिक़ साहब से कहा आज मुझे एक बडी बात समझ में आई तेरी बरकत से कहने लगा क्या। मैंने कहा जब तक हाकिम की अज़मत नहीं होगी हुक्म की अज़मत दिल में नहीं आ सकती। उसने आप को पहले कह दिया कि अतूं आओ फिर सलूट मार दिया फिर ताला खोल दिया फिर दरवाज़ा खोल दिया फिर आगे पीछे भाग रहा है क्यों। पहले तुम्हें सूफ़ी सूमझ रहा था फिर तुम्हें एस पी समझा कि यह एस पी तो मेरा बहुत कुछ कर सकता है लिहाज़ा सारा वजूद खुशामद में ढल गया बस यहाँ से कट कर अल्लाह रसूल की इताअत नहीं आ सकती। तो भाई एक तरबियत होती है आपने सिपाही बनने की तरबियत ले है नां हम मुसलमान बनने की तरबियत लें मुसलमान कौन होता है जो अल्लाह के हुक्म पे उठता है तो भाई ये दो बातें हो गईं कि हम अल्लाह की मानें कैसे मानें अल्लाह के हबीब के तरीक़े पर मानें। अगर आप ये दो बातें सीख लें नां तो मैं आप को मिम्बरे रसूल पर कसम खा के कहता हूँ कि आपको रात को गश्त करना और हमारा तहज्जुद

पढ़ना आपके गश्त का अज्र कल क़यामत के दिन हमारी तहज्जुद से बढ़ जाएगा। आप का ट्रेफ़िक को कंट्रोल करना गर्मी में पसीनों पे पसीने बह रहे हैं बुरे हाल हो रहे हैं थक रहे हैं आपको क़सम खा के कहता हूँ हमारा सारा दिन क़ुर्आन पढ़ना और आपका दो घंटे चौक में खड़े हो के ड्यूटी देना सारे दिन के क़ुर्आन पढ़ने से ज़्यादा अफ़ज़ल है ये दो बातें पहले सीखें यह शर्त है यह जो दो महकमे हैं ना फ़ौज और पुलिस ये बराहे रास्त इबादत हैं पुलिस का महकमा सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि० ने क़ायम किया था आपकी बुनियाद हज़रत उमर रज़ि० ने रखी है कैसे पाक हाथों से आपके महकमे की बुनियाद रखी गई है। अगर ये दो बातें पैदा हो जाएें तो आपका रातों को फिरना मशक़्क़त उठाना जिहाद फ़ीसबीलिल्लाह कहलाएगा और आपका उन ज़ालिमों के हाथों शहीद हो जाना सारे गुनाहों की तत्हीर करवाकर जन्नतुल फ़िरदौस के आली दरजात तक पहुंचाएगा। यह कोई मामूली महकमा नहीं है सारे पुलिस वालों को बुरा समझते हैं। अरे पुलिस वाले तो फ़रिश्ते बन जाएें अगर दो बातें सीख लें तो तहज्जुद गुज़ारों से आगे खड़े होंगे क़यामत के दिन। सारे दिन की तसबीह फेरने वाले सारे दिन नफ़ीलें पढ़ने वालों से पता चलेगा वह सिपाही आगे जा रहा है जन्नत के आलीशान दर्जों में अरे यह क्या हो रहा है भाई यह मुसलमान की जान माल की हिफ़ाज़त के लिए खप्ता था तुम अपनी इबादत करते थे तुम और ये बराबर कैसे हो सकते हैं। सारे लोग आपको बुरा समझते हैं आप भी ये कहते हैं कि हम तो भाई हैं ही ऐसे नहीं नहीं आप बड़े क़ीमती हैं अपनी पहचान करें तरीक़ा ठीक हो बस। यह बराहे रास्त इबादत है तिजारत में नियत करनी पड़ेगी तब इबादत बनेगी ज़िराअत में

नियत करनी पड़ेगी तब इबादत बनेगी और अफ़वाज बराहे रास्त इबादत है लेकिन ये दो बातें जो मैंने पहले अर्ज़ की हैं उनका सीखा हुआ होना ज़रूरी है। फिर अल्लाह से आप के दो नफ़िल वह काम करवाएंगे जो कलाशिन कोफ़ भी नहीं करवा सकती।

......☆......☆......☆......

तबलीग़ का काम ट्रेनिंग है

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ मदाइन के अफ़सर बन कर आए। बड़े गवर्नर बनके आए तो चोरियां शुरू हो गईं। पहले तो कोशिश करते रहे कि ऐसे ही ठीक हो जाऐं फिर कहने लगे अच्छा भाई कागज़ क़लम लाओ। लिखा मदाइन के गवर्नर की तरफ़ से जंगल के दरिंदों के नाम। आज रात तुम्हें जो भी चलता फिरता मशकूक नज़र आए उसे चीरफाड़ देना। अपने दस्तख़त करके फ़रमाया शहर के बाहर इसको कील गाड़ के लटका दो। उधर राब्ता दो रकअत के ज़रीए ऊपर और इधर जंगल के दरिंदों को हुक्म। उधर राबता ऊपर है तो ख़ाली मुहरे हैं शतरंज के मुहरों की तरह। अच्छा कहा भाई आज दरवाज़ा खुला रहेगा शहर का दरवाज़ा बंद नहीं होगा। जूंही रात गुज़री शेर गुर्राते हुए अंदर चले आए किसी को जुरअत नहीं हुई बाहर निकल सके। आपके दो नफ़िल वह काम करेंगे जो बड़े बड़े हथ्यार काम नहीं कर सकेंगे और उन सारे ज़ालिमों और बदमाशों की अल्लाह तबारक व तआला गर्दनें मरोड़ कर तुम्हारे क़दमों में डाल देगा सिर्फ़ अल्लाह और रसूल वाला तरीक़ा सीख लें तो उसकी भी ट्रेनिंग चाहिए बग़ैर ट्रेनिंग के कैसे आएगा। तो जो तबलीग़ का काम है उस ज़िंदगी की ट्रेनिंग है कि जिसमें हमारे सारे जिस्म के आज़ा अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ताबे हो जाऐं।

सहाबा का जानवरों को हुक्म

हज़रत उक़्बा इब्ने नाफ़े जब पहुंचे तैवनुस में तो कहरवान का शहर अब भी मौजूद है यह पहले जंगल था ग्यारह किलोमीटर लम्बा चौड़ा जंगल था यहाँ छाओनी बनाई थी तो लशकर में उन्नीस सहाबी थे उन्होंने सहाबा को लेकर एक टीले पर चढ़ कर ऐलान किया कि जंगल के जानवरो! हम अल्लाह और उसके रसूल के गुलाम हैं यहाँ छाओनी बनानी है तीन दिन में ख़ाली कर दो उसके बाद जो हमें मिलेगा हम उसे क़त्ल कर देंगे यह वाक़िआ ईसाई मुअर्रिख़ीन ने भी अपनी किताबों में नक़ल किया है। ईसाई मुअर्रिख़ीन इस वाक़िए को लिखते हैं इसकी हक़्क़ानियत का एतिराफ़ करते हैं तो तीन दिन में सारा जंगल ख़ाली हो गया और उस मंज़र को देख कर हज़ारों अमरीकन क़बाइल इस्लाम में दाख़िल हो गए कि इनकी तो जानवर भी मानते हैं हम कैसे न मानें? ठीक है भाई अब यह तो पुलिस वालों की भी ज़रूरत है सिविल वालों की भी और सारे दुनिया के मुसलमानों की भी ज़रूरत है मर्दों औरतों की ज़रूरत है कि हम अल्लाह और रसूल की मान के चलें अल्लाह के नबी की बात यह है कि हमारे नबी पाक स. को अल्लाह तआला ने आख़िरी नबी बनाया है आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा आप स. सारे इंसानों के सारे जिन्नात के और आने वाले क़यामत तक सारे जहानों के नबी हैं तो सारी दुनिया में इस्लाम का फैलाना आप स. के ज़िम्मे था लेकिन आप स. को तैइस साल के अर्सा गुज़रने के बाद अपने पास बुला लिया। तो अल्लाह तआला ने पूरी की पूरी उम्मत को हुज़ूर स. के ख़त्मे नुबूवत की वजह से यह तबलीग़ की ज़िम्मेदारी सौंपी है।

......☆......☆......☆......

फ्रांस में दस लड़कियां मुसलमान

फ्रांस में पाकिस्तान की एक जमाअत पैदल चल रही थी तो एक गाड़ी रुकी और उसमें से दो लड़कियां निकलीं। उन्होंने जल्दी से पैसे निकाले कि जी आप नेक लोग लगते है ये पैसे हैं आप लोग सवार हो जाऐं सर्दी बहुत ज़्यादा है। वह पैदल चल रहे थे पैदल चलती हैं यूरप में जमाअतें उन्होंने कहा बहन हमारे पास पैसे तो हैं कहा फिर पैदल क्यों चल रहे हो इतनी ज़्यादा सर्दी में? कहा हम लोगों की ख़ैरख़्वाही में और अल्लाह पाक को राज़ी करने के लिए कि अल्लाह अपने बंदों से राज़ी हो जाए और उसके बंदे अल्लाह की मानने वाले बन जाऐं इसी लिए हम चल रहे हैं और हम उन सबके लिए दुआ करते हैं तो लड़की ने कहा हमारे लिए भी दुआ करते हो कहा हाँ आपके लिए भी करते हैं उस लड़की ने कहा मैं बताऊँ आप कौन हैं। कहा बताओ कहने लगी आप नबी हैं उन्होंने कहा आपको कैसे पता चला कि हम नबी हैं कहा हमारी किताब में लिखा है कि ये काम नबी किया करते हैं तो उन्होंने समझाया कि बहन हम नबी नहीं। उस नबी के उम्मती हैं जो हमारे ज़िम्मे नुबूवत वाली ज़िम्मेदारी लगा गया था اَلَا لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ अब मैं जा रहा हूँ मेरा पैग़ाम आगे पहुंचाना तुम्हारे ज़िम्मे है। तो हम उस काम की अदाएगी के लिए निकले हुए हैं तो दोनों लड़कियां मुसलमान हो गईं। एक ने उनसे रूट पूछा कि फ़लां दिन कहाँ होंगे एक दिन के बाद आठ लड़कियों को लेकर आई और उनको भी मुसलमान किया तो भाई यह उम्मत मुबल्लिग़े इस्लाम उम्मत है। आप पुलिस के भी सिपाही हैं इस्लाम के भी सिपाही हैं पुलिस के अफ़सर हैं इस्लाम के भी अफ़सर हैं इस्लाम का फैलाना भी आपके ज़िम्मे है जैसे अम्न व अमान क़ायम करना हुकूमत ने आपके ज़िम्मे लगाया है। भाई इस्लाम का फैलाना

अल्लाह के नबी ने आपके ज़िम्मे लगाया है। ता यह तबलीग़ का काम हो रहा है ये उन तीन बातों की मेहनत है कि अल्लाह की मानें। उसके नबी की तर्ज़ पर मानें जिस में एक पूरी ज़िंदगी है।

......☆......☆......☆......

मालिक बिन दीनार का वाक़िआ

मालिक बिन दीनार जा रहे थे। बाज़ार में एक बांदी देखी बड़ी ख़ूबसूरत बड़ी पुरकशिश। आगे उसके ख़ादिम। कहा बेटी! कहा क्या बात है? कहा मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूँ पहले बांदियों की ख़रीद व फ़रोख़्त होती थी और जो रईसज़ादे अय्याश होते थे। एक एक लाख दिरहम की ख़रीद करते थे। कहा बेटी मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूँ। वह हंसने लगी ابـتـلـى क्या मेरे जैसी को तू फ़क़ीर ख़रीदेगा? कहा हाँ मैं ख़रीदना चाहता हूँ। तो उसने ख़ुद्दाम से कहा इसको पकड़ लो मैं इसे आक़ा को दिखाउंगी चलो तमाशा ही रहेगा तो उस नौकरानी के आगे नौकर थे तो उन्हें पकड़ कर दरबार में ले आए। उसका सरदार तख़्त पे बैठा था तो हंसने लगी कहा आक़ा आज बड़ा लतीफ़ा हुआ। कहा क्या। कहा यह बड़े मियां कहते हैं मैं तुम्हें ख़रीदना चाहता हूँ। सारी महफ़िल हंसने लगी उसने कहा बड़े मियां! क्या आप वाक़ई ख़रीदना चाहते हैं? कहा हाँ मैं ख़रीदना चाहता हूँ। कहा क्या पैसे दोगे? कहने लगे वैसे तो बहुत ही सस्ती है। मैं ज़्यादा से ज़्यादा खुजूर की दो गुठलियां दे सकता हूँ। सिर्फ़ गुठलियां नहीं वह गुठलियां जिन्हें चूस कर फेंक दिया हो जिन पर ज़रा भी खुजूर न लगी हो। वह सारे हंसने लगे सरदार भी हंसने लगा बड़े मियां यह आप क्या कह रहे हैं? कहा बात यह कि उसमें बहुत सारी कमियां है इसकी वजह से कह रहा हूँ। कहा क्या हैं? कहा ख़ुशबू न लगाए तो उसके अपने पसीने से बदबू पड़ जाए। रोज़ाना दांत साफ़ न करे तो मुंह की बदबू से क़रीब बैठना मुश्किल हो जाए रोज़ाना कंघी न

करे ता सिर में जूएं पड़ पड़ कर तेरे सिर में भी पड़ जाऐं। चार साल और गुज़र गए तो बूढ़ी हो जाएगी। पेशाब पाख़ाना उसमें और ग़म उसमें दुख उसमें लड़ाई उसमें गुस्सा उसमें। अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए तुझसे मुहब्बत करती है। उसकी मुहब्बत सच्ची नहीं ग़र्ज़ की मुहब्बत है एक लौंडी मेरे पास भी है, ख़रीदोगे? कहा वह कौनसी है? कहा वह भी सुन लो वह मिट्टी से नहीं बनी मुश्क अंबर ज़ाफ़रान और काफ़ूर से बनी है। उसके चेहरे का नूर अल्लाह के नूर में से है (यह हदीस पाक का मफ़हूम है) उसकी कलाई सिर्फ़ कलाई सात दुनिया के अंधेरों में आ जाए तो सातों दुनिया के अंधेरे रौशनियों में बदल जाएंगे और उसकी कलाई सूरज को दिखाई जाए तो सूरज उसके सामने नज़र नहीं आएगा गुरूब हो जाएगा। समन्दर में थूक डाले समंदर मीठा हो जाए। मुर्दे से बात करे तो मुर्दे में रूह पैदा हो जाए ज़िंदों को एक नज़र देख ले कलेजे फट जाऐं अपने दुपट्टे को हवा में लहरा दे सारे जहाँ में ख़ुशबू फैल जाए सात समंदर में थूक डाल दे मीठे हो जाऐं ज़ाफ़रान के बाग़ात में और मुश्क के बाग़ात में परवान चढ़ी है तसनीम के चश्मे का पानी पिया और अल्लाह की जन्नत में परवान चढ़ी है अपनी मुहब्बत में सच्ची है बेवफ़ा हरगिज़ नहीं मुहब्बत में सच्ची है वफ़ा में पक्की है। न हैज़ है न निफ़ास न पेशाब है न पाख़ाना न गुस्सा है न लड़ाई हमेशा राज़ी वह हमेशा जवान वह हमेशा साथ रहती है। उस पे मौत नहीं आती। अब बता मेरे वाली ज़्यादा बेहतर है या तेरे वाली ज़्यादा बेहतर है? कहने लगा जो आपने बयान की वह बहुत बेहतर है कहा उसकी क़ीमत बताउं कहा बताओ? कहा दो गुठलियो से भी ज़्यादा सस्ती है कहा उसकी क्या क़ीमत है? कहा उसकी क़ीमत है अपने मौला को राज़ी करने में लग जा मख़्लूक़ को राज़ी करना छोड़ दे ख़ालिक़ को राज़ी करना अपना मक़्सद बना ले जब आधी रात गुज़र जाए जब सारे सो रहे हों तो उठ के दो रकअत अंधेरे में पढ़ लिया कर

यह उसकी क़ीमत है यह उसकी क़दर है जब ख़ुद खाना खाए तो ग़रीब को भी याद कर लिया कर कि कोई ग़रीब भी है कि जिसको पहुंचाऊं यह हो जाए तो यह तेरी हो गई। कहने लगा अपनी बांदी से तूने सुन लिया जो उसने कहा? कहा सुन लिया कहा तू अल्लाह के नाम पे आज़ाद सारे नौकर आज़ाद सारा माल सदक़ा। सारी दौलत सदक़ा और अपने दरवाज़े का जो पर्दा था अब वह उतार के कुर्ता बनाया अपना लिबास भी सदक़ा। उसने कहा जब तूने फ़ुक़रा इख़्तियार किया मेरे आक़ा मैं भी तेरे साथ अल्लाह को राज़ी करने निकलती हूँ फिर दोनों की मालिक ने शादी कर दी फिर दोनो अपने वक़्त के ऐसे लोग बने कि लोग उनकी ज़ियारत के लिए आते थे। अगर हुकूमत आप से मशक़्क़त लेती है तो तन्ख़्वाह भी तो देती है नां। लेकिन वह बेचारी छोटी सी है कि इतनी तन्ख़्वाह देती है हलाल चलने वाले के लिए ज़िंदगी मुश्किल हो गई।

......☆......☆......☆......

एक गुलूकार की तौबा

हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में एक गवय्या था छुप छुप के गाता था गाना बजाना तो हराम है छुप छुपा कर गाके वह अपने शौक़ पूरा करता था। लोग कुछ उसको पैसे दे देते थे। एक दफ़ा जब वह बूढ़ा हो गया आवाज़ ख़त्म हो गई तो आया फ़ाक़ा, आई भूक, अब गया जन्नतुलबक़ी में एक झाड़ी के पीछे बैठ गया और कहने लगा ऐ अल्लाह जब आवाज़ थी तो लोग सुनते थे जब आवाज़ न रही तो सुनना छोड़ गए तू सबकी सुनता है तुझे पता है मैं ज़ईफ़ हूं कम्ज़ोर हूं बेशक तेरा बेफ़रमान हूं पर ऐ अल्लाह मेरी ज़रूरत को पूरा फ़रमा। ऐसी आवाज़ लगाई ऐसी सदा बुलंद की हज़रत उमर रज़ि॰ मस्जिद में लेटे हुए थे आवाज़ आई कि मेरा बंदा मुझे पुकार रहा है उसकी मदद को पहुंचो। बक़ी में फ़रयादी

है उसकी फ़रयादरसी करो। हज़रत उमर रज़ि॰ नंगे पांव दौड़े। देखा तो बड़े मियां झाड़ी के पीछे अपना क़िस्सा सुना रहे हैं जब उन्होंने हज़रत उमर रज़ि॰ को देखा तो उठ कर दौड़ने लगे। कहा बैठो बैठो ठहरो ठहरो मैं आया नहीं बल्कि भेजा गया हूं कहा किसने भेजा है कहा जिसे तुम बूला रहे हो उसी ने भेजा है जिसे तुम पुकार रहे हो उसी ने भेजा है तो उसने आसमान पर निगाह डाली ऐ अल्लाह सत्तर साल तेरी नाफ़रमानी में गुज़रे तुझे कभी याद न किया जब याद किया तो अपने पेट की ख़ातिर याद किया तूने फिर भी मेरी आवाज़ पे लब्बैक कहा। ऐ अल्लाह मुझ नाफ़रमान को मआफ़ कर दे और ऐसा रोया कि जान निकल गई। मौत हो गई हज़रत उमर रज़ि॰ ने ख़ुद उसका जनाज़ा पड़ाया तो मेरो भाइयो। अल्लाह तआला पकड़ते इसलिये नही कि अल्लाह जल्लाजलालहु रहीम है करीम है और अपने बंदे पर रहम चाहते हैं अपने बंदे पर फ़ज़्ल करना चाहते हैं अपने बंदें को जहन्नम में नहीं डालना चाहते तो मेरे भाइयो! अल्लाह तआला ने दरवाज़े खोल दिए हैं मौत तक के लिए तौबा के दरवाज़े खुले हुए हैं بَابُ التَّوْبَةِ مَفْتُوحٌ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है जब तक आदमी की जान निकल कर हलक़ में न आए जाए ग़रग़रा के शुरू होने से पहले पहले तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है मर्दों के लिए भी औरतों के लिए भी।

......☆......☆......☆......

दुनिया की औरत अफ़ज़ल है

एक हदीस में आता है कि उम्मे सल्मा रज़ि॰ ने पूछा يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ نِسَاءُ الدُّنْيَا اَفْضَلُ اَمْ نِسَاءُ الْجَنَّةِ दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या जन्नत की हूरें अफ़ज़ल है? यह सवाल क्यों पैदा हुआ? दुनिया की औरत या मर्द तो गारे मिट्टी से बने हैं पेशाब पाख़ाने में है

और जन्नत की हूर को मुश्क से ज़ाफ़रान से काफूर से अल्लाह तआला ने वजूद बख़्शा है मुश्क अंबर ज़ाफ़रान काफूर चारों ख़ुशबुओं से फिर हमारे दुनिया के ये नाम बाक़ी तो बिल्कुल अलग है यह ज़ाफ़रान नहीं यह मुश्क नहीं जो नाफ़ा है हिरन का नहीं नहीं वह तो कोई और ही चीज़ होगी जब जन्नत के पानी का एक क़त्रा दुनिया में नहीं आसमान पे बैठ कर उंगली पे लगा के नीचे कर दिया जाए तो सारे जहान में ख़ुशबू फैल जाएगी तो जो ख़ुद ख़ुशबू है वह ख़ुश्बूदार कैसी होगी वह तो बनीं मुश्क अंबर ज़ाफ़रान काफ़ूर से हम बने गारे मिट्टी से तो उन्होंने पूछा कौन अफ़ज़ल है? हुज़ूर ने फ़रमाया بَلْ نِسَاءِ الدُّنْيَا ऐ उम्मे सल्मा रज़ि॰ दुनिया की औरत अफ़ज़ल है अच्छा لِمَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ क्यों वह कैसे? आपने इरशाद फ़रमाया وَصِيَامِهِنَّ وَصَلَاتِهِنَّ وَعِبَادَتِهِنَّ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उनकी नमाज़ की वजह से उनके रोज़े की वजह से उनकी इबादत की वजह से। यहाँ इबादत से मुराद क्या है कि पूरी ज़िंदगी अल्लाह के हुक्म में हो नमाज़ रोज़ा तो पहले आ गया ना हम नमाज़ रोज़ा को इबादत समझते हैं हज को इबादत समझते हैं नहीं इबादत का लफ़्ज़ जहाँ भी आया है हदीस में वहाँ इबादत से मुराद पूरी बंदगी है कि पूरी ज़िंदगी अल्लाह की बंदगी हो। अल्लाह की इताअत में हो, नबी की इताअत में हो। इन तीन शर्तों के साथ وَصَلَاتِهِنَّ وَصِيَامِهِنَّ وَعِبَادَتِهِنَّ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ रोज़ा और अल्लाह की इबादत की वजह से اَلْبَسَ اللّٰهُ وُجُوْهَهُنَّ النُّوْرَ उनके चेहरों पे नूर आएगा اَجْسَادُهُنَّ الْحَرِيْرُ जिस्म पर रेशमी जोड़े ख़ालिस सोने का ज़ेवर और और सोने की उनके सामने अंगीठियां होंगी। हमारे हाँ दस्तूर नहीं अरब के हाँ दस्तूर है कभी बैतुल्लाह में देखा होगा वह ऊद की लक्ड़ी डाल कर उसकी धुनी दे रहे होते हैं एक ऐसा प्याला सा होता है जिसमें धुनी देते हैं उसे मिज्मार

कहते हैं। और बादशाह अपने महल्लात में अंबर ऊद और मुश्क को उसमें रख कर उसको जलाते हैं जिससे उस का धुवां कमरे में उठता है सारे कमरे में उससे ख़ुश्बू फैलती है तो अल्लाह का हबीब स॰ फ़रमा रहा है कि उनकी वह अंगेठियां है जिससे ख़ुश्बू की महक उठेगी वह मोतियों की बनी हुई होगी लकड़ी की बनी हुई नहीं मोतियों की।

......☆......☆......☆......

उम्मे हिराम को जन्नत की बशारत

हज़रत उम्मे हिराम रज़ि॰ बिन्ते मलहान को जन्नत की बशारत है उनके घर में हुजूर स॰ तशरीफ़ लाए आराम किया उठे और मुस्कुराने लगे। क्या हुआ या रसूलुल्लाह? कहा अपनी उम्मत को देखा है समंदर पे जा रही है बादशाहों की तरह। कहा या रसूलुल्लाह स॰ मेरे लिए भी दुआ करें मैं भी उनमें हो जाऊं आप स॰ ने दुआ फ़रमा दी। हज़रत मआविया रज़ि॰ ने क़बरस की तरफ़ जो सफ़र किया उसमें अपने ख़ाविन्द के साथ यह भी गईं वहीं उनका इंतिक़ाल हुआ। क़बरस में आज भी उनकी क़ब्र मौजूद है अल्लाह के पैग़ाम को फैलाना मर्दों ने अपने ज़िम्मे लिया हुआ था। औरतों ने सब्र ज़िम्में लिया हुआ था। औरतें पूरी तरह तो नहीं निकल सकतीं अलबत्ता चंद शराइत के साथ निकल सकती हैं लेकिन उन्होंने अपने ख़ाविंद का हक़ मआफ़ किया हुआ था। जाओ हमारा हक़ मआफ़ है आगे चल कर इकट्ठे अल्लाह से ले लेंगे।

......☆......☆......☆......

हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने अपना हक़ मआफ़ कर दिया

हज़रत जुबैर रज़ि॰ अशरा मुबश्शरा में से हैं हवारिये रसूल स॰ हैं हुजूर स॰ ने फ़रमाया। ऐ तल्हा रज़ि॰ ऐ जुबैर रज़ि॰ जन्नत में

हर नबी के दो हवारी, बाडीगार्ड समझ लें। आम लफ़्ज़ों में दाऐं बाऐं साथ चलने वाले हर नबी के साथ होंगे। मेरे तुम तल्हा रज़ि० और ज़ुबैर रज़ि० हवारी हो जो मेरे दाऐं बाऐं मेरे हर वक़्त साथ चलोगे उस हवारी होने तक जो पहुंचाना है यह हज़रत ज़ुबैर रज़ि० का पहुंचना हज़रत अस्मा रज़ि० के साथ हुआ है कि हज़रत अस्मा रज़ि० ने अपना हक़ मआफ़ किया अपने हुकूक़ मआफ़ किए कि जाओ तुमसे मुतालबा नहीं अल्लाह से ले लूंगी। तुम जाओ फिर वह हाल आऐ ख़ुद अपना हाल सुनाती हैं कि मेरा हाल यह था कि ज़ुबैर रज़ि० हर वक़्त हुज़ूर स० के साथ रहते थे और मेरे घर में कुछ भी नहीं था काम भी ख़ुद करती थी बाहर का भी अंदर का भी। घोड़े का चारा भी लाना, और ऊंटों का चारा भी लाना, फिर घर का काम भी करना एक दिन, दो दिन, तीन दिन, फ़ाक़ा आया। बाप मौजूद मगर शिकायत नहीं हुज़ूर स० भी मौजूद मगर शिकायत नहीं। ख़ाविंद मौजूद मगर लड़ाई नहीं कि मेरा हक़ अदा करो। औरतें तो जल्दी से मुतालबा करती हैं मेरा हक़ अदा करो। और जो बहन हक़ मआफ़ करे कि जन्नत में इकट्ठा ले लूंगी एक और हदीस इससे मुतअल्लिक़ सुना दूं एक आदमी आ रहा दूसरा उसके पीछे आ रहा ऐ अल्लाह उसने मेरा हक़ मारा है हक़ ले के दो। और वह आदमी ऐसा था कि हक़ दुनिया में दे न सका मजबूरी की वजह से तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा क्या लेकर दूं उसके पास तो कुछ भी नहीं है। वह कहेगा उसकी नेकियां लेकर दे दे और मेरे गुनाह उसको दे दे। अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे ऊपर देखो वह ऊपर देखेगा तो जन्नत नज़र आएगी आलीशान अज़ीमुश्शान जन्नत सोने चाँदी के महल्लात। वह कहेगा या अल्लाह यह किस नबी की जन्नत है किस सिद्दीक़ रज़ि० व शहीद

की जन्नत है तो अल्लाह तआला कहेंगे उनकी नहीं है जो क़ीमत अदा कर दे उसकी है। कहा या अल्लाह उसकी क्या क़ीमत है। कि जो अपना हक़ मआफ़ कर दे यह उसकी है उसने कहा। अच्छा मैं उससे नहीं लेता तुझसे लेता हूँ तू दे मुझ को जन्नत। तो जो औरतें अपने ख़ाविंदों को दीन के लिए आगे बढ़ाऐंगी और अपना हक़ मआफ़ कर देंगी उनको अल्लाह देगा अपने ख़ज़ानों से देगा जैसे हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने अपना हक़ मआफ़ किया कहती हैं आई भूक न ख़ाविंद से शिकायत न अपने बाप से शिकायत न दरबारे रिसालत में कोई शिक्वा खुद सब्र और ख़ामोशी के साथ झेल रही हैं औरत ज़ात तो क्या मर्द भी भूक में कम्ज़ोर हो जाता है एक पड़ोसी औरत ने जो यहूदी औरत थी बकरी ज़बह करके उसका गोश्त पकाना शुरू कर दिया। अब जो उठी खुशबू तो कहने लगी मैं भूक से बेताब हो गई और मैं गई मैंने कहा आग लेने जाती हूँ। इसी बहाने से एक आध बोटी मुझे भी खिला देगी कहने लगी उस अल्लाह की बंदी ने हाल भी न पूछा। मेरे हाथ में आग पकड़ा दी। मेरे घर में तो तिंका भी न था पकाने का मैं आग को क्या करती मैंने आग फेंक दी फिर बैठ गई सब्र नहीं आया फिर गई आग लेने उसने आग दे दी खाने का पूछा नहीं फिर आग लाके फेंक दी। फिर सब्र नहीं आया। ये सारा मंज़र अल्लाह देख रहा है यह चाहती तो अपने ख़ाविंद से हक़ का मुतालबा करके घर में बिठा लेती नहीं बिठाया तो नबी स॰ का हवारी बना दिया और नबी स॰ के हवारी को जो जन्नत मिलेगी तो हज़रत अस्मा रज़ि॰ उसमें नहीं जाऐंगी? अस्मा रज़ि॰ भी तो वहीं जाऐंगी। अल्लाहुअक्बर। कैसी अक़्लमंद औरतें थी और क्या अक़्लमंद मर्द थे कि दुनिया की थोड़ी सी तक्लीफ़ उठा के इतने बड़े सौदे कर लिए

कहने लगी तीसरी मरतबा फिर गई उसने आग तो दे दी खाने का पूछा नहीं फिर मैं आ के बैठ के बहुत रोई। मैंने कहा ऐ अल्लाह किसको कहूं अब मैं किसको कहूं तू ही है अब तू ही दे, मैं किसको कहूँ अब अल्लाह को रहम आया। यहूदी आया खाना खाने के लिए उसने गोश्त का प्याला सामने रखा कहने लगा आज कोई आया था घर में? कहने लगी ये पड़ोसन अरब औरत आई थी आग लेने के लिए दो तीन दफ़ा मैं बाद में खाऊंगा पहले इतना ही प्याला भी उसको दे के आओ प्याला भरा हुआ और मैं अंदर ही बैठी रो रही थी। ऐ अल्लाह मैं क्या करूं ऐ अल्लाह मैं क्या करूं ऐ अल्लाह मैं क्या करूं तो खाना ले कर आई सामने रखा कहने लगी यह वह नेमत थी जो मेरे लिए उस वक़्त सारी दुनिया से बेहतर थी। अल्लाहुअक्बर इस्लाम ऐसे नहीं फैला दीन ऐसे नहीं फैला दीन ऐसे नहीं फैला उसके नीचे बड़ी बड़ी कुर्बानियां हैं सहाबा रज़ि॰ की माऐं अगर अपने बच्चों को जैसे हमारी माऐं कहती हैं मेरी आंखों के सामने रहो मेरी आंखों के सामने रहो। बीवी कहती है मेरे हुकूक़ अदा करो अगर सहाबा किराम रज़ि॰ की बीवियां भी ऐसी होतीं तो आज हिन्दुस्तान में इस्लाम कैसे होता।

......☆......☆......☆......

मुहम्मद बिन क़ासिम रह॰ और उसकी बीवी की कुर्बानी

मुहम्मद बिन क़ासिम रहमतुल्लाह अलैह के हिस्से में यह सारा इस्लाम है। साबिक़ा सिंध का सारा इस्लाम देपालपूर से कश्मीर तक पहुंचे और अपनी बीवी के साथ कुल चार महीने रहे। चार महीने के बाद सवा दो बरस यहाँ गुज़ारे और फिर शहीद कर दिए गए उसने अपनी बीवी को चार महीने से ज़्यादा नहीं देखा और उसकी बीवी ने अपने ख़ाविंद को चार महीने से ज़्यादा नहीं दखा।

लेकिन बेशुमार इंसानों का इस्लाम दोनों मियां बीवी के खाते में चला गया। क़यामत के दिन दोनों मियां बीवी नबियों की शान के साथ जन्नत में जा रहे होंगे कोई उसने छोटा सौदा किया था, बहुत बड़ा सौदा किया था।

......☆......☆......☆......

तमाम शहीदों के सरदार हज़रत हम्ज़ा रज़ि. की शहादत

चाचे का क़ातिल कौनसा चाचा हम्ज़ा रज़ि. महबूब तरीन और वह्शी ने ऐसा क़त्ल किया कि नाक काट दिया गया कान काट दिया गया सीना चीर दिया गया कलेजा चबाया गया, बदन के टुक्ड़े टुक्ड़े हो गए कभी किसी जगह हुज़ूर स. का हिच्कियां मार के रोना साबित नहीं हम्ज़ा रज़ि. की लाश को देख कर हिच्कियां लग गईं ऐसी हिच्कियां कि दूर दूर तक सारे सहाबा सुन कर रो रहे थे इतने में जिब्रईल अलैहिस्सलाम आ गए। या रसूलुल्लाह! अल्लाह कह रहे हैं आपका रोना हमें अच्छा नहीं लग रहा। आप स. सब्र करें हमने आपके चाचा के लिए अर्श के ऊपर लिख दिया है حَمْزَةُ اَسَدُ اللهِ وَاَسَدُ رَسُوْلِهٖ हम्ज़ा मेरा और मेरे रसूल का शेर है सत्तर दफ़ा नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और फिर जब हुज़ूर स. उहुद से फ़ारिग़ होकर मदीने को चले आप स. के ख़ानदान में से कोई भी हिज्रत करके मदीना नहीं आया सिवाए हम्ज़ा रज़ि. अली रज़ि. और अक़ील रज़ि. के बाक़ी तो कोई नहीं था न औरतें थीं न मर्द थे और जब मदीने दाख़िल हुए तो घर घर अंसारी की औरतें और मर्द अपने अपने शुहदा पर रो रहे थे अल्लाहुअक्बर फिर आपका दिल भर आया और आंखों में आंसू आ गए कहा हाए मेरे चचा पे रोने वाला ही कोई नहीं सबके रोने वाले हैं मेरे चचा पे रोने वाला ही कोई नहीं। कितना ग़म आया होगा उसके क़ातिल पर लेकिन

उस हम्ज़ा रज़ि॰ के क़ातिल को भी आप स॰ ने कहा। वह्शी अगर तू मुसलमान हो जाए तो तू भी जन्नत में चला जाएगा हम को तो जो गाली दे दे उसके क़त्ल के दरपे होते हैं जो चचा के क़ातिल को कह रहे हैं कल्मा पढ़ ले जन्नत में चला जाएगा। कहने लगा मैं क्या करूं कल्मा पढ़ कर मैंने इतने गुनाह किए है आप स॰ कह रहे हैं तू तौबा कर ले अमल बना ले नेक अमल कर ले कहा कोई और चीज़ बताओ यह अमल लम्बा काम है। फ़रमाया मेरा रब कहता है शिर्क न करो बाक़ी मआफ़ कर दूंगा जिसे चाहूंगा सारी क़ुर्आन की आयत है मैं मुख़्तसर बता रहा हूं तर्जुमा करके उसने कि जिसे चाहे मआफ़ कर दे अगर मुझे न किया तो मेरा क्या बनेगा फिर चौथी आयत पढ़के सुनाई मेरा रब कहता है। لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ मेरी रहमत से नाउम्मीद न हो तौबा करो, सारे मआफ़ करूंगा कहने लगा यह ठीक है यह मुकालमा आमने सामने नहीं है ताइफ़ में स्पेशल आदमी भेजा वह्शी के लिए कि तू जन्नती हो सकता है अगर मेरी मान ले। अब वह वहाँ से चेहरा छुपा के आया। आप स॰ सरवरे काएनात सर झुका के बैठे थे किसी ख़्याल में बराबर में खड़े होकर चेहरे से कपड़ा उठा कहा اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّكَ مُحَمَّدُ الرَّسُوْلُ اللّٰهِ जब चेहरे से कपड़ा हटाया तो सहाबा रज़ि॰ ने तल्वारें निकाल लीं। उसको क़त्ल करने के लिए आगे बढ़े। तो आप स॰ ने यूं देखा उसने कल्मा पढ़ लिया था तो आपने कहा पीछे हटो पीछे हटो। एक आदमी का मुसलमान हो जाना मुझे हज़ार काफ़िरों को मारने से ज़्यादा प्यारा है फिर आप स॰ ने फ़रमाया اَوَ وَحْشِيٌّ اَنْتَ क्या तू ही वह्शी है नां। कहा जी मैं ही वह्शी हूँ कहा यहाँ मेरे सामने बैठ। सामने बिठाया फिर कहा अरे ज़ालिम मेरे चचा को तूने क़त्ल कैसे किया था यह तो बता दे

كَيْفَ قَتَلْتَ حَمْزَة हम्ज़ा को कैसे क़त्ल किया था। सात साल गुज़र चुके हैं ज़ख़्म अभी नहीं भरा। जब वह्शी रज़ि॰ ने क़िस्सा सुनाया तो हुज़ूर स॰ फिर रोने लगे फिर आंसूओं की लड़यां बन गई आप स॰ ने कहा وَيْحَكَ ضَيِّفْ عَنِّي وَجْهَكَ अरे भाई वह्शी मुझे चेहरा न दिखाया कर मेरा ग़म ताज़ा हो जाता है जिसका चेहरा भी देखना गवारा नहीं उसको भी जन्नत में ले जाने का फ़िक्र फ़रमा रहे हैं हम उसी की उम्मत हैं।

......☆......☆......☆......

महमूद ग़ज़्नवी और उनका वालिद

महमूद ग़ज़्नवी दुनिया का नम्बर दो फ़ातेह है फ़ातेहे अव्वल चंगेज़ ख़ान है जिसने सब से ज़्यादा दुनिया फ़तह की। उसके बाद महमूद ग़ज़्नवी है जिसने दुनिया में सबसे ज़्यादा फ़ुतुहात कीं। उसके बाद तैमूर लंग है। तो महल बनाया बड़ा आलीशान इस्लामाबाद का ताजिर तो चंद करोड़ के या चंद अरब के दायरे में ही घूम रहा होगा। वह महमूद है जिसके सामने दुनिया के ख़ज़ाने सिमट चुके हैं। महल बनाया बड़ा ख़ूबसूरत बड़ा आलीशान अभी शहज़ादी थी बाप ज़िंदा था। तो बाप को कहा अब्बाजान मैंने घर बनाया है ज़रा आप मुआयना तो फ़रमाऐं। उसका वालिद सबुक्तगीन रहमतुल्लाह अलैह, बहुत ही नेक सिपाही से अल्लाह ने बादशाह बना दिया औक़ात याद थी आया महल को देखा हसीन हुस्न व जमाल नक़्श व निगार का नमूना लेकिन एक लफ़्ज़ नहीं कहा कि कैसा ख़ूबसूरत है कैसा आलीशान है महमूद ग़ज़्नवी दिल ही दिल में बड़े गुस्से में मेरा बाप कैसा बेज़ौक़ है एक लफ़्ज़ भी दाद नहीं दी कि हाँ भई बड़ा अच्छा है ख़ामोश जब बाहर निकलने लगे तो अपने ख़ंजर को निकाला दीवार पर जो ऐसा ज़ोर से मारा

दीवार पर नक़्श व निगार थे वह सारे टूट गए। कहने लगा बेटा तूने ऐसी चीज़ पर मुहब्बत की है जो ख़ंजर की एक नौक बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुझे मिट्टी और गार के ख़ूबसूरत बनाने के लिए अल्लाह ने नहीं पैदा किया उस दिल को बनाने के लिए अल्लाह ने तुझे पैदा किया है तो हम थोड़ी ज़िंदगी के बावजूद यहाँ मुस्तक़िल ज़िंदगी का निज़ाम चाहते हैं राहत चाहते हैं।

......☆......☆......☆......

ताबई और रूमी लड़की

हबीब रह० इब्ने उमैर ताबई हैं सहाबा रज़ि० के शागिर्द बड़े ख़ूबसूरत क़ैद हो गए दुश्मन के दस आदमी थे तो उन्होंने क़त्ल कर दिए उनको पकड़ लिया रोमन सरदार ने कहा मैं गुलाम बनाउंगा। क़ैद में लेकर कहने लगा अगर तू ईसाई हो जाए तो तुझे बेटी भी दूंगा। तुझे अपनी रियासत में हिस्सा भी दूंगा। उन्होंने फ़रमाया तू सारा जहान भी दे यह नहीं हो सकता कुफ़्र तो बेहया होता ही है हया तो सरासर इस्लाम में है उसने अपनी बेटी से कहा उससे बदकारी करवाओ। जब यह उस रुख़ पर आएगा तो इस्लाम भी छोड़ जाएगा रूम की लड़की है इधर रूम का हुस्न उधर जवानी आग भी तेज़ है और कुव्वत भी जवान है और दो हैं तीसरा है कोई नहीं।

(एक दफ़ा एक बुजुर्ग ने ख़्वाब में शैतान देखा। कहने लगे कुछ नसीहत तो करो कहने लगा कभी किसी अजनबी औरत के साथ अकेले न बैठना। औरत हो राबिआ बस्री रह० जैसी, मर्द हो जुनैद रह० बग़दादी जैसा अगर वह इकट्ठे हो जाएंगे तो तीसरा मैं आऊंगा उन्हें गुम्राह करने के लिए) अब यहाँ सारी रुकावटें ख़त्म हैं और वह औरत दावत दे रही है और यह नौजवान अपनी नज़र

झुकाने की लज़्ज़त चखे हुए है। उसे पाकदामनी की लज़्ज़त का पता है लिहाज़ा उसकी नज़र उठने का नाम ही नहीं लेती। उसने सारे जतन कर मारे अपने हुस्न का हर तीर आज़माया अपने मकर का हर जाल फैंका लेकिन पाकदामनी की तलवार ने हर हर जाल की हर हर तार को तार तार कर दिया और तीर को बेकार कर दिया। आख़िर तीन दिन के बाद उसने हथ्यार डाल दिए कहने लगी مَا اِذَا يَمْنَعُكَ مِنِّى अल्लाह के बंदे यह तो बता तुझे रोकता कौन है। आज तीसरा दिन है तूने मुझे नज़र उठा कर नहीं देखा रोकने वाला कौन है उसने कहा मुझे रोकने वाला वह है لَا تَاخُذُهُ سِنَةٌ وَّلَا نَوْم जो न सोता है न ऊंगता है जो मुझसे ग़ाफ़िल नहीं मैं उससे ग़ाफ़िल हूँ! मेरा रब है जो अर्श पे बैठा मुझे देख रहा है कि मेरी मुहब्बत ग़ालिब आती है या शहवत ग़ालिब आती है मुझे आगे करता है या शैतान को आगे करता है ऐ लड़की मुझे मेरे रब से हया आती है। इसलिए मैंने अपनी ताक़त को रोका है वह बाहर निकल के अपने बाप से कहने लगी। اَيْنَ اَرْسَلْتَنِىْ اِلٰى حَدِيْدٍ اَوْ حَجَرٍ لَا يَاكُلُ لَا يَنْظُرُ आपने मुझे किस पत्थर के पास भेजा है किस लोहे के पास भेजा है न देखता न खाता है मैं कहाँ से गुम्राह करूँ।

......☆......☆......☆......

नाफ़रमानों के लिए अल्लाह की रहमत

ऐ मेरे भाइयो! उस अल्लाह की तरफ़ रुजू फ़रमाऐं यह इस तबलीग़ की मेहनत की पहली चीज़ है कि हर मुसलमान अपने अल्लाह से जोड़ बिठाए। उसे राज़ी करना बड़ा आसान बहुत आसान है। अल्लाहुअक्बर हम में से अल्लाह के फ़ज़्ल से क़ारून जैसा तो नहीं होगा। क़ारून तो दुनिया में अपनी नौइय्यत का एक

ही मुज्रिम है जिसने नबी पर ज़िना की तोहमत लगाई। मूसा अलैहिस्सलाम पर ज़िना की तोहमत लगाई तो मूसा अलैहिस्सलाम रो पड़े सज्दे में गिर गए अल्लाह ने फ़रमाया। ज़मीन तेरे ताबे है जो कहेगा वह करेगी। तो मूसा अलैहिस्सलाम खड़े हुए ज़मीन से फ़रमाया। क़ारून को पकड़ लो ज़मीन ने पकड़ा तो अंदर चला गया कहने लगा। हाए मूसा मआफ़ कर दे आपने फ़रमाया और पकड़ो तो और अंदर गया। ऐ मूसा मआफ़ कर दे आपने कहा और पकड़ वह कहता रहा ऐ मूसा मआफ़ कर दे वह कहते रहे और पकड़ो यहाँ तक कि वह पूरा अंदर ग़र्क़ हो गया। अब अल्लाह की भी सुनो अल्लाह ने फ़रमाया ऐ मूसा तुझसे ही मआफ़ियां मांगता रहा मुझसे एक दफ़ा ही मागता तो मैं मआफ़ कर देता आप अंदाज़ा फ़रमाऐं।

ऐसे रहीम अल्लाह की हम नाफ़रमानी करें कि जो क़ारून जैसे को मआफ़ करने के लिए तय्यार बैठा है कि तौबा तो करे जब फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ न। फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ तो उसने कल्मा पढ़ा जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आगे बढ़ के मिट्टी उसके मुंह में डाल दी कि कहीं अल्लाह उसकी तौबा क़बूल न करे। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने खुद हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह जब फ़िरऔन ने कल्मा पढ़ा तो मुझे यह डर लगा कि उसकी रहमत इतनी वसी है कि कहीं अब फ़िरऔन की तौबा क़बूल न हो जाए और उसके जुल्म देख कर दिल में यह था कि यह ख़बीस कहीं तौबा करके न मर जाए मैंने मुंह बंद कर दिया कि तौबा न कर सके। जिस रब की रहमत इतनी वसी हो उसके सामने झुकना ही तो इंसानियत की मेराज है न यह कि उल्टा फ़ल्सफ़ा है कुत्ता आपकी रोटी खाए तो गर्दन झुका दे और मैं रब का रिज़्क़ खाऊं तो गर्दन उठाऊं। तो क्या मेरा अख़्लाक़

कुत्ते के भी नीचे चला जाए घोड़े को चारा डालो तो वह सिर झुका के सारी मंज़िलें तय करने को तय्यार हो जाए और अल्लाह मुझे दे और मैं गर्दन अकड़ा लूं यह भी कोई तरीक़ा है।

......☆......☆......☆......

जवानी में शहादत

हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ के बेटे थे अब्दुल्लाह रज़ि॰ हज़रत आतिका रज़ि॰ से शादी की। वह थी बड़ी ख़ूबसूरत और बड़ी शायरा आक़िला ऐसी मुहब्बत आई कि जिहाद में जाना छोड़ दिया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने समझाया कि बेटा ऐसा न कर। मुहब्बत ग़ालिब आई समझ न सके आप रज़ि॰ ने फ़रमाया तलाक़ दे दे हुक्म दिया तलाक़ दो। यह हर माँ बाप के कहने पर तलाक़ देना जाइज़ नहीं होगा। अबू बक्र रज़ि॰ जैसा बाप कह रहा है जो दीन को समझता है जो दीन को समझता ही नहीं कि किस वक़्त में क्या करना है हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने कहा तलाक़ दो। दे दो तलाक़ बड़े ग़मगीन बड़े परेशान उसे क्या ख़बर फिर शेर पढ़ने लगे (तर्जुमा) ऐ आतिका मैं तुझको नहीं भूल सकता जब तक सूरज चमकता रहेगा हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ने कहीं सुन लिया तो तरस आया फ़रमाया अच्छा भाई दोबारा शादी कर लो वह हमारी तरह से तो थे नहीं कि ठक से तीन तलाक़ दी थी दोबारा शादी कर ली लेकिन वह जो ताज़िया ना लगा फिर घर में नहीं अल्लाह के रास्ते में तीर लगा है वही तीर मौत का ज़रिआ बना है वह भी तीस साल की उम्र में जवान शहज़ादे की लाश आतिका रज़ि॰ के सामने आ जाती है फिर हज़रत आतिका ने शेर पढ़े हैं (तर्जुमा) मैं क़सम खाती हूँ कि आज के बाद मेरे जिस्म से कभी ग़ुबार जुदा नहीं होगा मैं क़ुर्बान उस जवान पर कि जो अल्लाह की राह में

मरा और मिटा और आगे ही बढ़ के मरा और आगे ही बढ़ के मिटा मौत को गले लगाया और पीछे लौट के न आया जब तक ज़माना क़ायम है और जब तक बुल्बुलें दरख़्तों पे बैठ कर नग़मे गा रही और जब तक रात के पीछे दिन और दिन के पीछे रात चल रही है ऐ अब्दुल्लाह तेरी याद भी मेरे सीने में हमेशा नासूर की तरह रस्ती रहेगी यह ऐसे घर उजड़े और इस्लाम यहाँ तक पहुंचा हाँ आज बाज़ार आबाद हुए इस्लाम जुड़ गया मैं आपको तबलीग़ी जमाअत की दावत नहीं दे रहा बल्कि ख़त्मे नुबूवत की ज़िम्मेदारी अर्ज़ कर रहा हूँ कि आपके ज़िम्मे है मैं नहीं लगा रहा मैंने तो ज़िम्मेदारी और परवाली पहुंचा रहा हूँ तो इस सारे दीन की मुहब्बत का ख़ुलासा ये दो बातें हैं।

......☆......☆......☆......

नौजवान की दावत के असरात

इस दफ़ा मैं हज पर गया तो इटली से एक नौजवान आया हुआ था अरब हज़रत हसन रज़ि० की औलाद में से मराकश का रहने वाला मज्बूरी की वजह से उसे इटली में रहना पड़ गया बाईस साल की उम्र और उस अकेले लड़के ने इटली में पूरे मुसलमानों को हरकत देदी और वहाँ तीन सौ मस्जिदें बन गईं जबकि एक मस्जिद भी नहीं थी और हज पर सत्तर नौजवानों को लेकर आया हुआ था इतनी ताक़त अल्लाह ने मुसलमान नौजवान में रखी है वह आलिम नहीं है कोई दुनियाबी डिग्री थी इक्नॉमिक्स या फ़िज़िक्स की थी मुझे अच्छी तरह याद नहीं लेकिन उसने वहाँ जो उस मेहनत को ज़िंदा किया पूरे इटली में तीन सौ मस्जिदों का ज़रिआ बन गया और हज़ारों नौजवानों की तौबा का ज़रिआ बन गया तो आपका काम है आपकी ज़िम्मेदारी है मैं यह नहीं कहता

कि तबलीग़ी जमाअत के मैम्बर बन जाओ न किसी जमाअत की दावत दे रहा हूं कि मैं और आप अल्लाह और उसके रसूल के गुलाम बन जाऐं और इस गुलामी को आगे लोगों में फैलाने वाले बनें इस फैलाने में जो तक्लीफ़ आए उसे अल्लाह की रज़ा के लिए बर्दाश्त करें तो अल्लाह का हबीब हौज़े कौसर पर अपने हाथ से एक प्याला पिलाएगा सारे दुख दर्द निकल जाऐंगे हाँ ऐलान होगा कहाँ हैं कहाँ हैं मेरे आख़िरी उम्मती आख़िरी उम्मती जब दीन मिट रहा था उन्होंने मेरे दीन को गले लगा कर मेरे पैग़ाम को पहुंचाया फैलाया था अल्लाह का हबीब स॰ अपने हाथ से जामे कौसर पिलाएगा।

......☆......☆......☆......

नमाज़ की ताक़त

हज़रत अबू मुस्लिम रह॰ ख़ौलानी यह ताबई हैं तो शाम में पहाड़ी दरया था पहाड़ी दरया तो बड़ा तेज़ होता है आप ऊपर चले जाऐं देखने कि कितना तेज़ होता है तो तीन हज़ार का लश्कर था पार करना था आगे कोई कश्ती वहाँ चल ही नहीं सकती पार तो वहाँ से करना है दो रकअत नफ़िल पढ़े कि ऐ अल्लाह तेरे नबी स॰ के उम्मती हैं तूने बनी इस्राईल को समंदर पार कराया था हमें यह दरया पार करा और फिर ऐलान किया कि मैं घोड़ा डाल रहा हूँ मेरे पीछे घोड़ा डाल दो जिसका जो सामान गुम हो जाए तो मैं ज़िम्मेदार हूँ जान तो बड़ी बात है सामान भी गुम हो जाए तो मैं ज़िम्मेदार हूँ। घोड़े डाले पानी के ऊपर चलाए दरमिया में एक आदमी ने अपना लोटा ख़ुद ही फेंक दिया ख़ुद ही आज़माने के लिए फेंक दिया जब किनारे पहुंचे हाँ भई किसी का कोई सामान हाँ जी मेरा लोटा गिर गया लोटा तो मामूली सा है

उसे कहाँ जाना चाहिए वहाँ तो पत्थर बह रहे हैं कहने लगे अच्छा तेरा लोटा गुम हो गया है आओ मेरे साथ वापस लेकर फिर दरया के किनारे पर आए तो लोटा दरया के किनारे पर पहले से पड़ा हुआ था लो भई संभाल ले। यह नमाज़ की ताक़त है तो नमाज़ पढ़ना सीख लें सारे मसले हल हो जाऐंगे तो भाई जहाँ जहाँ अपनी औरतों को नमाज़ अपने बच्चों को अपनी बच्चियों को नमाज़ सिखाऐं नमाज़ याद करवाऐं खुद नहीं आती तो याद करें क़ुर्आन की तिलावत के लिए वक़्त निकालें अल्लाह के ज़िक्र के लिए वक़्त निकालें दरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए वक़्त निकालें इस्तिग़फ़ार दरूद शरीफ़ चलते फिरते उठते बैठते हर वक़्त इसकी आदत डालें क़ुर्आन पाक पढ़ने की आदत डालें अल्लाह का कलाम है पढ़ना चाहिए महबूब का कलाम है दुनिया व आख़िरत की कामयाबियों का इल्म है निजात के सारे अस्बाब उसमें बताए गए हैं ठीक है भाई महीने में तीन तीन दिन की जमाअत सुपर मार्किट से निकलनी चाहिये जहां जहां से आप आये हैं अपने अपने महल्लों की तीन तीन दिन की जमाअतें बना बना कर निकलें इसका इंतेज़ार न करो कि हमें तो कुछ आता नहीं औरों को क्या कहें तुम निकलो और दावत देना शुरू करो। यह बोल इतना ताक़तवर है कि आप उठते चले जाऐंगे और आपके ज़रिए और आते चले जाऐंगे।

......☆......☆......☆......

सत्तर साल की उम्र में कल्मा सीखा

एक आदमी आया मौलाना इल्यास रहमतुल्लाह अलैह के पास उसका नाम था मौजू मैवाती था तो मौलाना इल्यास को कहने लगा मौलवी गिलास मौलवी दिलास तो उसकी तालीम का तो आप खुद ही अंदाज़ा लगा लें कहा मौलवी गिलास में क्या तबलीग़

करूं मुझे तो कल्मा भी न आवे सत्तर साल मेरी उम्र हो गई उन्होंने फ़रमाया तू तीन चिल्ले लगा। लोगों को जाकर कहे लोगों मैंने कल्मा भी न सीखा सत्तर साल गुज़र गए तुम यह ग़ल्ती न करना कल्मा सीख लो उसके चार महीने लगवाए उस मियां मौजू अनपढ़ के हाथ पर पंद्रह हज़ार लोग नमाज़ी बने और ताइब हुए आप तो सारे पढ़े लिखे समझदार लोग हैं आप करेंगे काम तो कल न जाने कितने लोग नामए अमाल में होंगे। नबियों की शान से जन्नत में जा रहे होंगे ठीक है नां भाई जब अल्लाह मौक़ा दे तो चार महीने लगा लो चालीस दिन लगाओ और अपने बीवी बच्चों को अपने माँ बाप को यह बात समझाओ और माँ बाप औलाद को समझाऐं ठीक है नां भाई।

......☆......☆......☆......

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रज़ि. की मौत का वाक़िआ

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रज़ि. के सकरात तारी जंगल में पड़े हुए बयाबान एक बेटी एक बीवी कोई साथ नहीं। हज़रत अबू ज़र गेफ़ारी की बीवी कहने लगी वाह كَرَابَاهُزْنَا हाए गम अबू ज़र रज़ि. कहने लगे क्यों क्या बात है कौन तेरा जनाज़ा पढ़ेगा कौन तुझे गुस्ल देगा। कौन तेरी क़ब्र खोदेगा कौन तुझे कफ़न देगा। हमारे पास तो कुछ भी नहीं है उस वक़्त कफ़न का कपड़ा भी कोई नहीं था। तो अबू ज़र कहने लगे وَمَا كَذِبْتُ अल्लाह की बंदी मैं न झूट बोल रहा हूं न मुझसे झूट कहा गया है मैं एक महफ़िल में था मैंने अपने हबीब स. से सुना। इन कानों ने सुना दिल ने सुना याद रखा कि आपने फ़रमाया था कि तुम में يَعِيْشُ وَحِيْدًا وَيَمُوْتُ وَحِيْدًا وَيُحْشَرُ وَحِيْدًا وَيُصَلِّيْ عَلَيْهِ طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ कि तुम में से एक अकेला ज़िंदा रहेगा अकेला मरेगा। अकेला उठेगा और उसकी

नमाज़े जनाज़ा मुसलमानों की एक जमाअत पढ़ेगी और मैं देख रहा हूँ अकेला मरने लगा हूँ मेरे रब की क़सम मेरे नबी का फ़रमान لَا رَيْبَ فِيْه है इसमें कोई शक नहीं मुझे यह नहीं पता कि कहां से आएंगे और कौन आएंगे लेकिन कोई आएगा मेरा जनाज़ा पढ़ने ज़रूर आएगा कहने लगी وَاَنّٰى कहाँ से आएगा وَقَدْ اِنْقَطَعَ الْحَاجَ जबकि हज का ज़माना गुज़र गया रब्ज़ा मक्का और इराक़ के दरमियान रास्ता पड़ता था जो हाजी इराक़ से आते थे रब्ज़ा से गुज़रते थे तो बीवी ने कहा हाजी चले गए हज सिर पर आ गया अब हाजी भी कोई नहीं आएगा इतने क़रीब उम्रे करने कौन आता है तो लिहाज़ा अब मुझे तो कोई शक्ल नज़र नहीं आती कहा चल चल تَتَبِّعِى الطَّرِيْقَ जा देख रास्ता कोई आएगा एक दिन गुज़रा कोई नहीं आया दूसरा दिन गुज़रा कोई नहीं और वह तीसरे दिन आख़िरी दमों पर हैं तो बेटी को बुला कर फ़रमाया बेटी मेरे मेहमान आएंगे जनाज़ा पढ़ने उनके लिए खाना तय्यार किया जाए इतना यक़ीन لَارَيْبَ فِيْه ऐसा यक़ीन कि तीन दिन गुज़र चुके हैं सांस उखड़ चुका है बेटी को बुला कर कह रहे हैं बेटी खाना पकाओ आज मेहमान आएंगे मेरा जनाज़ा पढ़ा जाएगा थोड़ी देर गुज़री तो देखा कि गुबार उड़ रहा है तो उनकी बीवी ने खड़े हो कर हाथ हिलाए तो उनकी सवारियां तीस ऊँटनियों पर सवार कौन? अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० और उनके साथ उन्तीस आदमी तो बीवी ने कहा कि هَلْ لَّكُمْ مِنْ رَغْبَةٍ اِلٰى اَبِىْ ذَرٍّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ कहा क्या तुम्हें अबू ज़र रज़ि० की रग़बत है उन्होंने कहा क्या हुआ وَهُوَ فِىْ سِيَاقَةِ الْمَوْتِ कहा वह सकरात में है कोई जनाज़ा पढ़ने वाला नहीं तो सारे रोने लग पड़े तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा نَفْدِيْهِ اُمَّهَاتُنَا وَاٰبَاءُنَا हमारे माँ बाप अबू ज़र रज़ि०

पर कुर्बान हम क्यों न करेंगे दौड़ कर गए वह आख़िरी दमों पर थे कहने लगे भई मुझे कफ़न दो। जिसने कभी हुकूमत का कोठ काम न किया हो वह मुझे कफ़न दे तो यह सब आने वाले सारे ही कुछ न कुछ कर चुके थे एक अंसारी नौजवान ने कहा मैंने आज तक हुकूमत का कोई काम नहीं किया यह मेरी माँ ने अपने हाथ से अहराम की चादरें बनाई हैं कहा कि बस तू मुझे कफ़न देगा और जब इंतिक़ाल हो गया जनाज़ा पढ़ा गया फ़ारिग़ होकर चलने लगे तो बेटी ने कहा खाना तय्यार है खा लीजिए कहा कैसे पता है आपको कहा मेरे अब्बा ने कहा था कि मेरे मेहमान आऐंगे मेरा जनाज़ा पढ़ने आऐंगे उनके लिए खाना तय्यार करके रखना है कहीं मेरी मौत की मशगूली तुम्हें उनकी ख़िदमत से ग़ाफ़िल न कर दे तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि॰ रोने लगे और कहा वाह अबू ज़र रज़ि॰ तो ज़िंदा भी सख़ी और मर कर और भी सख़ी (ये सहाबा कैसे पहुंचे थे) हज़रत उस्मान रज़ि॰ को ख़ुसूसी तक़ाज़ा पेश आया अब्दुल्लाह बिन मसऊद के साथ कुर्आन पाक (की इशाअत) के मशवरे के बारे में कहा अब्दुल्लाह फ़ौरन मेरे पास पहुंचो चाहे तुझे हज मिले या न मिले। हज़रत उस्मान का अम्र पहुंचा और वह वहाँ से निकले हैं उम्रे की नियत करके क्योंकि हज पर तो पहुंच नहीं सकते थे (हक़ीक़त यह है कि) वह उम्रे के लिए नहीं निकले हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने नहीं बुलाया था। अबू ज़र रज़ि॰ ने बुलाया था हबीब स॰ के फ़रमान ने बुलाया था कि मेरे एक सहाबी का वक़्त आ चुका है और मैं कह चुका हूँ कि उसका जनाज़ा पढ़ा जाएगा और मेरी उम्मत की एक जमाअत पढ़ेगी। निकलो उम्रे का बहाना बना हज़रत उस्मान रज़ि॰ के बुलाने का बहाना बना वह तो मुहम्मद स॰ का कलाम पूरा हुआ।

तो आज हमने لَارَيْبَ فِيْهِ नहीं सीखा इसलिए कुर्आन मजीद समझ में नहीं आता कुर्आनी ज़िंदगी समझ में नहीं आती वह अमल समझ में नहीं आ रहा इसके लिए दरबदर ठोकरें खानी पड़ेंगी। धक्के खाने पड़ेंगे बिस्यार सफ़र बायद तापुख़्ता शूद ख़्वानी कितने धक्कों के बाद पुख़्तगी पैदा होती है तो मेरे भाइयो! सहाबा ने कुर्आन मजीद का لَارَيْبَ فِيْهِ सीखा पंखे के नीचे बैठकर नहीं छत के नीचे बैठ कर नहीं कभी बदर के मैदान में कभी उहुद के मैदान में कभी हुनैन के मैदान में कभी तबूक के सफ़र में कभी ख़ैबर के सफ़र में कभी किसी सफ़र में कभी किसी हिज्रत में कभी किसी तरफ़ कभी किसी तरफ़ कुर्आन मजीद एक जगह नहीं आया जो अल्लाह तआला ने कह दिया वह होकर रहेगा वह हक़ सच है सारी दुनिया के इंसान इसके सामने कुछ हैसियत नहीं रखते यह भी सीखना पड़ेगा। यह सीखेगा तो कुर्आन भी समझ में आएगा यह सीखेगा तो दीन भी समझ में आएगा यह नहीं सीखेगा तो कुछ भी समझ में नहीं आएगा सब ऊपर ऊपर से गुज़र जाएगा।

......☆......☆......☆......

अल्लाह पर ऐसे दावे नहीं किए जाते

हयातुस्सहाबा में (लिखा हुआ है) एक औरत अल्लाह के रास्ते में गई उसकी दो बकरियां थीं दो ब्रश थे जब वापस आई तो एक बकरी गुम थी ब्रश गुम था धागा सीधा करने वाला कहने लगी يَارَبِّ ضَمِنْتَ لِمَنْ خَرَجَ فِيْ سَبِيْلِكَ۔ अल्लाह तो ज़ामिन जो तेरे रास्ते में निकले उसके मालिक का भी उसकी जान का भी ऐ अल्लाह وَعَنْزَتِيْ وَضَيْصَتِيْ मेरी बकरी गुम हो गई मेरा ब्रश गुम हो गया फिर उसने وَعَنْزَتِيْ وَضَيْصَتِيْ मेरी बकरी गुम हो गई मेरा ब्रश गुम हो गया फिर उसने कहा وَعَنْزَتِيْ وَضَيْصَتِيْ मेरी बकरी

मेरा ब्रश हुज़ूर स॰ भी सुन रहे थे हुज़ूर स॰ ने फ़रमाया अरे अल्लाह की बंदी अल्लाह पर ऐसे दावे नहीं किए जाते अल्लाह के ज़िम्मे तो कोई चीज़ नहीं है वह तो एहसानन अपने ज़िम्मे ले लेता है अल्लाह के ज़िम्मे कोई नहीं कि हमें जन्नत में डाले अल्लाह ने तो यह एहसानन अपने ज़िम्मे ले लिया है। अल्लाह के ज़िम्मे नहीं कि हमें रोटी दे अल्लाह ने तो एहसानन अपने ज़िम्मे ले लिया है हुज़ूर स॰ ने फ़रमाया अल्लाह की बंदी ऐसे दावे न कर। उस अल्लाह की बंदी ने हुज़ूर स॰ की भी न सुनी बस यही कहती रही وَعَنَزَتِيْ وَصَيْصَتِيْ मेरी बकरी मेरा ब्रश भेज दिए कि يَخْلِفُه فَيَا هلُ و مــال तुम मेरा काम करो मेरा पैग़ाम फैलाओ नमाज़ पर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का वादा नहीं है रोज़े पर हिफ़ाज़त का वादा नहीं है रोज़े पर तक़्वे का वादा है नमाज़ पर बुराई से बचने का वादा है हज पर ग़नी होने का वादा है सिर्फ़ तबलीग़ के काम पर हिफ़ाज़त का वादा है।

इसके अलावा हिफ़ाज़त नहीं है जब चंगेज़ ख़ाँ हमलाआवर हुआ है इस्लामी सलतनत पर 610 हिज्री छः सौ दस हिज्री में उसने हम्ला किया है तो इससे ज़्यादा नमाज़ी थे इससे ज़्यादा मुत्तक़ी थे इससे ज़्यादा रोज़ेदार थे इससे ज़्यादा हाजी थे इससे ज़्यादा उलमा थे। इससे ज़्यादा मदारिस थे इससे ज़्यादा मुत्तक़ी थे गुलाम से लेकर ऊपर का सारा तब्क़ा आज से लाखों गुना ज़्यादा दीनदार था लेकिन यह आयत नहीं बल्लिग़ वाली आयत कोई नहीं थी जिस तरफ़ से उसका लश्कर आया शहरों को राख का ढेर बनाता हुआ खोपड़ियों के मीनार छोड़ता हुआ और वह्शत की अलामतें छोड़ता हुआ और वह शख़्स पूरी इस्लामी सलतनत को 40 बरस में ज़ेरो ज़बर करता हुआ चला गया और हलाकू ख़ां

ने छः सौ छप्पन हिज्री में बग़दाद की ईंट से ईंट बजा दी बीस लाख आबादी में से पंद्रह लाख ज़बह हो गए सिर्फ़ पांच लाख की जान बची पंद्रह लाख ज़बह हो गए आज से ज़्यादा अह्ले हक़ अल्लाह वाले लेकिन एक काम नहीं था। بَلِّغْ مَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ नहीं हो रहा था। जब तबलीग़ का काम नहीं होगा अल्लाह की हिफ़ाज़त का वादा नहीं तबलीग़ का काम होगा अल्लाह की हिफ़ाज़त का निज़ाम हरकत में आएगा कहा है कि मैं हिफ़ाज़त करूंगा चूंकि तबलीग़ पर आदमी अल्लाह का नुमाइंदा बन जाता है।

......☆......☆......☆......

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अहद

हज़रत उमर रज़ि॰ की ख़िलाफ़त का ज़माना यह वह उमर है, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब गली में गुज़रता था तो उसकी ख़ुशबुओं के हले घरों में बैठे हुए लोगों को पता चलता था कि उमर गली से गुज़र रहा है, ऐसा हुस्न व जमाल था कि चेहरे पर आंख नहीं टिक्ती थी और ऐसी नख़्रे वाली चाल थी कि जो देखता था वह दंग रहता था और लम्बी उबा होती थी कि घिसटती हुई जाती थी। एक दफ़ा एक बुज़ुर्ग ने रास्ते में टोक दिया ऐ उमर देखो अपने टख़्ने से ऊंचा करो कपड़े को, उन्होंने कहा अगर जान की ख़ैर है तो आईंदा मत कहना मुझे यह बात, वरना गर्दन उड़ा दी जाएगी एक वक़्त यह है और जब आए ख़िलाफ़त पर दुनिया की तलब में जो आदमी वज़ारत की तलब करने लगा और जो आदमी हुकूमत की तलब करेगा और जो आदमी माल की तलब करेगा और उससे जान छुड़ाएगा और उससे पल्ला बचाएगा जब उसके पास माल आएगा वह उसके

ज़रिए जन्नत कमाएगा। सुलेमान मरने लगा तो जाअ इब्ने जबूह ने कहा कोई ऐसा काम कर जिससे तेरी आख़िरत बन जाए। कहा क्या करूं? कहा ख़िलाफ़त के लिए किसी इंसान को चुनना। सोच में पड़ गया उसका इरादा था कि बेटे को ख़लीफ़ा बनाने का। कहने लगा इंशाअल्लाह ऐसा कर जाऊंगा कि जिससे मेरे नफ़्स और शैतान का कोई हिस्सा नहीं होगा, कहा लिखो मैं उमर को ख़लीफ़ा बनाता हूँ और उसको लपेटा और माचिस की डिब्या में डाला कहा जाओ उस पर लोगों से बैअत लो, जब रजा ने बैअत ली तो हज़रत उमर दौड़ कर आए, ऐ रजा तुझे अल्लाह का वास्ता, अगर उसमें मेरा नाम है तो उसको मिटा दे, मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए उसने कहा जाओ मेरा सिर न खाओ मुझे नहीं पता किसका नाम है, आगे हिशाम इब्ने अब्दुल मालिक मिला। उसने कहा रजा अगर उसमें मेरा नाम नहीं है तो उसमें लिख दे। एक कहता है कि मेरा नाम मिटा दे। एक कहता है कि मेरा नाम लिख दे। जब डिब्या पर बैअत ली और खोला उसको, कहा आओ भई ऐ उमर, उठो तुझे ख़लीफ़ा बनाया जा रहा है तो उमर खड़े नहीं हो सके। दो आदमियों ने सहारा दे कर उठाया और लड़खड़ाते हुए मिंबर पर आए और कहा मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए तुम अपने फ़ैसले से किसी और को बना दो, उन्होंने कहा नहीं अमीरुल मोमिनीन ने कह दिया है, हिशाम की चीख़ निकली, एक शामी ने तलवार निकाली, आईदा तूने बात की तेरी गर्दन टर्रा दूंगा तू अमीरुल मोमिनीन के हुक्म के सामने आवाज़ निकालता है जब आएगा तो यूं कहा, अब से आख़िरत को कमा के दिखाऊंगा ताकि सारी दुनिया के इंसानों को पता चल जाए कि यह बादशाहत में भी आख़िरत कमाई जा सकती है फिर वह वक़्त आया ईद के दिन से एक दो दिन पहले की बात और वहीं छोटे छोटे बच्चे रो रहे हैं

कहने लगे बच्चे क्यों रो रहे हैं। बीवी ने कहा बच्चे यह कह रहे हैं। हमारे सारे दोस्तों ने नए नए कपड़े बनवाए हैं ईद के लिए हमारा बाप तो अमीरुल मोमिनीन है हमारे कपड़े फटे हुए हैं। हमें भी तो कपड़े लेकर दो, हज़रत उमर ने फ़रमाया मेरे पास तो पैसे ही नहीं हैं मैं कहाँ से लेकर दूँ वज़ीफ़ा लेते थे बैतुलमाल से जो तमाम मुसलमानों का था, वह रोटी का ख़र्च बड़ी मुश्किल से पूरा होता था तो बीवी ने कहा अब क्या करें? बच्चों को कैसे समझाएं? खुद तो सब्र कर सकते हैं बच्चे तो नहीं जानते बच्चों पर आदमी ईमान को बेचता है। हां फिर वह औलाद बाप की गुस्ताख़ बनती है बाप से कहती है तूने हमारे लिए क्या किया है क्या कमाया है हमारे लिए चूंकि उसकी जड़ों में हराम का डाला गया इसलिए यह अब कभी माँ बाप की फ़रमांबरदार बन कर नहीं चलेगी। यह माँ को भी जूते मारेगा और बाप को भी जूते मारेगा। हज़रत उमर ने कहा मैं कहां से दूं? मेरे पास तो पैसे नहीं हैं तो उसने कहा कि क्या करें? उनको कैसे समझाएं, उन्होंने कहा तो फिर मैं कैसे समझाऊं? बीवी ने कहा मुझे एक तरकीब समझ में आई है। आप अपना वज़ीफ़ा एक माह पेशगी ले लें। जो महीने का वज़ीफ़ा मिलता है हमारे बच्चों के कपड़े बन जाऐंगे हम सब्र कर लेंगे उन्होंने कहा यह ठीक है, अपना ख़ादिम नहीं गुलाम है, गुलाम ज़र ख़रीद मज़ाहिम उसे बुलाया, ख़ज़ानची था कहा। अरे एक बात अर्ज़ करूं, क्या आप मुझे ज़मानत देते हैं कि आपका एक महीना ज़िंदा रहेंगे जो आप मुसलमानों का माल लेना चाहते हैं? अगर आप एक महीने की ज़मानत दे सकते हैं कि मैं महीना ज़िंदा रहूंगा तो आप बैतुलमाल में से मुझ से ले लें। और अगर आप ज़मानत नहीं दे सकते तो आपकी गर्दन पकड़ी जाएगी, क़यामत के दिन हज़रत उमर की चीख़ निकली नहीं كَمْ مِنْ مُقْبِلٍ يَوْمًا لَا يُكْمِلُهُ كَمْ

हुज़ूर स. फ़रमाते रहे हैं कि كَمْ مِنْ مُقْبِلٍ يَوْمًا لَا يُكْمِلُهُ कितने ही हैं दिन देखने वाले जो सूरज का गुरूब होना नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं كَمْ مِنْ مُسْتَقْبِلٍ لِغَدٍ لَا يُدْرِكُهُ और कितने ही हैं जो कल का इंतेज़ार करते हैं और कल का सूरज नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं, कहा ऐ बच्चो! सब्र कर लो जन्नत में ले लेना जा के मेरे पास इस वक़्त कोई नहीं। अम्र को नहीं तोड़ा बच्चे की ख़्वाहिश को तोड़ दिया अपने जज़्बात को तोड़ दिया अल्लाह के अम्र को नहीं तोड़ा। ज़रूरत को कुर्बान कर दिया अम्रे इलाही को कुर्बान नहीं किया यह है لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कि मैं अल्लाह का गुलाम हूँ मैं बिक चुका हूँ मैं बीवी बच्चों का गुलाम नहीं हूं कारोबारी नहीं हूँ मैं ताजिर नहीं हूँ मैं ज़मीनदार हाकिम और वज़ीर नहीं हूँ मैं अपने अल्लाह का गुलाम हूँ, मुझे अल्लाह के अम्र को देखना है, मुझे यह नहीं देखना कि कौन क्या करता है। घर में आए बेटियां मुंह पर कपड़ा रख कर बात करें, हज़रत उमर कहने लगे बेटी क्या बात है? मुंह पर कपड़ा क्यों रखती हो? फ़ातमा ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन आज तेरी बेटियों ने कच्चे प्याज़ से रोटी खाई है, इसलिए उनके मुंह से बदबू आ रही है हाँ अमीरुल मोमिनीन कि जिसका अम्र तीन बर्रे आज़म पर चलता है और अरबों मख़्लूक़ात उसके सामने गर्दन झुकाए खड़ी हो दमिश्क़ से लेकर मुल्तान तक और दमिश्क़ से लेकर इस्तंबूल तक और दमिश्क़ से लेकर काशग़र तक और दमिश्क़ से लेकर मिस्र तक, दमिश्क़ से लेकर चाड़ तक और दमिशक़ से लेकर उन्दुलुस तक पुर्तगाल और फ्रांस तक जिसका अम्र चल रहा हो, उसकी बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी खा रही है, आज हमारे तो छाबड़ी वाले की बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी नहीं खाती और इतने बड़े बा-इक़्तेदार की बेटी प्याज़ से रोटियां खाती

हैं, हज़रत उमर रोने लगे मेरी बेटी मैं तुम्हें बड़े अच्छे खाने खिला सकता था। लेकिन तेरा बाप दोज़ख़ की आग बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरे सामने दो रास्तें हैं, तुम्हें हलाल हराम इकट्ठा करके खिलाता, खुद दोज़ख में जाता, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता मौत का वक़्त आया, मुस्लिमा ने कहा, अमीरुल मोमिनीन का लिबास तो तबदील कर दो, मैला हो गया है, अपनी बहन से कहा साला है। हज़रत फ़ातमा ने कहा बीवी थी, ऐ मेरे भाई अल्लाह की क़सम अमीरुल मोमिनीन के पास एक ही जोड़ा है तबदील कहाँ से करूं एक ही जोड़ा है। मुस्लिमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन यह आपके बच्चे हैं फ़क्र व फ़ाके की हालत में आप इन्हें छोड़ कर जा रहे हैं, फ़रमाया मेरे से एक लाख रुपया ले लीजिए अपने बच्चों को दे दीजिए मेरे भांजे हैं उसने कहा हां तो फ़रमाया चलो एक लाख रुपया वापस कर दो जहाँ से तुमने उसको जुल्म और रिश्वत से कमाया है, मेरे बच्चों को हराम नहीं चाहिए फिर बेटों को बुलाया और कहा बेटो! मेरे सामने दो रास्ते थे मैं तुम्हारे लिए माल जमा करता और खुद जहन्नम में जाता और दूसरा रास्ता यह था, मैं तुम्हें तवक्कुल सिखाता और खुद जन्नत में जाता, मेरे बेटो! मैं जहन्नम तो सह नहीं सकता था, मैंने तुम्हें अल्लाह से मांगना सिखा दिया, ज़रूरत पड़े तो उससे मांग लेना, वह तुम्हारा कफ़ील होगा। वह कहता है وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيْنَ मैं नेक आदमियों का वाली।

जब मौत आई और जनाज़ा उठा क़ब्रिस्तान पर चला और क़ब्र पर रखा गया तो आसमान से एक हवा चली। उसमें से एक कागज़ का पर्चा गिरा। उस कागज़ को उठाया गया उस पर लिखा था بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ لِعُمَرَ ابْنِ عَبْدِالْعَزِيْزِ مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ और यह अल्लाह तआला की

तरफ़ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के लिए आग से निजात का परवाना है, हमने उमर को दोज़ख से निजात दे दी, सारी दुनिया को बता दिया कि सुन लो हमने उमर को दोज़ख़ से निजात दे दी। और उस परवाने समेत हज़रत उमर को क़ब्र में कामयाब हो गए। और तीसरी रात है और कोरूम के इलाक़े में चलते हुए और उनके आठ साथी क़त्ल हो चुके थे यह नवें बच गए थे यह वहाँ से भाग कर आ रहे थे तो पीछे से घोड़े के टापों की आवाज़ आई। समझने लगे कि बस मैं तो पकड़ा गया हूँ पीछे आए पकड़ने वाले पीछे देखा जो मुड़ के एक ने आवाज़ दी, हबीब अरे यह मेरा नाम कैसे जानता है? हबीब क़रीब आए तो देखा वह साथी जो क़त्ल हो गए थे घोड़े पर सवार, अरे اَلَيْسَ قَدْ قُتِلْتُمْ अरे तुम तो सारे क़त्ल हो गए थे फ़रमाय हाँ तुम्हे ख़बर है क्या हुआ कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का इंतिक़ाल हो चुका है और अल्लाह तआला ने तमाम शोहदा से कहा है कि उनका जनाज़ा पढ़ो जाकर, हम सब वहाँ जारहे हैं तुमने घर जाना है यह रूम है घर जाना है कहते हैं हाँ ! तो उसने कहा नाविलनी हाथ पकड़ाओ मेरा हाथ पकड़ा और अदफ़नी और मुझे पीछे घोड़े पर बिठाया, उसका घोड़ा चंद क़दम चला होगा ख़फ़्ती ख़फ़्ता उसने मुझे ज़ोर से कुहनी मारी और मैं उलट कर गिरा तो घर के दरवाज़े के सामने पड़ा था, रूम से इराक़ यह इस्तिक़्बाल है यह इस्तिक़्बाल हो रहा है تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ نَحْنُ اَوْلِيَاءُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ अल्लाह की तरफ़ से मेहमानी हो रही है। फ़रिश्ते आ रहे है, हज़रत उमर का जब विसाल होने लगा तो कहने लगे हट जाओ जाओ कुछ लोग आ रहे हैं। जो न जिन्नात हैं और ज़बान पर आयत अगई تِلْكَ الدَّارُ

الآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا यह वह जन्नत का घर है हमने बनाया है अपने बंदों के लिए जो दुनिया में बड़ाई नहीं चाहेते, जो बड़ाई चाहते हैं, उन्हें पस्त किया जाता है, और जो बड़ाई नहीं चाहते उन्हें उठाया जाता है फ़रिश्ते आते हैं हज़रत इज़्राईल अलै॰ आते हैं और चार फ़रिश्ते आते हैं, दो फ़रिश्ते पाओं दबाते हैं, दो फ़रिश्ते हाथ दबाते हैं, हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम खुशख़बरी देते हैं। يَا اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْحَمِيْدَةُ كَانَتْ فِيْ جَسَدِ الْحَمِيْدِ ऐ मुबारक रूह मुबारक जिस्म के अंदर थी उखर जी अब आओ अब आप के बाहर आने का वक़्त आ गया وَاَبْشِرِ بِرُوْحٍ وَّرَيْحَانٍ وَرَبٍّ رَاضٍ عَنْكَ غَيْرُ غَضْبَانَ अब आप खुश हो जाओ जन्नत आपके लिए तय्यार है और अल्लाह आप पे राज़ी हो चुका है और अल्लाह जन्नत का दरवाज़ा खोलता है, जब आंख पलटती है, देखा नहीं आपने, आंख पलट जाती है, जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है या जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है, एक मंज़र देख रहा है या जहन्नम देख रहा है जो ग़ायब था वह मुशाहिदे में आ गया और जो मुशाहिदे में था, वह ग़ैब में चला गया। فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَائَكَ आज हमने तेरी आंखों से पर्दा हटाया और उस वक़्त इज़्राईल अलैहिस्सलाम कहते हैं اَنَرُدُّكَ اِلَى ذٰلِكَ الدُّنْيَا तुझे वापस भेज दें, अब वह जन्नत को देख चुका है और वहाँ की नेमतें नज़र आ रही हैं कहता है अरे अल्लाह के बंदे! इज़्राईल अलैहिस्सलाम क्या कह रहे हो। اِلَى دَارِ الْهُمُوْمِ وَالْاَحْزَانِ मुझे ग़मों और मुसीबतों के घर में भेजना चाहते हो नहीं मुझे आगे को ले चलो, चाहे जवान चाहे बूढ़ा कहता है आगे ले चलो आगे ले चलो, मैं तो अगला मंज़र देख चुका हूँ अब उसकी रूह निकलती है, सारे आलम में खुशबू फैल जाती है, और उसको लेकर पहले आसमान पर जाते हैं, दरवाज़े खटखटाते हैं तो

आसमान के फ़रिश्ते पूछते हैं कौन? फ़लाँ इब्ने फ़लाँ हाँ نِعْمَ الْعَبْدُ فُلَانُ ابْنُ فُلَانٍ बेशक वह फ़लाँ बड़ा अच्छा आदमी है। उसने तो कहा था اُخْرُجِيْ निकलो। वह फ़रिश्ते कहते हैं اُدْخُلِيْ आईए अंदर आइये ادخلي अंदर आइये وَاَبْشِرُ بِرُوْحٍ وَّ رَيْحَانٍ وَرَبٍّ رَاضٍ عَنْكَ غَيْرُ غَضْبَانٍ अंदर आ जाइये आलमे आख़िरत में आ जाइये और ख़ुशख़बरी ले लीजिए कि अल्लाह आप पर राज़ी हो चुका है और जन्नत आप के लिए तय्यार हो चुकी है।

मेरे मुहतरम भाइयो और दोस्तो! मुसलमान अल्लाह का सफ़ीर है यह आख़िरत का दाई है जन्नत का दाई है मेरे भाइयो! जहन्नम से डराने वाला आप स॰ के तरीक़ों को वजूद देने वाला रबीअ़ इब्ने आमिर खड़ा होकर कह रहा है, लोगों की गुलामी से निकाल कर अपने मौला की गुलामी पर डालने के लिए आए हैं हम काश्तकार नहीं, ज़मीनदार नहीं हम ताजिर नहीं है, हम अल्लाह के दीन के दाई हैं इस वक़्त मुसलमान से अल्लाह के दीन की दावत छूट चुकी है, दावत वाला काम छोटा है, मुसलमान दाई था दाई, ओहो इस मेहनत पर अल्लाह ने इस उम्मत को रुत्बा दिया, इस दावत पर अल्लाह ने इस उम्मत को उठाया, अगर यह उम्मत बैठती है, अगर यह अपने मक़सद से हट जाती है, अपनी क़ीमत खो देती है ये मुसलमान जब दावत के मैदान में हरकत कर रहे थे और इसका एक एक सांस अल्लाह पाक के दीन के लिए वक़्फ़ था, और इसका एक एक रुपया अल्लाह के दीन पर क़ुर्बान था। और इसकी तमन्ना अल्लाह के नाम पर मरने की और अल्लाह के रास्ते में क़ब्र बनाने की थी तो मेरे भाइयो! उनकी दुआऐं अर्शे मुअल्लाह से टकरा रही थीं और उनका रोना फ़रिश्तों को रुलाता था। एक नौजवान सहाबी नमाज़ पढ़ रहा है, और नमाज़ में रोया, आपने

फ़रमाया لَقَدْ اَبْكَيْتَ اَعْتَيْنَ مَلَائِكَةٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ كَثِيْرًا आज तेरे रोने में बेशुमार फ़रिश्तों को भी रुला दिया, ऐसा जवान था, जब यह अल्लाह के दीन की मेहनत में उतर रहा था यह वह जवान था कि फ़रिश्ते उस पर फ़ख़ कर रहे थे आप स॰ ने फ़रमाया कि ऐसी क़ीमती उम्मत है لَوْ لَا شَبَابٌ خُشَّعٌ अगर तेरे से बढ़ने वाले नौजवान न हों وَشُيُوْخٌ عُقَّحٌ और दीन में, बुढ़ापे को पहुंच कर कम्रें झुक गई, माज़ूर हो गए अगर ऐसे बूढ़े न हों وَاَطْفَالٌ رَضَّعٌ दूध पीते बच्चे न हों وَالْبَهَائِمُ رَتَّعٌ और चरने वाले जानवर न हों صَبَّ عَلَيْكُمُ الْعَذَابَ صَبٌّ मैं तुम पर बारिशों की तरह अज़ाब को बरसा दूंगा तो इस उम्मत का नौजवान ऐसा क़ीमती है कि अगर यह अल्लाह पाक की इताअत पर आ जाता है तो मेरे भाइयो उसके निकले हुए ख़ौफ़ के आंसू अल्लाह के अज़ाब को उड़ा देते हैं। और इस उम्मत का बूढ़ा इतना क़ीमती है अगर यह झुकी हुई कमर के साथ क़दम उठाता है तो अल्लाह का फ़र्श भी हिल्ता है और आए हुए अज़ाब भी उठ जाते हैं। इस उम्मत के साथ अल्लाह का ख़ुसूसी मुआमला था। اِذْ بَلَغَ عَبْدِىْ خَمْسِيْنَ سَنَةً حَاسَبْتُهُ حِسَابًا يَسِيْرًا जब यह मेरा बंदा पचास बरस का हो जाए मेरे नबी का कल्मा पढ़ता, तो मैं फिर उसका हिसाब आसान कर देता हूँ। وَاِذَا بَلَغَ سِتِّيْنَ سَنَةً حَبَّبْتُ اِلَيْهِمْ اِنَابَا और जब यह साठ बरस का हो जाए तो मैं इसे अपनी मुहब्बत देना शुरू कर देता हूँ कि अब तू मेरे आने के क़रीब हो गया अब तू दुनिया से निकल, दुकान में बैठना जायज़ नहीं है अब तू निकल حَبَّبْتُ اِلَيْهِمْ اِنَابَا अब तू साठ बरस का हो गया, मेरी तरफ़ को आ, आ मैं अपनी तरफ़ रुजू देता हूँ। وَاِذْ بَلَغَ سَبْعِيْنَ اَحَبَّ اللّٰهُ وَاَهْلَ السَّمَاءِ जब सत्तर साल का हो जाता है तो अल्लाह तआला कहते हैं। फिर मैं भी और मेरे फ़रिश्ते

भी मुहब्बत करते हैं कि सत्तर बरस का बूढ़ा हो गया है, दाढ़ी सफ़ेद हो गई है وَاِذَا ثَمَانِيْنَ سَنَةً जब अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं اَبْنَاءِ الثَّمَانِيْنَ اِسْتَحْيٰى اَنْ اُعَذِّبَهُمْ بِالنَّارِ अस्सी बरस के बूढ़े को दोज़ख़ का अज़ाब देते हुए मुझे वैसे ही शर्म आती है। अल्लाहुअक्बर कि मैं कैसे अज़ाब दूँ कि यह बूढ़ा हो गया। हाँ كَتَبْتُ حَسَنَاتِهٖ وَاَلْقَيْتُ سَيِّئَاتَهٗ अल्लाह तआला कहता है, भाई अब उसकी नेकियां ही लिखते रहे बस सठ्या गया, बूढ़ा हो गया, फ़रज़ौक़ एक शायर गुज़रा है शायर आज़ाद ही होते हैं आम तौर पर लेकिन उस ज़माने का आज़ाद से आज़ाद भी आज बड़े कुतुब ग़ौस से भी ऊंचा दरजा रखता है।

......☆......☆......☆......

क़ुर्आन की बरकत

हज्जाज इब्ने यूसुफ़ इस उम्मत का सफ़ाक गिना जाता है उसकी ज़िंदगी में कभी तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई और हफ़्ते में क़ुर्आन उसका ख़त्म होता था। हफ़्ते में क़ुर्आन ख़त्म करता था तीन दिन में पांच दिन में क़ुर्आन ख़त्म करता था। कभी ज़िंदगी में झूट नहीं बोला, मरते दम तक और यक़ीन ऐसा था कि एक दफ़ा उसकी बीवी पर कुछ असरात हुए उसने किसी आमिल को बुलवाया उसने दम करके लोहे का कील सा रख दिया कि इसको दफ़न कर दो, उन्होंने कहा यह क्या चीज़ है? उन्होंने कहा तुम अपने हब्शी बुलाओ दो हब्शी बुलाए कि लक्ड़ी डाल कर उसको उठाओ दो गुलाम ज़ोर लगा रहे हैं उठा रहे हैं वह छोटा सा कील नहीं उठता, फिर दो और लगाए चार, फिर दो और लगाए छः, फिर दो और लगाए आठ दो और लगाए दस, बारह गुलाम लगाए छः इस तरफ़ छः उस तरफ़, छोटे से कील को उठा रहे हैं वह

उठता ही नहीं, उसने कहा देखी उसकी ताक़त यह है उसने कहा पीछे हट जाओ अपनी छड़ी उठाई إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ यह आयत पढ़ कर जो छड़ी डाली और यूं किया तो गेंद हवा में उड़ता हुआ वह गया उन्होंने कहा भाग जाओ मैं तुम्हारे अमलों का मोहताज नहीं हूँ। यक़ीन की ताक़त ने उसके सहर को तोड़ दिया।

......☆......☆......☆......

फ़रज़ूक़ शाइर और हसन बसरी रह॰

फ़रज़ूक़ एक शाइर गुज़रा है बीवी के जनाज़े में शरीक है। हसन बसरी रह॰ भी आए हुए हैं। हज़रत हसन बसरी रह॰ ने कहा फ़रज़ूक़ लोग क्या कह रहे हैं। फ़रज़ूक़ ने कहा आज यूं कह रहे हैं कि इस जनाज़े में हमारे शहर का सबसे बेहतरीन इंसान (हसन बसरी रह॰) आया हुआ है और मेरी तरफ़ इशारे कर रहे हैं। और लोग यूं कह रहें हैं कि इस जनाज़े में हमारे शहर का बदतरीन इंसान भी आया हुआ है तो हज़रत हसन बसरी रह॰ ने कहा तो फिर आज के दिन के लिए तूने क्या सामान तय्यार कर रखा है उन्होंने कहा हसन बसरी मेरे पास कुछ भी नहीं इतना है कि इस्लाम में बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे पास कुछ नहीं। मेरे पास इस्लाम का बुढ़ापा है और मेरे पास कुछ नहीं। जब इंतेक़ाल हुआ तो ख़्वाब में मिला एक आदमी को तो उसने पूछा कि तेरे साथ क्या सुलूक हुआ, कहने लगा अल्लाह पाक ने मुझे अपने सामने खड़ा किया इरशाद फ़रमाया तूने हसन बसरी से क्या बात कही थी? याद है तुझे? मैंने कहा या अल्लाह याद है कहा दोहराओ मेरे सामने, दोहराओ तो मैं कहने लगा मेरे पास उस दिन के लिए अल्लाह के सामने कुछ नहीं है सिवाए इसके कि मैं इस्लाम में बूढ़ा

हुआ हूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि बस तुझे इसी पर मआफ़ कर दिया।

मेरे भाइयों! इस उम्मत पर तो अल्लाह मेहरबान था, लेकिन हम कैसे बेवफ़ा निकले कि हमें दुकान ने अल्लाह से तोड़ दिया, मिट्टी की औरत ने अल्लाह से मोड़ दिया और इस औलाद ने अल्लाह से तोड़ दिया जो दुनिया ही में बेवफ़ा हो रही है, पहलों की औलाद तो दुनिया में वफ़ादार होती थी, हमारी औलाद तो दुनिया ही में बेवफ़ा हो रही है और इस वज़ारत की ख़ातिर हम अल्लाह के हुक्म को तोड़ रहे हैं और चंद टकों की ख़ातिर हम अल्लाह के अम्र को तोड़ रहे हैं, मेरे भाइयों ऐसी करीम ज़ात कहाँ मिलेगी हमें जो इंतेज़ार में बैठा हुआ है कि मैं अपने बंदे की तौबा का इंतेज़ार कर रहा हूँ। يَا دَاوُدُ لَوْ يَعْلَمُ الْمُدْبِرُوْنَ عَنِّيْ مَا عِنْدِيْ مِنَ الْمَاشْوَاقِ अल्लाहुअक्बर ऐ दाऊद जो मेरे से तअल्लुक़ तोड चुके हैं अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ تَقَطَّعَتْ اَوْصَالُهُمْ उनके टुकड़े टुकड़े हो जाऐं मुहब्बत में अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ जब अपने नाफ़रमानों से मेरे यह हाल है तो उस दाऊद مَا ذَا تَقُوْلُ فِيْ الْمُقْبِلِيْنَ जो मेरी तरफ़ दौड़ रहे हैं उनसे मैं कितनी मुहब्बत करता हूंगा, तू सोच सकता है?

......☆......☆......☆......

सब्रे अय्यूब अलैहिस्सलाम

अय्यूब अलैहिस्सलाम के बारे में तो पता ही होगा कि 18 बरस बीमार रहे और सारा जिस्म गल गया आबले छाले ये वह अट्ठारा बरस की बीमारी ऐसी बीमारी शायद ही दुनिया में किसी पर आई इम्तेहान था पर अल्लाह ने सेहत भी दे दी तो एक दिन किसी ने

पूछा नबी अल्लाह वह बीमारी के दिन याद आते हैं कहने लगे तुम्हें बताऊं बीमारी के दिन आज के दिनों से ज़्यादा अच्छे थे कहा तौबा तौबा वह कैसे अच्छे थे कहा जब मैं बीमार था तो अल्लाह तआला रोज़ाना मेरा हाल पूछते थे अय्यूब क्या हाल है बस वह जो कहते थे ना क्या हाल है उसमें जो लज़्ज़त थी मेरे सारे ज़ख़्मों के दर्द निकाल देती थी। और जब अल्लाह को आप देख रहे हों उनकी आंखों से देख रहे हों फिर अल्लाह का नाम लेकर क्या हाल है। फ़ातमा क्या हाल है अबू बक्र क्या हाल है भाई एहसान क्या हाल है। और ज़ैनब क्या हाल है फ़ातमा क्या हाल है वह क्या इन्तिहा होगी अब अपनी परवाज़ तो सोचें क्यों गारे मिट्टी के पीछे अपनी आक़िबत को बरबाद कर रहे हो। कपड़ा जो फट कर पुराना हो जाए तो कूड़े करकट के ढेर में जा गिरे, वह हुस्न जिस पर बुढ़ापा छा जाए वह राहत जो बेचैनी से बदल जाए वह भी कोई चीज़ है जिसके लिए आदमी अपनी आक़िबत को ख़राब करे क्यों दीवाने बन गए हम अब अल्लाह। अल्लाह तआला कहेगा रिज़्वान से रिज़्वान (रिज़्वान जन्नत के एक फ़रिश्ते का नाम है) रिज़्वान यह मेरे बंदे और बंदियां मेरे दीदार को आए हैं आज पर्दा हटा दे कि यह मुझे देख लें जी भर के अब पर्दा हटेगा और अल्लाह पाक سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ الرَّحِيْم ऐ मेरे बंदो तुम्हारा रब तुम्हें सलाम कहता है। अल्लाहुअक्बर। तो फिर हम वह फ़रिश्ते जो जब से सज्दे में पड़े हैं और जब से रुकू में पड़े हैं और जब से अल्लाह की तस्बीह पढ़ रहे हैं वह भी अल्लाह को देख कर कहेंगे या अल्लाह हम तेरे इबादत का हक़ न अदा कर सके। कहाँ तो हम वैसे ही हैं नाहन्जार। तो जब अल्लाह को देखेंगे या अल्लाह आप ऐसे जमाल वाले हमें तो ख़बर ही नहीं थी। हमें एक सज्दे की

इजाज़त दें कि हम आपको सज्दा करें तो अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे।

﴿قَدْ وَدَعْتُ اَنَّكُمْ مَوْعُوْنَ تَسْتَحُوْدُ تَعْلَمَ اَتْبَعْتُمْ لِیْ لَاَیْدَانْ وَاَنْسَكْتُمْ لِیَ الْوُجُوْهُ قُلْ اِنْ اَقْضَیْتُمْ اِلٰی رَوْحِیْ وَرَحْمَتِیْ وَكَرَامَتِیْ هٰذَا مَحِلُّ كَرَامَتِیْ سَلُوْنِیْ﴾

अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे नहीं अब तुम मेहमान मैं मेज़बान और कोई मेहमान को तो नहीं कहता जा रोटी खुद खाके आ। बख़ील से बख़ील भी यह नहीं गवारा करेगा कि उसके घर मेहमान आ जाए तो रोटी बाहर से खाए। तो अल्लाह से ज़्यादा बड़ा सख़ी कौन है। अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे तुम मेहमान मैं मेज़बान, दुनिया में जो सज्दे किए। दुनिया में जो मेरे लिए तल्हे वही काफ़ी हैं। आज तुम मुझसे मांगो और मैं तुम्हें दूंगा और मैं तुम्हारा रब तुम से राज़ी हूं।

﴿كُلُوْ وَاشْرَبُوْ هَنِيْئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ﴾

खाओ पियो मज़े करो तुम से हर पाबंदी को मैंने उठा दिया है मांगो कहेंगे या अल्लाह क्या मांगें सब कुछ तो दे दिया और क्या मांगें कहा नहीं। कुछ और मांगो कहेंगे अच्छा राज़ी हो जा कहेंगे राज़ी हूँ तो तुम्हें दीदार कर रहा हूँ राज़ी हूँ, तो तुम्हें जन्नत में बिठा रहा हूँ राज़ी हूँ तो तुम से हम हमकलाम हो रहा हूँ कुछ और मांगो तो फिर मांगना शुरू करेंगे तो मांगते मांगते उनकी सारी अक़्ल की ताक़तें जवाब दे जाऐंगी। अल्लाह तआला फिर कहेंगे नहीं कुछ नहीं मांगा और मांगो और एक बात बताऊं दरमियान में इंसान का दिमाग़ सिर्फ़ चार पांच फ़ीसद काम करता है बाक़ी सारा सोया हुआ है जो पढ़ते हैं उनका सात आठ फ़ीसद हो जाता और ज़्यादा मेहनत करते हैं कोई नौ फ़ीसद है। आइन्सटाईन का

दिमाग़ देखा गया तो 11.2 फ़ीसद उसका इस्तेमाल हुआ था बाक़ी उसका भी सोया हुआ था तो जन्नत में दिमाग़ के सारे सैल खुल जाऐंगे और सारे सैल काम कर रहे होंगे फिर उस पूरे दिमाग़ की ताक़त से मांगते मांगे और मांगते थक जाएगा अल्लाह तआला फ़रमाएगा कुछ नहीं मांगा और मांगो फिर शुरू होंगे मांगा करेंगे फिर अब सोच में पड़ जाऐंगे अब क्या करें कोई इधर से पूछेगा कोई उधर से पूछेगा कोई नबी से पूछेगा कोई किसी से पूछेगा फिर मांगना शुरू करेंगे फिर मांगते मांगते थक जाऐंगे कहेंगे या अल्लाह अब समझ में नहीं आता। अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे वाह मेरे बंदो तुमने तो अपनी शान का भी न मांगा मेरी शान का कहां से मांग सकते हो चलो जो तुमने मांगा वह दिया जो नहीं मांगा वह भी दिया जाओ चले जाओ मैं तुम्हारा रब तुम पर मेहरबान हूँ राज़ी हूँ मौत को मौत दे दी और बुढ़ापे को ख़त्म कर दिया ग़म को ख़त्म कर दिया मुसीबत को ख़त्म कर दिया उस ज़िंदगी की तरफ़ फिर अल्लाह ने कहा।

﴿وَفِىْ ذَالِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ﴾

ऐ मेरे बंदो! उस पाक ज़िंदगी को लेने के लिए सिर धड़ की बाज़ी लगा।

......☆......☆......☆......

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह॰ की वालिदा का सबक़

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह॰ क़ाफ़िले में इल्म हासिल करने के लिए जा रहे थे। चौदह साल की उम्र थी। रास्ते में डाका पड़ गया लूट लिया, उन्होंने ये बच्चे थे किसी को ख़्याल नहीं आया कि उनके पास कुछ होगा। एक डाकू ने ऐसे ही सरे राह पूछा बेटा तेरे पास कुछ है। कहा हाँ है। कहा चालीस दीनार हैं।

चालीस दीनार का मतलब था कि वह एक साल का राशन है तो बहुत बड़ी दौलत थी। 40 दीनार। तो वह हैरान हो गया। कहने लगा कहाँ कहा ये मेरे कपड़ों के अंदर सिये हुए हैं। अंदर की आसतीन में उसने कहा बच्चे अगर तू मुझे न बताता तो मुझे कभी ख़बर न होती कि तेरे पास है तो तूने क्यों बता दिया मुझे मेरी माँ ने कहा था कि बेटा सच बोलना चाहे जान चली जाए। अब यह मां का सब है नां और जब मां को ही न पता हो कि सच बोलने में निजात है तो वह बच्चे को क्या बताएगी। तो वह डाकू उसको पकड़ के डाकूओं के सरदार के पास ले गया कि सरदार इस बच्चे की बात सुनो। तो सारी कहानी सुनाई तो सरदार ने कहा बेटा क्यों तूने बता दिया न बताता तो हमें तो कोई पता न चलता। कहा मेरी मां ने मुझे कहा था झूट न बोलना सच बोलना चाहे जान चली जाए। इस पर जो वह रोया है डाकूओं का सरदार उसकी दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई। कि ऐ अल्लाह यह मासूम बच्चा अपनी मां का इतना फ़रमांबरदार और मैं पूरा मर्द जवान होकर तेरा नाफ़रमान मुझे मआफ़ कर दे। सारे डाकूओं ने तौबा की और उसका ज़रिआ वह मां बनी जो गेलान में बैठी हुई थी। जिसको पता भी नहीं है कि उसका बच्चा कहाँ से कहाँ तक पहुंच गया है।

......☆......☆......☆......

एहसान का बदला

मुतअर्रिफ़ इब्ने शीख़र सूई रह० हैं बहुत बड़े बुजुर्ग हैं। ख़्वाब देखा कि क़ब्रिस्तान फटा और वहाँ से मुर्दे निकले और कुछ चुन्ने लगे। एक आदमी जा के दरख़्त पे टेक लगा के बैठ गया यह उसके पास गए कहा भाई यह क्या माजरा है कहा यह हम मुसलमान जो पहले मर चुके हैं यह वह हैं और यह जो चुन रहे हैं

यह सवाब है जो पीछे लोग उनको पहुंचा रहे हैं तो कहा तू क्यों नहीं चुनता कहा मेरा हिसाब थोक का है। मुझे बहुत मिलता है कहा कैसे मिलता है मेरा बेटा हाफ़िज़े कुर्आन है। एक कुर्आन रोज़ाना पढ़ कर मुझे बख़्श देता है मुझे यह चुन्ने की ज़रूरत नहीं पड़ती कहा क्या करता है तरा बेटा कहा मेरा बेटा मिठाई की दुकान करता है फ़लाँ बाज़ार में सुबह आंख खुली तो वहां गए देखा तो एक नौजवान बड़ी ख़ूबसूरत दाढ़ी बड़ा नूरानी चेहरा अपना सौदा भी बेच रहा है और साथ होंट भी हिला रहा है उसने कहा बच्चा क्या कर रहे हो। कहा जी कुर्आन पढ़ रहा हूँ। किस लिए जी मेरे बाप ने मेरे ऊपर एहसान किया और मुझे कुर्आन पढ़ा दिया और मेरे लिए यह रिज़्क़ का इंतेज़ाम किया मेरे लिए सारे पापड़ बेले मैं चाहता हूँ कि उसके एहसान का बदला दूं मैं रोज़ाना एक कुर्आन पढ़ कर उसको बख़्श देता हूँ। कोई साल गुज़रा दोबारा ख़्वाब देखा वही क़ब्रिस्तान वही मुर्दे वह आदमी जो टेक लगा के बैठा था नां उसको देखा वह भी चुन्ता फिर रहा है तो एक दम आंख खुल गई तो सुबह ही सुबह जब बाज़ार खुला तो उस बाज़ार में गए भई यहाँ एक नौजवान हल्वाई था। मिठाई बेचने वाला। कहा जी उसका इंतेकाल हो गया वह पिछले वाला सिलसिला बंद हो गया।

हज़रत जाफ़र रज़ि॰ की शहादत

हज़रत जाफ़र रज़ि॰ बिन अबी तालिब को जब उर्दुन की तरफ़ भेजा वह वहाँ शहीद हो गए चचाज़ाद भाई थे तीस साल की उम्र उन्नीस साल बीवी की उम्र और जब उनकी शहादत की इत्तिला मिली तो अब्दुल्लाह, औन और मुहम्मद तीन बेटे थे छोटे छोटे हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के। तो आप को तो मस्जिद में ही बैठे बैठे

अल्लाह ने दिखा दिया था कि जाफ़र रज़ि॰ शहीद हो गया। ज़ैद रज़ि॰ शहीद हो गया। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ शहीद हो गया। तो आपकी आंखों से आंसू जारी हो गए। आप वहाँ से उठे और हज़रत जाफ़र के घर आए तो हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस उनकी बीवी ने आटा गूंध के रखा हुआ था बच्चों के लिए रोटी पकाने को तो आप तशरीफ़ लाए और कहा कि अब्दुल्लाह औन और मुहम्मद को मेरे पास लाओ तो उनको करीब लाए तो आप उनको चूम रहे थे और चुप्के चुप्के आंसू टपक रहे थे। तो हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस रज़ि॰ कहने लगीं कि मुझे खटका हुआ कि कुछ हो गया है। लेकिन हिम्मत न हुई पूछने की आखिरकार फिर मैंने पूछ ही लिया। या रसूलुल्लाह स॰ जाफ़र रज़ि॰ को क्या हुआ। तो आप स॰ ने फ़रमाया اِحْتَسِبِيْ عِنْدَاللّٰهِ तू अल्लाह की बारगाह में अब अज्र की उम्मीद रख। अल्लाह ने उसको अपनी बारगाह में कुबूल कर लिया है तो बेहोश होकर गिर गईं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ फ़रमाते हैं। हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के बेटे कि जब कभी आप स॰ सफ़र से वापस आए तो आप हसन और हुसैन रज़ि॰ को बाद में प्यार करते थे और पहले मुझे प्यार करते थे। पहले मुझे गोद में बिठाते थे फिर हसन रज़ि॰ और हुसैन रज़ि॰ को प्यार करते थे। तो जाफ़र रज़ि॰ का घर उज्ड़ा। और उर्दुन में इस्लाम फैल गया।

……☆……☆……☆……

डाइजेस्ट न पढ़ें

हज़रत बशीर इब्ने अकरमा एक सहाबी हैं उनके बाप अल्लाह के रास्ते में गए वहाँ शहीद हो गए मां पहले इंतेकाल कर गईं थीं। यह अकेले थे। जब लश्कर वापस आया तो अपने बाप के मिलने के शौक़ में मदीने से बाहर जाकर खड़े हो गए कि बाप को जाकर

मिलूं तो जब सारा लश्कर गुज़रा तो बाप नज़र नहीं आया। तो फिर भागे हुए हुज़ूर स॰ की तरफ़ आप आगे आगे जा रहे थे पैदल ही थे। आगे आगे जाकर खड़े हो गए। या रसूलुल्ला माज़ा फ़अल अबी या रसूलुल्लाह मेरे बाप नज़र नहीं आ रहे। तो आप स॰ ने नजरें चुरा लीं। नज़रें चुरा लीं। फ़ारिज़ अन्नी तो आप ज़ब्त न कर सके और आंसू बहने लगे तो हज़रत बशीर फ़रमाते हैं मैं आपकी टांगों से लिपट गया और मैंने रोना शुरू कर दिया कि या रसुलुल्लाह स॰ मेरी मां पहले चली गई बाप भी चला गया अब मेरा दुनिया में कोई नहीं है तो हुज़ूर स॰ ने फ़ौरन फ़रमाया اَمَا تَرْضَا اَنْ يَّكُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ اَبَا كُمْ وَعَائِشَةَ اُمُّكَ क्या तू राज़ी नहीं कि आज के बाद अल्लाह का रसूल तेरा बाप हो आएशा तेरी मां हो। तो हम अपने पहलों की कहानिया पढ़ें डाइजेस्ट न पढ़ें। सहाबा रज़ि की ज़िंदगियां पढ़ें उन्होंने किस तरह अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और लोग हम से कहते हैं लिखा हुआ है कि बीवी छोड़ के चले जाना मैं उनसे कहता हूं जहां लिखा है वहां आप पढ़ते नहीं और जहां आप पढ़ते हैं वहां लिखा नहीं जंग अख़बार में तो नहीं लिखा होगा। और डाइजेस्ट में तो नहीं लिखा होगा। यह तो कुर्आन में लिखा होगा हदीस में लिखा होगा। सहाबा की सीरत में लिखा होगा कैसे कैसे उन्होंने अल्लाह के कल्मे को फैलाने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाई और इन नस्लों तक इस्लाम पहुंचाया। तो आप भाई बहनें भी इसके इरादे करें कि आज के बाद ऐ अल्लाह तेरी मान कर चलेंगे और तेरे हुक्मों पर चलेंगे।

......☆......☆......☆......

मौलाना तारिक़ जमील का तबलीग़ में जाना

1971ई॰ में तीन दिन के लिए गया था पढ़ता था कालेज में।

तीन दिन के लिए गया और वहीं तीन दिन से चार महीने हो गए तो हमारे इलाक़े में मशहूर हो गया कि भई वह मियां अल्लाह बख़्श के बेटे को मौलवी इग़वा करके ले गए यह सारे इलाक़े में ख़बर मशहूर हुई। एक वह दौर था कि तबलीग़ में जाना समझते थे कि भई इग़वा हो गया और फिर जब मैंने कालेज छोड़ कर मदरसे में दाख़िल होने का इरादा किया। तो वालिद ने डंडा उठा लिया और मां ने कहा तुम्हें आक़ कर देंगे। तुम्हें घर से निकाल देंगे। तू मुल्ला बनना चाहता है। हमारी नाक कटवाना चाहता है। हम किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं तुझे लाहौर पढ़ाया तुझ पर इतने हज़ारों रुपये ख़र्च किए। अब तू कहता है कि मैं फ़लां बनूंगा। हरगिज़ इसको बर्दाश्त नहीं करेंगे। यह आज से 26 साल पहले का दौर बता रहा हूँ। आज ऐसे घरों में अल्लाह दीन की दावत को पहुंचा रहा है। शहज़ादों की औलाद उठ उठ कर हमारे मदरसों में आ के अरब की औलाद दीन पढ़ रही है। शहज़ादों के बेटे चटाइयों पे बैठे हुए कुरआन पढ़ रहे हैं हदीस पढ़ रहे हैं। या वह दौर था कि ज़मीनदार का बेटा तो उसके लिए सारे जनाब आ जाते मेरे वालिद के डेरे पर ओ मियां साहब तेरे बेटे को मौलवियों ने बरबाद कर दिया। एक दफ़ा सियालकोट हमारी जमाअत गई। यह 1972ई॰ की बात है ऐसे ही एक घर था रमज़ान शरीफ़ था। तो उस ताजिर ने हमारी दावत की वह नेक आदमी था। उसने हमारी इफ़्तार की दावत कर दी। तो उसके घर के दो लान थे एक में उसने हमें बिठाया नीचे एक तरफ़ शहर के ताजिर वग़ैरा दूसरी तरफ़। उस वक़्त में यह 1972ई॰ की बात है रमज़ान शरीफ़ नवम्बर में था। हम बैठे हुए थे मिस्कीनों की तरह और वह हमें देख देख कर मज़ाक़ उड़ाएं। और हंसें अब मुझे गुस्सा भी चढ़े कि

इन्होंने क्या समझा है हमें फ़क़ीर समझते हैं और हिम्मत भी न हो कि इनसे बात कर सकूं तो मैंने अपने अमीर से कहा अमीर साहब कभी ऐसा दिन आएगा कि इन लोगों को भी हम दावत दे सकेंगे मुझसे कहने लगे बेटा ग़रीबों में काम करते रहो। यहीं से आग़ाज़ अल्लाह तआला हर घर में पहुंचा देगा। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से अदना से लेकर आला तक को अल्लाह तआला ने इस मेहनत में उठा दिया है। तो उसके लिए बताओ भाई नाम लिख कर भाई इरादा करो भाई। हाँ भाई बोलो। भाई। लिखो भाई कोई। तय्यार करो बहनो।

......☆......☆......☆......

सहाबा की क़ब्रों की ज़ियारत

अभी आपके बंगला देश आने से पहले हमारी जमाअत उर्दुन गई थी। उर्दुन से हम यहाँ बंगला देश आ रहे हैं तो हमें वहाँ लोग सहाबा की क़ब्र पर ले गए। मुआज़ इब्ने जबल पहाड़ की चोटी पर अकेले हैं। अब्दुर्रहमान इब्ने मुआज़ और हज़रत मुआज़ दोनों बाप बेटा शहीद हुए। दोनों की क़ब्रें हैं। इब्ने अज़वर की क़ब्र एक टीले पर है। अबू उबैदा बिन जर्राह की एक रास्ते के किनारे पर क़ब्र थी। आगे पहाड़ों में गए, मूता एक मक़ाम है, जहाँ पर जंगे मूता लड़ी गई। यहाँ पर तीन बड़े सहाबा ज़ैद, जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रह॰ की क़ब्रें वहाँ मौजूद हैं। जब हम हज़रत जाफ़र की क़ब्र पर गए। यक़ीन मानें हमारी सारी जमाअत रो रही थी। हम अपने आंसुओं को रोकते थे।

हज़रत जाफ़र का सारा वाक़िआ आंखों के सामने घूम गया। ख़ुद नौजवान, बीवी थी। छोटे छोटे चार बच्चे थे। जब अल्लाह के रास्ते में निकले और झंडा उठाया तो शैतान सामने आया और

कहा जाफ़र! तेरे चार छोटे बच्चे, तेरी जवान बीवी, क्या बनेगा उनका?

हज़रत जाफ़र ने फ़रमाया अब तो अल्लाह के नाम पर जान देने का वक़्त आया है। फिर यह शेअर पढ़ाः

तर्जुमाः "ऐ जन्नत! अब तो मुझे तेरा शौक़ है"

आगे बढ़े। एक हाथ कटा, दूसरा कटा और फिर दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर गए। आपने देख लिया कि हज़रत जाफ़र शहीद हो गए हैं। हुज़ूरे अक्रम स॰ तशरीफ़ ले गए। हज़रत अस्मा के घर। अस्मा उनकी बीवी का नाम था। कहने लगीं, मैं बच्चों को नहला चुकी थी। कपड़े पहना चुकी थी और ख़ुद आटा गूंध रही थी कि हुज़ूर स॰ तशरीफ़ लाए। मैं घबरा कर खड़ी हुई। मैंने पूछा "या रसूलुल्लाह! क्या हुआ मैं तो......" फ़रमाया मैं तेरे लिए कोई अच्छी ख़बर नहीं लाया और आपके आंसू निकल पड़े। हज़रत अस्मा ने सुना और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गईं। छोटे छोटे बच्चों को छोड़ कर, जवान बीवियों को छोड़ कर, पहाड़ों पर सोए हुए हैं। कमाल है आज से चौदह सौ साल पहले वह क़ब्र बनी जबकि वहाँ किसी इंसान का गुज़र न होता था। हज़रत ज़ैद की क़ब्र पर गए तो उनकी क़ब्र पर एक हदीस लिखी थी। मैंने साथियों को उसका तर्जुमा करके बतलाया। हुज़ूर को जब हज़रत ज़ैद की शहादत की ख़बर हुई, दूसरों को बताया तो हज़रत ज़ैद की छोटी बच्ची आपकी गोद में आकर रोने लगी। आप भी रोने लगे, सहाबी हज़रत सअद ने कहा या रसूलुल्लाह स॰! आप किसके लिए रो रहे हैं? आप स॰ ने फ़रमाया ऐ सअद! यह हबीब का शौक़ है हबीब के लिए। ज़ैद को बेटा बनाया हुआ था। सारी जमाअत वहाँ ऐसे रो रही थी कि ऊपर पहाड़ पर क़ब्र है। दूर दूर

तक आबादियां नहीं थीं। वीराने में क़ब्रें बनीं, सन्नाटे में क़ब्रें बनीं और फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की क़ब्र पर गए।

......☆......☆......☆......

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰

उनकी क़ब्र पर भी अजीब नूर था। आदमी अपने आंसू रोक नहीं सकता था। अब्दुल्लाह के बारे में रिवायत है कि जब आगे बढ़े तो बीवी बच्चे याद आ गए तो एक दम अपने आप को झटका......"ऐ नफ़्स मुझे क़सम है अपने रब की, मैं जान उस पर क़ुर्बान करूंगा तू चाहे या न चाहे, तू माने या न माने, तुझे अर्सा हुआ बीवी बच्चों में रहते हुए। अब जंग का शौक़ कर। लोग इस्लाम को मिटाने के दर पे हैं तू बीवी बच्चों को रखने के दर पे है। ऐसे न क़त्ल हुआ तो मौत तो बहरहाल आकर रहेगी। इसलिए वह कामं कर जो तेरे साथियों ने किया।" आपने आगे बढ़ कर छलांग लगाई और उनके जिस्म के टुकड़े टुकड़े हो गए। वह मक़ाम आज भी महफ़ूज़ है। जहाँ तीनों शहीद हुए और फिर आप स॰ ने फ़रमाया "हां हां मैं देखता हूँ कि तीनों जन्नत की नहरों में ग़ोते खाते फिरते हैं। जन्नत के फल खा रहे हैं।

......☆......☆......☆......

मुहब्बते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत सअद सहाबी हैं। हुज़ूर स॰ के पास आए, रंग के काले थे, फ़रमाया रसुलुल्लाह शादी करना चाहता हूँ। आप स॰ ने फ़रमाया उमर इब्ने वहब से कहो। अम इब्ने वहब सक़्फ़ी ख़ूबसूरत भी थे माल भी था। यह बेचारे काले भी थे और ग़रीब भी थे। जब रिश्ता लेकर पहुंचे तो बाप ने बेटी की मुहब्बत में सोचा कि मेरी बेटी उस ग़रीब, बदसूरत से कैसे गुज़ारा करेगी। उन्होंने इंकार

कर दिया। बेटी ने पीछे से सुन लिया कि मेरे बाप ने नबी स. के भेजे हुए को इंकार कर दिया है। अब्बाजान! आप किसकी बात को ठुकरा रहे हैं, नबी स. की बात को ठुकरा रहे हैं? आप फ़ौरन जाकर हाँ कर दीजिए। क़ब्ल इसके अल्लाह का अज़ाब हम पर आए। नबी स. की बात को ठुकराना हलाकत है। आप रिश्ता कुबूल कर लें, जैसा है काला है, फ़क़ीर है मुझे कुबूल है, नबी का भेजा हुआ है। नबी स. की बात पर सारे जज़्बात कुबूल किये जा सकते हैं। यह उनके अंदर के जज़्बात थे। यही उनके अंदर की दुनिया भी जो अल्लाह और उसके नबी स. की मुहब्बत में भरी हुई।

......☆......☆......☆......

मग़रूर आदमी से दीन का काम

इमाम शहाबी से मरवान ने पूछा कि हिजाज़ का इमाम कौन है आज कल? क्या सिफ़तें बयान की गई हैं? काले, नाक के चपटे, अंधे, लंगड़े, लूले ऐसा माज़ूर आदमी भी अल्लाह की बारगाह में इतना ऊंचा मक़ाम हासिल कर सकता है जो काला भी हो, चपटा भी हो, अंधा भी हो, लूला भी हो, लेकिन पूरे अरब का इमाम था। सलमान बिन अब्दुल मालिक जैसा जाबिर बादशाह उनके सामने दो ज़ानू बैठता था। फिर उसका बेटा अय्यूब वह उसकी ज़िंदगी में मर गया। फिर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि. को अपने बाद हुक्मरान बनाया था तो किसी ने कहा जी अय्यूब आया बैठा है, फ़रमाने लगे मुझे पता है आया हुआ है। लेकिन उससे सुनना चाहता हूँ। उसे भी पता चल जाए। उसके बाप को भी पता चल जाए। अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे है जिन्हें उनकी परवाह है न उनकी हुकूमत की परवाह है। ऐसा माज़ूर आदमी भी मेरे भाइयो! पूरे दीन को लेकर चल सकता है। इसलिए कि अल्लाह तबारक व

तआला ने दीन को वजूद में लाने के लिए न माल को शर्त लगाया न हसब व नसब की शर्त लगाई। न दौलत की शर्त लगाई न इक़्तेदार की शर्त लगाई। कि अल्लाह पाक ने हुज़ूर स॰ की ज़ाते गिरामी को एक ज़िंदगी का तरीक़ा अता फ़रमाया कि भाई इस तरीक़े को मर्द भी अपनाए। औरत भी अपनाए, सारे कामयाब हों। जो भी अपनाए, काला हो या गोरा, कोई है जो अल्लाह ने हबीब को तरीक़ए ज़िंदगी दिया उसे अपनाएगा तो कामयाब होगा। और वह बड़ा इंसान होगा। अल्लाह का शुक्र है कि माल की शर्त नहीं।

......☆......☆......☆......

हुज़ूर स॰ को मानने वाले कामियाब

एक बद्दू आप स॰ की महफ़िल के पास से गुज़रा। कहने लगा "यह कौन है? उन्होंने कहा यह वह है जो आसमान की ख़बरें सुनाता है। ऊंट से नीचे उतरा, कहने लगा गर तेरी मेरी क़ौम का मुआहदा न होता तो मैं तुझे बड़े बुरे तरीक़े से क़त्ल करता। आप स॰ ने फ़रमाया ऐ भाई! मेरी महफ़िल में आ के ऐसी बात मुनासिब नहीं। अरब के अख़लाक़ के मनाफ़ी है। वह कहने लगा ज़्यादा बातें न बनाओ। गोह एक जानवर है जंगल में होता है। छिप्कली की तरह। बहुत बड़ी छिप्कली। वह उसको शिकार करके लाया था। उसको पीछे लटकाया हुआ अपने कजावे के साथ। उसने दुम को खोला और हुज़ूर स॰ के सामने फेंक दिया। फिर कहा अगर यह बोले कि तू अल्लाह का नबी है, फिर तुझे नबी मानुंगा वरना नहीं मानुंगा। तो आप स॰ ने गोह को देखा। ऐ गोह! उसने सिर उठाया मैं हाज़िर हूँ ऐ क़यामत के दिन को ज़ीनत बख़्शने वाले!

कैसा अजीब ख़िताब दिया है। आज तक यह ख़िताब किसी इंसान ने नहीं दिया। आप स॰ ने फ़रमाया तेरा रब कौन है, तू

किसकी बंदगी करती है? उसने कहा मैं उसकी बंदगी करती हूँ जिसका अर्श आसमानों पर सलतनत ज़मीन में है। रास्ते समंदर में, राहत जन्नत में अज़ाब जहन्नम में। आप स॰ ने फ़रमायाः मैं कौन हूँ?" तो उसने कहा आप रब्बुल आलमीन के रसूल स॰ हैं। आप ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं, जिसने आप को माना कामयाब रहा, जिसने आपको ठुकराया, हलाक व बरबाद हो गया। दुनिया के इंसान को आप निजात का रास्ता देने के लिए आए हैं, ताकि अल्लाह की अज़्मत बैठे, अल्लाह की मुहब्बत बैठे, अल्लाह के नबी स॰ की मुहब्बत बैठे। यह आदमी को हर चीज़ से टकरा देती है। यह पहाड़ हो या पत्थर हो आग का समंदर हो या पानी का समंदर हो आदमी पार निकल जाता है। दुनिया के इंसानों को आप निजात का रास्ता देने के लिए आए। पहली मेहनत ईमान की है। चौबीस घंटे की ज़िंदगी में अल्लाह का गुलाम बन जाना और यह नमाज़ के ज़रिए से ताक़त पैदा होगी।

......☆......☆......☆......

उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि॰ की नमाज़

उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि॰ के पाओं में फोड़ा निकला। वह बढ़ने लगा। वह बढ़ते बढ़ते घुटने तक आ गया। तबीब ने कहा काटना पड़ेगा वरना सारा पाओं बेकार हो जाएगा। तबीब ने कहा तू नशे वाली चीज़ पी ले मैं काटता हूँ। उन्होंने कहा नहीं नहीं नशा और ईमान दोनों एक पेट में नहीं आ सकते। कहा मैं नमाज़ पढ़ता हूँ तू काट ले। तबीब ने जराह का काम शुरू किया और ज़ख़्म की मरहम पट्टी की लेकिन उनकी नमाज़ में एक राई के बराबर फ़र्क़ नहीं आया। सलाम फेरने के बाद कहा काट लिया? कहा जी काट लिया। फ़रमाया मुझे तो ख़बर ही नहीं हुई। फ़रमाया ऐ अल्लाह

गवाह रहना कि मेरा यह पाओं तेरी नाफ़रमानी में कभी नहीं चला।

नमाज़ कुव्वत पैदा करके पूरी ज़िंदगी को बदल देगी। अल्लाह तआला ने हमें ऐसी ताक़तवर चीज़ अता फ़रमाई है कि जिसकी परवाज़ अर्श तक चली जाती है। यूं ही आदमी कहता है कि अल्लाहुअक्बर, तो उसके और अर्श तक दरवाज़े खुल जाते हैं। अल्लाह मुतवज्जे हो जाते हैं, फ़रिश्तों के क़लम चलने लगते हैं। जन्नत की हूरें, खिड़कियां खोलकर जन्नती नमाज़ी को देखना शुरू कर देती हैं। और अल्लाह फ़रमाता है मेरा बंदा जब तू माथा ज़मीन पर रखता है तो तेरा सर मेरे क़दमों में होता है सबसे ज़्यादा करीब आदमी अल्लाह के उस वक़्त होता है जब सज्दे में पड़ा होता है। इबादत में सबसे बड़ी इबादत नमाज़ है जो सारे निज़ाम को दुरुस्त कर देगी। फिर दुनिया भी इबादत बनेगी। हर चीज़ इबादत बनेगी जैसे आपने फ़रमाया जिसने दुनिया की कमाई हलाल रास्ते से, अपनी औलाद पर ख़र्च करने के लिए, पड़ोसियों पर ख़र्च करने के लिए, सवाल से बचने के लिए तो क़यामत के दिन अल्लाह से ऐसे मिलेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकेगा।

......☆......☆......☆......

चचा के क़ातिल को मआफ़ी मिल गई

वह्शी जिसने हम्ज़ा को क़त्ल किया। आप स॰ ने उसे पैग़ाम भेजा था कि तुम मुसलमान हो जाओ तुम भी जन्नती हो। कितना बड़ा ज़र्फ़ है नबी स॰ का। उसे बुलाने के लिए चार मर्तबा आदमी भेजा। फिर आया अपनी पगड़ी में सिर छुपाया हुआ था। आप॰ सिर झुकाए हुए बैठे थे। मुंह को खोला। सहाबा रज़ि॰ एक दम खड़े हुए। या रसूलुल्लाह! वह्शी आया है। तलवारें खुलीं कि क़त्ल

करें। आप स॰ ने फ़रमाया एक आदमी का मुसलमान होना मेरे लिए हज़ारों काफ़िरों को क़त्ल करने से बेहतर है। फिर आपने उंगली उठा कर कहा। तू वहशी है? कहा हाँ, फ़रमाया यहाँ बैठो, सामने बिठाया। अच्छा यह तू बता तूने मेरे चचा को क़त्ल कैसे किया था। सात बरस गुज़र चुके थे। इतना सदमा हुज़ूर स॰ को पहुंचा था। हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की शहादत पर आप स॰ की हिच्कियां बंध गईं थीं और सत्तर मर्तबा नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी। किसी की ऐसी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी गई और ऐसा रोए हैं कि अल्लाह तआला को जिब्रईल भेजने पड़े कि मेरी नबी ग़म न करो। तब जाके आप का ग़म हल्का हुआ। जनाज़ा पढ़ा। मदीने पहुंचे तो घर घर से रोने की आवाज़ सुनी तो फिर आप रोने लगे। सब पे रोने वाले तो मौजूदा हम्ज़ा रज़ि॰ पर रोने वाला भी कोई नहीं। ऐसा सदमा आया था तो उसके क़ातिल को भी कह रहे हैं तू भी जन्नत में जाएगा। दर्द व ग़म था इंसानियत की हिदायत का।

काश हमें भी सारी दुनिया को ले जाने का हमें ग़म लग जाए। सारी दुनिया हमारी मुहब्बत का मैदान है। हमारी जान बाद में है माल व औलाद बाद में है। बीवी बच्चे बाद में हैं। पहले हमें नुबूवत का काम मिला हुआ है। इस पर तो अल्लाह ने हमें इज़्ज़त बख़्शी है। आप स॰ ने फ़रमाया कोई जन्नती जन्नत में नहीं ज़ा सकता जब तक मैं न जाऊं। कोई उम्मत नहीं जा सकती जन्नत में जब तक मेरी उम्मत न जाए। अल्लाह ने क़ुर्आन उतारा, जो एक नेकी करेगा दस दूंगा, आप स॰ ने अर्ज़ किया मेरी उम्मत को और अता फ़रमा अल्लाह ने दूसरी आयत उतारी मुझे क़र्ज़ दो कई गुना करूंगा अब ठीक है? कहा नहीं मेरी उम्मत को और अता फ़रमा। अल्लाह ने तीसरी आयत उतारी जो एक ख़र्च करेगा

उसको सात सौ गुना दूंगा। अब ठीक है? कहा नहीं, मेरी उम्मत को और अता फ़रमा अल्लाह ने फ़रमाया चलो जम्ए तफ़रीक़ छोड़ो हम आपकी उम्मत को, सब्र वालों को बेहिसाब ही देंगे। क्या सात लाख, क्या उन्चास करोड़ खाता ही ख़त्म कर दो। बेहिसाब इनायत फ़रमाऐंगे।

......☆......☆......☆......

उम्मते अहमद स॰ की अज़्मत

एक यहूदी कहने लगा हज़रत उमर रज़ि॰ से तुम्हारे नबी का कोई दर्जा नहीं तो आपने उसके मुंह पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। वह रोता हुआ आप स॰ के पास आया। पूछा क्या हुआ मुझे उमर ने मारा है। पीछे हज़रत उमर थे। पूछा तूने क्यों मारा है। कहने लगा उसने आपकी शान में गुस्ताख़ी की है। कहा ऐ उमर उसे राज़ी करो। यहूदी तू सुन! मैं इब्राहीम ख़लील, मूसा कलीम, ईसा रूह, मैं अल्लाह का हबीब हूँ फ़ख़्र से नहीं कहता। फिर आप एक दम अपनी ज़ात से हटे अपनी उम्मत पर आए। मेरा क्या पूछता है मेरी उम्मत का पूछ। अल्लाह ने अपने दो नामों में से मेरी उम्मत का नाम चुना है। अल्लाह का नाम सलाम है। मेरी उम्मत का नाम मुस्लिमीन है। अल्लाह का नाम मोमिन है। मेरी उम्मत का नाम मोमिन है। तुम पहले आए हम तुम्हारे बाद में आए। जन्नत में तुम से पहले जाऐंगे। आप स॰ ने फ़रमाया मैं जन्नत को ऊंटनी पर सवार होगा और मेरी ऊंटनी की नकील बिलाल हब्शी के हाथ में होगी और वह मेरे साथ साथ सबसे पहले जन्नत में जाएगा। फिर आपने अबू बक्र को देखा मैं एक आदमी को जानता हूं जिसके मां बाप को भी जानता हूँ जन्नत में आऐंगे तो आठों दरवाज़े खुल जाऐंगे। फ़रिश्ते कहेंगे मरहबा मरहबा इधर आऐं। सलमान फ़ारसी

ने गर्दन उठाई। इस ऊंची शान वाला कौन है या रसूलुल्लाह? आपने फ़रमाया यह अबू बक्र।

फिर आपने फ़रमाया अल्लाह लोगों को दीदारे आम कराएगा। अबू बक्र को दीदारे ख़ास करायेगा। फिर आप स॰ ने फ़रमाया मैंने जन्नत में महल देखा जिसकी ईंट याकूत की है। मैंने समझा मेरा है। मैं उस में जाने लगा तो दरबान ने कहा यह तो उमर बिन ख़त्ताब का महल है। या रसूलुल्लाह! आपने फ़रमाया तेरा गुस्सा याद आया इसलिए अंदर नहीं गया हूँ वरना अंदर जाकर देख ही लेता। हज़रत उमर रोने लगे कहा मैं आप पे गुस्सा खाऊंगा या रसूलुल्लाह! फिर आप स॰ ने हज़रत उसमान को देखा। उस्मान ऐ उस्मान जन्नत में हर नबी का एक साथी है। मेरा साथी तू है ऐ उस्मान फिर आपने हज़रत अली का हाथ पकड़ा। हाथ पकड़ के अपनी तरफ़ खींच कर फ़रमाया ऐ अली तू राज़ी हो जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा। तू फ़ातमा के साथ उस घर में मेरे सामने रहेगा। हज़रत अली रोने लगे। मैं राज़ी हूँ या रसूलुल्लाह! फिर आपने तल्हा और ज़ुबैर को कहा! ऐ तल्हा! ऐ ज़ुबैर! जन्नत में हर नबी के मददगार दरबान जैसे बादशाहों के दाऐं बाऐं खड़े होते हैं। कहा ऐसे मेरे दाऐं बाऐं तल्हा और ज़ुबैर होंगे। अल्लाह ने उस उम्मत को इज़्ज़त बख़्शी। लोगों को जन्नत का शौक़ और जन्नत को हज़रत सल्मान का शौक़। हज़रत मिक़्दाद का शौक़, हज़रत अली का शौक़। एक हदीस में आता है जन्नत को मिक़्दाद का शौक़ है अली व सल्मान का शौक़ है ये कहां से इज़्ज़त आई। ख़त्मे नुबूवत का काम मिला है। (लम्बी उम्रों की वजह से) नमाज़ें तो पहली उम्मतों की ज़्यादा, रोज़े उनके ज़्यादा, हज उनके ज़्यादा, ज़कात उनकी ज़्यादा, दर्जा हमारा ज़्यादा, मूसा

अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत से अच्छी भी कोई उम्मत है जिस पर बादलों के साए हुए, मनसलवा आए, अल्लाह ने फ़रमाया आपको पता नहीं है कि ऐ मूसा, सारी उम्मतों पर उम्मते अहमद को वह इज़्ज़त हासिल है जो मुझे तमाम मख़्लूक़ात पर हासिल है।

......☆......☆......☆......

मिसाली अद्ल व इंसाफ़

हज़रत अली रज़ि० ने एक यहूदी को देखा वह ज़रह बेच रहा था। आपने फ़रमाया यह ज़रह मेरी है। अमीरुल मोमिनीन! उसने कहा यह मेरी है। आपने कहा यह मेरी है। कहा आपके पास कोई गवाह हो तो मुक़द्दमा अदालत में क़ाज़ी के पास लेकर जा रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन यह ज़रह मेरी है। यहूदी कहता है मेरी है। क़ाज़ी ने कहा कोई गवाह है? कहा है वह हैं हसन और क़ुम्बर। हसन बेटे और क़ुम्बर गुलाम तो उन्होंने कहा क़ुम्बर की गवाह तो क़ुबूल है हसन की क़ुबूल नहीं। इस्लाम का निज़ामे अद्ल बाप के हक़ में बेटे की गवाही को रद करता है हसन रज़ि० हुसैन रज़ि० के बारे में हुज़ूरे अक्रम स० ने जन्नत के नौजवानों के सरदार ने कहा वह तो ठीक है। मगर आप ही से है कि हुज़ूरे अक्रम स० ने फ़रमाया बेटा बाप के हक़ में क़ुबूल नहीं। बाप के ख़िलाफ़ क़ुबूल है। उसने अद्ल की बुनियादें क़ायम कीं। हसन की क़ुबूल नहीं लिहाज़ा एक गवाही से तो काम नहीं चल सकता कहा अच्छा भाई ले जा। यह ज़रह तेरी है तो मैं क़सम उठाता हूँ कि यह तालीम इस्लाम के अलावा किसी की नहीं हो सकती। अमीरुल मोमिनीन के ख़िलाफ़ उसका नौकर फ़ैसला करें। यहूदी ने यह अद्ल देखा तो वहीं कल्मा पढ़ा और हज़रत अली रज़ि० के दिन रात का

ख़ादिम बना और शहीद हुआ।

जब अल्लाह की मदद आई:

हुज़ूर स. मक्के में दाख़िल हो रहे हैं ख़ालिद रज़ि. इब्ने वलीद का लश्कर साथ है। अबू सुफ़यान ऊपर खड़ा देख रहा है। लश्करों पर लश्कर गुज़र रहे हैं ख़ालिद रज़ि. बिन वलीद गुज़रते हैं। मुसलमानों के लश्कर लेकर तक्बीर पढ़ते हुए निकलते हैं। ज़ुबैर इब्ने अव्वाम आते हैं और लश्कर को लेकर निकलते हैं अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि. आते हैं और लश्कर को लेकर निकलते हैं और बरीद बिन ख़ुज़ैब आते हैं और लश्कर को लेकर निकलते हैं। और बनू बिक्र आते हैं लश्कर को लेकर निकलते हैं और वज़ीना क़बीला आता है। नोमान इब्ने मुक़रिन रज़ि. की सरकर्दगी में और लश्कर को लेकर निकल रहा है लश्करों के लश्कर निकल रहे हैं। अबू सुफ़यान हैरान होकर देख रहा है और इतने में आवाज़ आती है और सारी गर्द व गुबार उठती है और कहने लगा यह क्या है? हज़रत अब्बास रज़ि. फ़रमाते हैं। यह अल्लाह का रसूल स. है जो मुहाजिरीन और अंसार में आ रहा है और जब लश्कर सामने आता है तो एक आदमी की आवाज़ है। उसमें कड़कदार आवाज़ है। अबू सुफ़यान कहता है कि किसकी कड़कदार आवाज़ सुन रहे हो। अब्बास रज़ि. कहते हैं यह ख़त्ताब का बेटा उमर रज़ि. है जिसकी तुम कड़कदार आवाज़ सुन रहे हो। अरे अल्लाह की क़सम यह बनू अदी ज़िल्लत और क़ल्ब के बाद आज बड़ी इज़्ज़त वाले हो गए। इस्लाम ने उमर को ऊंचा किया है उमर ऊंचा नहीं था इस्लाम ने उमर को ऊंचा किया है और फिर इस पर कहने लगा अरे अब्बास रज़ि. तेरे भतीजे का मुल्क तो बहुत बड़ा हुआ होगा। हज़रत अब्बास रज़ि. ने कहा नहीं नहीं यह मुल्क नहीं है यह शाने नुबूवत

है। बादशाह ऐसे नहीं हुआ करते। दस हज़ार का लश्कर है और आपका माथा ऊँटनी के पालान के साथ थप्का हुआ है सर ऊंचा नहीं झुका हुआ पालान से टिका हुआ और ज़ुबान से अल्फ़ाज़ अल्लाह एक अकेला तने तन्हा अकेला तने तन्हा। किसी दस हज़ार पर नज़र नहीं है अल्लाह की ज़ाते आली पर नज़र है मेरे भाइयो! हमें मादियत ने और दुनिया ने हलाक और बरबाद कर दिया। मुसलमान भी कहता है पैसा होगा तो काम चलेगा पैसा नहीं तो तेरा कोई रिशतेदार नहीं। पैसा नहीं तो कोई सलाम करने वाला नहीं। पैसा नहीं तो तेरा कोई काम नहीं। तो मेरी और काफ़िर की सोच में क्या फ़र्क़ है। मैं और काफ़िर एक तराज़ू में आज बैठे हुए हैं कि मैं भी कहता हूँ कि मेरा काम पैसे से चलेगा तो काफ़िर से पूछो तेरा काम कैसे चलेगा कहते हैं। पैसे से चलेगा। तो मैं और काफ़िर एक पल्ड़े में बैठे हैं यक़ीन के ऐतबार से मैं नमाज़ भी पढ़ता हूँ रोज़ा भी रखता हूँ। मैं हज भी करता हूँ लेकिन मेरे अंदर की दुनिया और काफ़िर के अंदर की दुनिया एक हो चुकी है। मुसलमान यह नहीं कहता कि पैसा नहीं तो रिश्ता नहीं पैसा नहीं तो कोई जान वाक़िफ़यत नहीं पैसा नहीं तो कोई सलाम नहीं करता। नहीं नहीं मुसलमान कहता है अल्लाह पाक के साथ है तो सब हो जाएगा। तक़्वा आ जाए तो सब काम बन जाएगा। तवक्कुल आ जाए तो सब काम बन जाएगा। ज़ुहद आ जाए सब काम बन जाएगा। दुनिया से नफ़रत हो जाए तो सब काम बन जाएगा नमाज़ पढ़नी आ जाए तो सब काम बन जाऐंगे। हम पैसे के मोहताज नहीं हुकूमत के मोहताज नहीं हुकूमत हमारी मोहताज है। हमें हुकूमत की ज़रूरत नहीं है हम नमाज़ पढ़ने वाले बन जाऐं। ऐसी नमाज़ सीख लें जो रब के ख़ज़ाने के दरवाज़े

खुलवा दे। हमारा काम बन जाएगा अल्लाह मख़्लूक़ को छुपा देगा अल्लाह मख़्लूक़ को ताबे करेगा। एक है तने तन्हा अल्लाह आज अपना वादा पूरा कर रहा है।

मेरे दोस्तो! दीन सस्ता नहीं है सस्ता नहीं है क्या ख़्याल है तुम सिर्फ़ पढ़ कर जन्नत में चले जाओगे। नहीं मेरी आज़माइश आएगा। मैं खरे खोटे को अलग अलग करूंगा। मैं देखूंगा कल्मे में कौन सच्चा है तुम्हें आज़माइश में डालूंगा आज़माइश आएगी मेरा कल्मा पढ़ने के बाद तुम्हें आज़माया जाएगा। एक तरफ़ दुनिया खड़ी कर दूंगा और एक तरफ़ कल्मा खड़ा कर दूंगा। दुनिया कहेगी मेरे तक़ाज़े पूरा कर। कल्मा कहेगा मेरा तक़ाज़ा टूट जाएगा। बीवी कहेगी मेरी ज़रूरत पूरी कर। कारोबार कहेगा मैं टूट जाऊंगा। मैं तेरी मईशत और अपने अम्र के मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा मैं तेरी ज़रूरत को और अपने हुक्म को मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा मैं तेरी ज़रूरत को और अपने हुक्म को मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा। मैं तेरी नफ़्सानियत को और अपने हुक्म को मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा। हुकूमत को देखना है तो मेरा अम्र क़ुर्बान होता है। मेरे अम्र को देखना है तो हुकूमत क़ुर्बान होती है तो कहाँ पर जाएगा तंबीह के लिए फ़रमा रहे हैं। तंबीह के लिए लो आज इस्लाम गर्दिश में बेहरकत है। तुम भी उसके साथ हरकत में रहना। गर्दिश में रहना एक वक़्त आएगा। मेरी किताब अलग हो जाएगी हुकूमत अलग हो जाएगी। हुकूमत के चक्कर में मत पड़ना। हुकूमत के पीछे मत पड़ना। मेरी किताब को पकड़ लेना। आज़माइश डालूंगा अगर अल्लाह का अम्र लेता है तो हुकूमत गई। सारी तिजारत की छुट्टी होती नज़र आती है।

......☆......☆......☆......